युग-प्रभा

अधिवेशन विशेषांक

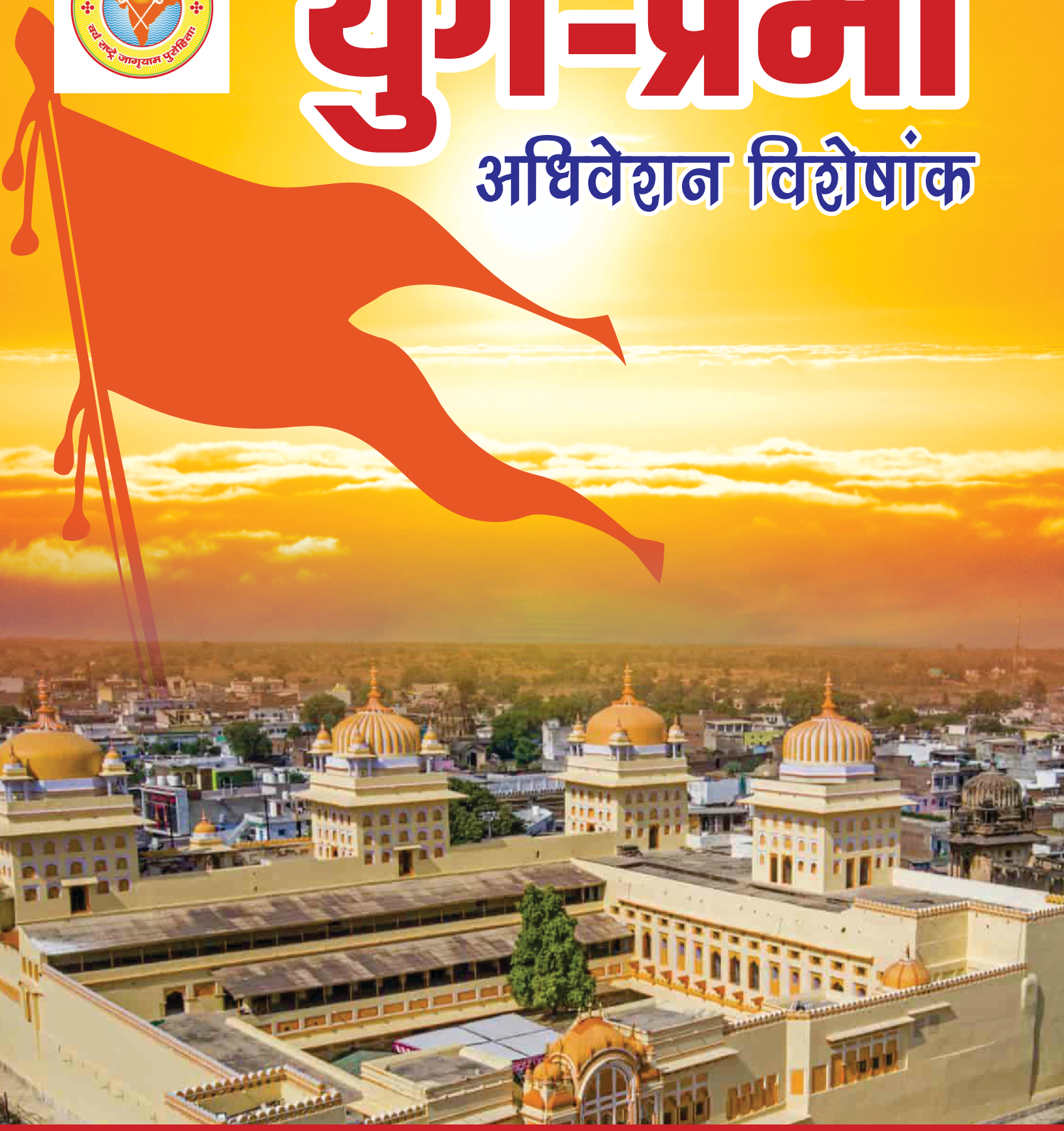

युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन–२०२५

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम

युग भारती

राष्ट्र निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व का उत्कर्ष

राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व का उत्कर्ष

युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन - 2025

(ओरछा, म.प्र.)

20-21 सितम्बर 2025

के

अवसर पर प्रकाशित स्मारिका

युग-प्रभा

अधिवेशन विशेषांक

प्रकाशक :

युग - भारती

पंजीकरण संख्या - १२७२

युग-प्रभा विशेषांक

स्मारिका संरक्षक

आचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी
आचार्य श्री दीपक राजे जी

परामर्श

श्री वीरेंद्र त्रिपाठी
डॉ. मोहन कृष्ण मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. पंकज श्रीवास्तव

प्रधान सम्पादक

डॉ. पवन मिश्र

युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन - २०२५
ओरछा (म.प्र.)

हमारे प्रेरणा-स्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी

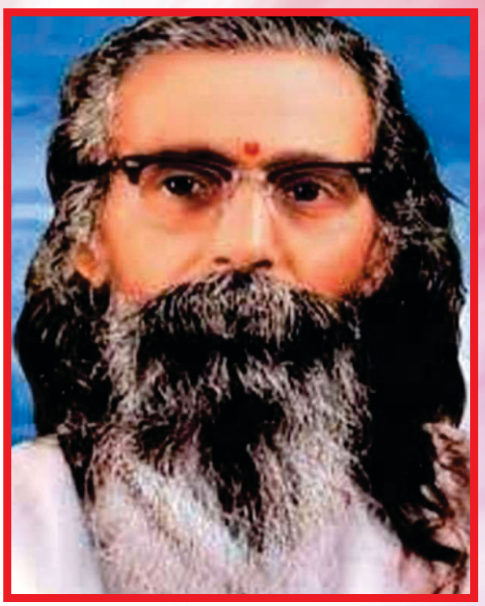

परम पूज्य 'गुरू जी'

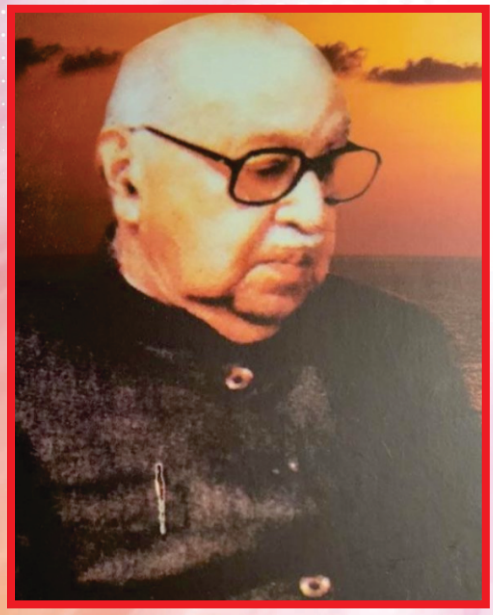

बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी

माँ सुशीला उपाख्य 'बूजी'

प्रार्थना

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।

कामये दुःखतप्तानां प्राणिनाम् आर्तिनाशनम् ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः ।

सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ।

मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ॥

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

क्रमांक - २६६/मु.मं.प्रे.प्र./२५
भोपाल
दिनांक ०१.०६.२०२५

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर के पूर्व विद्यार्थियों का संगठन युग भारती स्वर्ण जयंती वर्ष पर राष्ट्रीय अधिवेशन - २०२५ का आयोजन कर रहा है।

युग भारती संगठन ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों और शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सराहनीय प्रयास किए हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद की विचारधारा दी, वे स्वदेशी को प्राथमिकता देकर विश्व स्तर पर हो रहे नवाचारों को अपनाकर सशक्त भारत का निर्माण चाहते थे। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की ओर अग्रसर हैं।

मुझे आशा है कि अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'युग-प्रभा' में स्वदेशी और सनातन धर्म से संबंधित आलेखों का समावेश विद्यार्थियों को स्वदेशी अपनाने में सहायक सिद्ध होगा।

हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. मोहन यादव)

६, श्यामला हिल्स, भोपाल - ४६२ ००२

कुँवर मानवेन्द्र सिंह
सभापति
विधान परिषद उ.प्र.

पत्रांक : १७६५८ सभा.वि.प.
विधान भवन, लखनऊ
दिनांक : ०४ सितम्बर २०२५

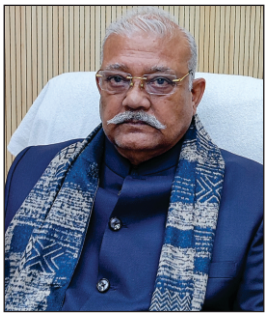

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि ''युगभारती'' के स्वर्ण जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय अधिवेशन-२०२५ का आयोजन हो रहा है जिसमें 'युग-प्रभा' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। युग भारती, पं० दीनदयाल विद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा संचालित एक सामाजिक चेतना का वैचारिक अभियान है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा तथा स्वावलम्बन के कार्य क्षेत्र में संगठन द्वारा किया जा रहा सतत प्रयास समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु अनुकरणीय है। मुझे विश्वास है कि यह अधिवेशन सामाजिक चेतना को और सुदृढ़ करेगा तथा 'युग-प्रभा' पत्रिका संस्था के उद्देश्यों और कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी प्रभावी भूमिका निभाएगी।

युगभारती के राष्ट्रीय अधिवेशन-२०२५ की सफलता की कामना करते हुये 'युग-प्रभा' पत्रिका की उपलब्धियाँ स्वर्णिम उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक बने। मैं संगठन द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'युग-प्रभा' के सफल प्रकाशन के लिए कोटिशः बधाई एवं अनंत शुभकानाएं प्रेषित करता हूँ।

(कुँवर मानवेन्द्र सिंह)

CA नीतू सिंह
सचिव / प्रबंध समिति

+91-8009336677
singhneetu1972@Yahoo.com
@CANeetu_singh

संदेश

'पं. दीनदयाल विद्यालय, कानपुर के छात्र मात्र शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहे - वे एक ऐसे चरित्र निर्माण की प्रक्रिया से होकर गुजरे हैं जहाँ शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, सेवा, और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बीज भी रोपित किया गया।

'युग-प्रभा' पत्रिका इन मूल्यों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है - यह केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि यह सिद्ध करता है कि प्रत्येक युग भारती सदस्य उस दीपशिखा के समान है, जो अपने अंदर विद्यालय में सीखे गए मूल्यों की ज्योति लेकर समाज में उजाला फैला रहा है।

'युगभारती' के सदस्य वास्तव में उस महान परंपरा के जीवंत प्रतीक हैं, जो इस विद्यालय की बुनियाद में समाहित है। वे आज न केवल विद्यालय के, अपितु पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की विचारधारा के सच्चे प्रवक्ता और संस्कार वाहक हैं। मैं 'युग-प्रभा' के इस प्रयास की हार्दिक सराहना करती हूँ और 'युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन' के सफल आयोजन हेतु मंगलकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

Neetu

सी.ए. नीतू सिंह
प्रबंधक
पं. दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय

कार्यालय : 15 / 198A, विक्रमाजीत सिंह मार्ग, सिविल लाइन्स, कानपुर–208 001

वीरेन्द्र त्रिपाठी
अध्यक्ष, युगभारती

दिनांक : ०१ सितम्बर २०२५

संदेश

जिस भाव भूमि पर पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय की स्थापना हुई, हम सभी उससे परिचित हैं। यही कारण है कि विद्यालयी शिक्षा पूरी कर समाज में अपने-अपने कार्य करते हुये भी हम सभी के मन में एक स्वयंसेवक का भाव सदैव रहता है। राष्ट्र की सेवा का जो संकल्प बीज हम सबमें किशोरवय में रोपित हुआ, उसका ही परिणाम है कि हम सामाजिक दृष्टि से आगे बढ़कर कुछ और करना चाहते हैं। कदाचित यह अधिवेशन उसी की एक कड़ी है, जो हमें उन पूर्वजों से जोड़ती है जिन्होंने भारत को 'विश्वगुरु' के स्थान पर पुनर्स्थापित करने और परम वैभवशाली राष्ट्र बनाने का स्वप्न देखा था।

शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सुरक्षा जैसे चार आयामों पर काम कर रही हमारी "युगभारती" पं. दीनदयाल जी के विचारों का पाथेय लेकर पूज्य भाऊराव जी, वात्सल्यमयी बूजी और श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के आशीर्वाद से आज एक विशाल संगठन के रूप में स्थापित है।

"ओरछा अधिवेशन" युगभारती संगठन को न केवल नई दिशा देने वाला है वरन इसके 'स्वावलंबन' आयाम को ऐसी गति प्रदान करेगा जो युवा सदस्यों को लिये ऊर्जा देने वाली होगी। अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित 'युग-प्रभा' अधिवेशन विशेषांक हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

वीरेन्द्र त्रिपाठी
अध्यक्ष युगभारती

डॉ. मोहन कृष्ण मिश्र
कार्यपालक अधिकारी
चंद्रकांता केशवन रिसर्च सेंटर,
आई.आई.टी., कानपुर

दिनांक : ०१ सितम्बर २०२५

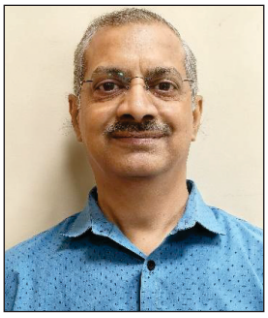

संदेश

प्रिय सम्पादक मंडल,

यह अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि हमारी संस्था युगभारती की विचारधारा और रचनात्मक गतिविधियों को स्वर देने वाली पत्रिका 'युग-प्रभा' के नवीनांक का विमोचन इस वर्ष के अधिवेशन के अवसर पर हो रहा हैं। 'युग-प्रभा' न केवल हमारे विचारों का वाहक है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, सामाजिक सरोकारों और राष्ट्रीय चेतना को नई दिशा देने वाला सशक्त माध्यम भी है। 'युग-प्रभा' के माध्यम से, संस्था ने सदैव युग धर्म को केंद्र में रखकर, हमारे सदस्यों के साथ-साथ जनमानस को भी प्रेरणा, जानकारी और जागरूकता प्रदान की है।

मैं, समस्त युगभारती परिवार की ओर से 'युग-प्रभा' के इस अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक भी अपने पूर्ववर्ती अंकों की भाँति विचारों की दृष्टि से समृद्ध, सामग्री में प्रासंगिक और प्रस्तुति में आकर्षक सिद्ध होगा। सभी लेखकों, संपादकों तथा सहयोगियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आशा करता हूँ कि 'युग-प्रभा' समाज में अपनी विशिष्ट पहचान को निरंतर सशक्त बनाए रखेगी।

डॉ. मोहन कृष्ण मिश्र
महामंत्री युगभारती

सम्पादक की लेखनी से ...

आदरणीय पाठकवृन्द,

अत्यंत हर्ष, आत्मिक उल्लास और गर्व का विषय है कि पं दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर के पूर्व छात्रों द्वारा संचालित संस्था 'युगभारती' की वार्षिक पत्रिका 'युग-प्रभा' का यह 'अधिवेशन विशेषांक' आपके कर-कमलों में प्रस्तुत हो रहा है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, अपितु उन स्वप्नों, संकल्पों, भावनाओं, अनुभवों और संस्कारों का जीवंत दस्तावेज है, जिनसे युगभारती का स्वरूप निर्मित हुआ। यह अंक युगभारती सदस्यों की प्रतिबद्धता, समाजोन्मुखी दृष्टि तथा सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक स्वरूप का दर्पण है।

विद्यालय मात्र शिक्षा देने का केंद्र नहीं होता, वह हमें संस्कार, मूल्य और जीवन की दिशा भी प्रदान करता है। जब इन्हीं पवित्र स्मृतियों से ओतप्रोत पूर्व छात्र एक सूत्र में संगठित होकर समाजोपयोगी कार्यों में प्रवृत्त होते हैं, तब शिक्षालय का गौरव अक्षुण्ण रहता है और शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य साकार होता है। इसी उच्च भावभूमि पर युगभारती का निर्माण हुआ।

युग-प्रभा के इस अधिवेशन विशेषांक का उद्देश्य अपने पाठकों को युगभारती सदस्यों की आत्मीयता, उनके संस्कार, उनके जीवन मूल्यों और उनके समाज बोध से सुपरिचित कराना है। हमें विश्वास है कि यह अंक आपको न केवल युगभारती, उसके आजीवन सदस्यों, राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजन, बुंदेलखंड की धरती आदि के विषय में जानकारी देगा, बल्कि आपको उस आत्मीय सूत्र से भी जोड़ेगा जिससे हम सभी बंधे हुए हैं। यह अंक आपके जीवन को समाज सेवा की दिशा में सार्थक प्रयास करते रहने की प्रेरणा देगा और राष्ट्र के प्रति हमारे सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को बलवती करेगा। हमें विश्वास है कि यह अंक पाठकों में समाज-सेवा की नई चेतना जगाएगा और सबके भीतर निहित दायित्व-बोध को और प्रखर करेगा।

सम्पादकीय मंडल उन सभी सहयोगियों, लेखकों एवं शुभेच्छुओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है, जिनके सतत परिश्रम और मार्गदर्शन से यह अंक साकार हो सका। हम उन सभी सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस पत्रिका के निर्माण में प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान दिया। साथ ही, हम अपने पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे हमें अपने सुझाव और विचारों से समृद्ध करें ताकि आने वाले समय में यह पत्रिका और भी सार्थक एवं प्रेरणादायी बन सके।

आइए, हम सब मिलकर इस संकल्प को दोहराएँ कि विद्यालय से मिली शिक्षा और मूल्यों को आधार बनाकर, समाज की सेवा में अपने योगदान को और सशक्त बनाएंगे। यही 'युगभारती' और 'युग-प्रभा' की असली उपलब्धि होगी। "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः"

सादर,
डॉ० पवन मिश्र
प्रधान संपादक, युग-प्रभा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय / शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
१	युगभारती, अर्थात्	ओमशंकर	१२-१३
२	अनुभव और अनुभूति	डॉ. उमेश चन्द्र तिवारी	१४-१५
३	पं. दीनदयाल विद्यालय-एक समग्र शिक्षण संस्थान	प्रकाश नारयण बाजपेई	१६-१७
४	आचार्य श्री ओमशंकर जी ...	प्रतीप दुबे	१७
५	वर्तमान परिदृश्य में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में मूल्य चेतना की आवश्यकता	डॉ. पंकज श्रीवास्तव	१८-२०
६	जीवन की कठिन परिस्थितियाँ	डॉ. मोहनकृष्ण मिश्र	२१-२२
७	विद्यालय प्रवेश - वह यादगार पल	हरि कांत मिश्र	२३
८	स्थित प्रज्ञ श्रद्धेय बैरिस्टर नरेंद्रजीत सिंह	प्रो. मनोज अवस्थी	२४-२५
९	विद्यालय और छात्रावास की अमिट स्मृतियाँ	कृष्ण कुमार तिवारी	२६-२७
१०	बुन्देलखण्ड एक दर्शन	रवीन्द्र कुमार गुप्त	२८-२९
११	आस्था, इतिहास और स्थापत्य का संगम - ओरछा	विकास मिश्र	३०-३१
१२	कालपी : बुन्देलखण्ड का प्रवेश द्वार	आदर्श पुरवार	३२
१३	ओरछा के राजा राम	राघवेन्द्र सिंह	३३
१४	विद्यालय : चरित्र निर्माण की कार्यशाला	संदीप शुक्ल	३४-३५
१५	मैं और युगभारती	रेनू पाण्डेय	३६
१६	स्मृतियों में बसा आँगन	पदम ओमर	३७-४०
१७	अवसाद से मेरी लड़ाई और युगभारती	अक्षय अवस्थी	४१
१८	शेरू	प्रो. शुभेन्द्र सिंह परिहार	४२-४३
१९	कहानी - मजबूरी	शिवम दीक्षित	४४-४५
२०	स्वावलम्बन - पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का दृष्टिकोण	अजीत कुमार सिंह	४६-४८
२१	स्वावलम्बन - मेरी दृष्टि में	विवेक चतुर्वेदी	४९-५०
२२	युगभारती चित्रमाला		५१-५९
	(काव्य-अनुभाग)		
२३	''जय श्री राम''	ओमशंकर	६०
२४	हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम	सुभाष शर्मा	६१
२५	राष्ट्र का निर्माण हो!	डॉ. पवन मिश्र	६२
२७	परम धर्म	शशांक मोहन दुबे	६३
२७	दीवाली व फाल्गुन की मस्ती	संजीव चौहान	६४
२८	बरसती बरखा सुहानी	सतीश चन्द्र गुप्ता	६५
२९	अधिवेशन गीत	ओम शंकर	६६
३०	आजीवन सदस्य विवरणिका		६७-८४

युगभारती, अर्थात् .....

(जिस भावभूमि पर युग मनीषियों ने पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर की स्थापना की उसे आत्मसात कर अनवरत, अथक चलने वाले और विद्यार्थी रूपी अपनी सन्ततियों में उसे प्रसरित करते रहने वाले साधक आदरणीय आचार्य ओमशंकर जी का एक भावनामयी लेख, जिसके माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया है कि उनकी दृष्टि में युगभारती क्या है?)

युग भारती माँ भारती के मौन का स्वर है,
ये संयम शक्ति सेवा साधना का दीप भास्वर है।।

भावना मानवता की अमूल्य निधि है। विचार इसी से संषोषित होकर कर्मानुरागी बनते हैं और भक्ति भी इसी की अभिव्यक्ति है। इसी भावना की सरिता में संतरण करते हुए, अपने आस-पास के तटों-कगारों पर मैंने आप लोगों (दीनदयाल विद्यालय की प्राणिक ऊर्जा) के दर्शन किए। आकर्षित होकर कुछ ठिठका, रूका और फिर अपने कुछ सहधर्मियों को साथ लेकर उसी प्रवाह में साथ-साथ संतरित होने लगा, जिसमें हमारे पुरखे गुनगुनाते हुए तिरते रहे हैं कि ''यह देश मेरा, धरा मेरी, गगन मेरा, इसके लिए बलिदान हो प्रत्येक क्षण मेरा, प्रत्येक कण मेरा .....''

यह भूमिका उस आलेख की है, जिसे उरेहने का हठीला आग्रह हमारे प्रिय पवन जी करते रहते हैं, जो 'युग-प्रभा'' वार्षिक पत्रिका के संपादक हैं। गतवर्ष की पत्रिका में मैंने ''दीनदयाल विद्यालय.... अर्थात्'' शीर्षक देकर अपने पं० दीनदयाल उपाध्याय स०ध० विद्यालय का परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया था। उसमें यह अवश्य कहा होगा कि 'यह मात्र एक विद्यालय नहीं वरन् देशभक्ति की गहन भावनाओं की मूर्त अभिव्यक्ति है। इसी विद्यालय की भाव-संपदा की आदर्श अभिव्यक्ति है 'युगभारती।'' इसे कोई आज की प्रचलित भाषा में 'पूर्व छात्र परिषद' अथवा ALUMNI कह भले पुकारता हो, किन्तु युगभारती इन अभिधानों से परे एक ऐसा भाव सम्पन्न, स्वदेशाभिमानी वृहद् परिवार है, जो अपने व्यक्तिगत चरित्र और आत्मीय व्यवहार से वर्तमान समाज का अनूठा उदाहरण है। इसको केवल अनुभव किय जा सकता है, पूर्ण रूपेण परिभाषित नहीं।

युगभारती के परिवारीजन में केवल दीनदयाल विद्यालय का छात्र रहा हूँ मैं, अथवा अभी मैं वहाँ पढ़ रहा हूँ, इतना मात्र स्वर - संप्रेषण एक सहज आत्मीयता स्फुरित कर देता है। इसका कारण पं० दीनदयाल उपाध्याय का सात्विक तपस्या पूरित जीवन और सम्पूर्ण रूपेण स्वदेशानुरागी समर्पण ही हो सकता है। इस नाम रूपात्मक जगत में पं० दीनदयाल जी जैसे परिपूर्ण मानव कभी-कभी ही जन्मते हैं और उनके जीवन-कुसुम को जब दानवी वृत्तियाँ मसलने में सफल हो जाती हैं, तब इस देश की मनीषा, इसकी भावनात्मक तपस्विता आहत होने के साथ ही संकल्पबद्ध भी हो उठती है। उसी आहत संकल्पी साधकों ने इस विद्यालय की परिकल्पना को साकार किया और इसके साधक, शिक्षकों ने इसमें अध्ययन करने वाले छात्रों को अपना आत्मीय दुलार सौंपकर सदा के लिए ''सहनाववतु .... '' की वेदध्वनि को रूपाकार प्रदान किया। इसी का प्रतिफल है ''युगभारती''।

प्रिय आत्मीयजन, युगभारती की संकल्पना के मूल में त्याग है। संसार में रहकर संसार से इतर सोचना और न केवल सोचना वरन् उस पर संयमित हो कर सफलतापूर्वक कार्य निष्पादित करने की भावना को अपने भीतर आत्मस्थ कर लेना ही हम सबका ध्येय बन गया है। कदाचित तभी हम सबने मिल कर समभाव से 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' को अपनी प्रार्थना में सम्मिलित किया है। शास्त्रों का आश्रय लेकर समाजोन्मुखी चिंतन और फिर स्वस्थ समाज से शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण ही अपना परम उद्देश्य है। शास्त्रों और

धर्मग्रंथों में प्रवेश का अर्थ यह कदापि नहीं है कि आप अपने सामाजिक दायित्व और सांसारिक बंधनों से विरत होकर माला फेरने लगें और कहें कि हमें इनसे क्या मतलब? अरे! मतलब है। युगभारती सदस्य होने के कारण यह मतलब और भी गहरा जाता है क्योंकि आपकी बौद्धिक क्षमता, आपकी विचारधारा, आपकी सोच, आपका दृष्टिकोण समाज के अन्य वर्गों के लोगों से कहीं अधिक सारगर्भित भी है और उच्चकोटि का भी। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इसी कारण मैं आप सबको अपने समाज और भारत राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को नित्यप्रति स्मरण कराता रहता हूँ।

"युगभारती" एक संस्था भर नहीं, साधनास्थली है। विचार ही नहीं, व्यवहार भी है। केवल संकल्प नहीं, सिद्धि का विश्वास है। युगभारती अपनी भारत माता के अखण्डित स्वरूप-दर्शन का शिव संकल्प और महाबली हनुमान जी महाराज का प्रचण्ड तेजोमय बल है।

आइए हम अपने इस व्रत को पूरा करने के लिए अपनी-अपनी दक्षिण भुजा पर ब्रतबंध धारण करें और आजीवन इस की मर्यादा का परिपालन करते रहें।

- ओमशंकर

"हमने किसी संप्रदाय या वर्ग की सेवा का नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र की सेवा का व्रत लिया है। सभी देशवासी हमारे बान्धव हैं। जब तक इन सभी बन्धुओं को भारतमाता के सच्चे सपूत होने का गौरव प्रदान नहीं करा देते, हम चुप नहीं बैठेंगे। हम भारतमाता को सही अर्थों में सुजला, सुफला बनाकर रहेंगे। यह दशप्रहरणधारिणी दुर्गा बन कर असुरों का संहार करेगी य लक्ष्मी बनकर जन-जन को समृद्धि देगी और सरस्वती बनकर अज्ञानान्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलायेगी। हिन्द महासागर और हिमालय से परिवेष्टित भरतखण्ड में जब तक एकरसता, कर्मठता, समानता, सम्पन्नता,ज्ञानवत्ता, सुख और शान्ति की सप्तजाह्नवी का पुण्य-प्रवाह नहीं ला पाते, हमारा भगीरथ तप पूरा नहीं होगा इस प्रयास में ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी हमारे सह्ययक होंगे। विजय का विश्वास है, तपस्या का निश्चय लेकर चलें।"

(1968 में भारतीय जनसंघ के कालीकट अधिवेशन में पण्डित जी के अध्यक्षीय भाषण का अंश, जो सदैव प्रेरक रहेगा ।)

अनुभव और अनुभूति

प्राप्त ज्ञान या जानकारी वह किसी रूप में हो अथवा किसी प्रकार की हो या फिर किसी उद्देश्य से हो अनुभव कहलाता है। यह अनुभव देखकर, सुनकर और कार्य करके प्राप्त होता है एवं अनुभूति उस अनुभव की आंतरिक, व्यक्तिगत एवं भावनात्मक प्रतिक्रिया है। जो व्यक्ति को उस अनुभव से सतत सीख देती रहती है, प्रेरणा देती रहती है और शंका समाधान करती है। इसी प्रकार के अनुभव मैंने भी अपने विद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय सनातम धर्म विद्यालय से प्राप्त किए हैं, जिनकी अनुभूति मुझे रोज सम्बल प्रदान करती है। मेरे लिए पाथेय का कार्य करती है। ऐसे ही कुछ अनुभव मेरे विद्यालय के प्रथम दिन से जुड़े रहे हैं- अपने श्री रमेश जी जो स्वच्छकार थे, कार्य उनका सबसे छोटे स्तर का, लेकिन सबसे बड़ा कार्य जो जिम्मेदारी भरा था। जिसके कारण विद्यालय स्वच्छ एवं साफ रहता है, जो हमेशा यह भाव देता रहता है कि कार्य कोई छोटा या बड़ा नहीं होता केवल उसका निर्वहन पूर्ण मनोयोग से होना चाहिए। इसी प्रकार से जुड़े अन्य कर्मचारियों का कार्य एवं व्यवहार केवल उनके पदानुरूप नहीं रहा बल्कि उस साहचर्य से भरा रहा जो विद्यालय के सर्वांगीण विकास में सहायक रहा और नित्य मुझे पारिवारिक भावना की अनुभूति कराता रहा। शिक्षकों के साथ मेरे अनुभव नितांत अलग भाईचारे के रहे हैं। इसका एक उदाहरण है मेरा विद्यालय का प्रथम दिन। मैं अध्यापन में बिल्कुल नया लेकिन जीवविज्ञान प्रयोगशाला में जिस प्रकार आचार्य श्री हरिनाम जी ने मुझे कैसे पढ़ाना, क्या पढ़ाना यह निर्देशित किया वह अवर्णनीय है। मेरा यह अनुभव केवल उन्हीं के साथ नहीं बल्कि अन्य वरिष्ठ आचार्यों के साथ पारिवारिक भाव से विद्यालय में नित्य प्राप्त होता रहा और आज तक चल रहा है। यह भाव उस समय भी प्रेरणादायक रहा था और आज भी उसकी अनुभूति से अपने वर्तमान कार्यक्षेत्र में सकारात्मक भूमिका को बनाये रखने में मुझे सम्बल प्राप्त होता है।

सामान्य रूप से विद्यालय में प्रधानाचार्य एक प्रशासन के रूप में होता है एवं शिक्षक उसके अनुगामी के रूप में। लेकिन मैंने दीनदयाल विद्यालय के प्रधानाचार्य जी को हमेशा एक मुखिया के रूप में पाया। आवश्यकतानुसार कार्य करने की सीख सलाह एवं दृढ़निश्चयी होना पाया। दृढ़निश्चय का उदाहरण मेरे मानस पटल पर अभी भी तैरता रहता है कि एक बार सपुस्तक परीक्षा थी, प्रधानाचार्य जी विद्यालय में नहीं थे। आते ही उन्होंने सपुस्तक प्रणाली परीक्षा समाप्त करवा कर पारम्परिक रूप से होने वाली परीक्षा प्रणाली को शुरू करवा दिया। एक और उदाहरण मैं आप सबके साथ साझा करना चाहूँगा- जो परिवार भाव का है। एक बार सामूहिक रूप से आचार्य कक्ष में भोजन चल रहा था। अपने एक आचार्य थोड़े से अमनस्क स्थिति में थे, प्रधानाचार्य जी उनकी सीट पर गये और हाथ जोड़कर उनसे खाने का आग्रह किया। यह बात मुझे अभी और हमेशा याद रहती है कि प्रशासक और इतने नम्र।

विद्यालय की स्मृति हो और विद्यार्थियों की चर्चा न हो तो एक अनचाहा अधूरापन रह जायेगा। इसलिए विद्यालय से जुड़े उन विद्यार्थियों की चर्चा अपरिहार्य रुप से करनी होगी जिनका जुड़ाव इतने वर्ष विद्यालय में दूर रहने पर भी उसी प्रगाढ़ता से बना रहना जोकि विद्यालय में रहने पर था। यह विद्यार्थी एवं शिक्षक के बीच का अद्‌भुत लगाव है और यह सदा समय-समय पर स्वयं को भी जीवन्त करता रहता है। इसका नवीनतम उदाहरण- डॉ० पंकज श्रीवास्तव, जो पेशे से एक चिकित्सक हैं, ने प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी की कविताओं का संकलन एवं सम्पादन करके 'उन्मुक्त मुक्तक' और 'साकल्य' जैसी पुस्तकों के रुप में हम सबके सामने प्रस्तुत किया है। मैंने उनको बधाई दी एवं उसकी प्रति की मांग की, बिना देरी किए उन्होंने इस कार्य को किया एवं मेरे साथ उनकी बातचीत में यह कहीं लगा ही नहीं कि बहुत समय पहले वह यहाँ से पढ़े थे। ऐसा लग रहा था मानो सबकुछ वर्तमान का है। यह प्रेम और अपनापन

अन्यत्र देखने को इतनी सहजता से कहीं नहीं मिलता।

कुल मिलाकर अगर कहें कि दीनदयाल विद्यालय केवल एक शिक्षा प्रदाता विद्यालय नहीं, प्रयोगशाला नहीं संस्कारशाला नहीं, अधिगत केन्द्र नहीं बल्कि इन सभी का समावेशी विग्रह है तो कुछ भी गलत नहीं होगा। यहाँ सोच, सोच की दिशा, सोच का स्तर, आत्मविश्वास एवं विकास की अपार सम्भावनायें सभी कुछ प्राप्त होता है, इसे मैंने अनुभव किया है, कर रहा हूँ एवं नित्य इसकी अनुभूति भी होती है। कुल मिलाकर कहा जाए कि यह विद्यालय बौद्धिक सम्पदा की खान है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मेरे लिए वर्तमान का अध्ययन, अध्यापन, विद्यालयीय व्यवस्था, कक्षीय व्यवस्था या इससे जुड़ा कोई क्षेत्र हो उसको सलीके से कर पाने की शक्ति एवं समझ दीनदयाल विद्यालय से प्राप्त अनुभव एवं अनुभूतियाँ ही हैं।

एक बात यहाँ पर कहना समीचीन होगा कि वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था-राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) २०२० भारत सरकार द्वारा शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए बनाई गई एक व्यापक नीति है। इसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला और छात्र-केंद्रित बनाना है। जिसमें सबसे अधिक जोर भारतीय ज्ञान परम्परा पर दिया गया है और उस पर कार्य भी हो रहा है लेकिन मूर्तरूप में परिणित नहीं हो पा रहा है। अगर इसे मूर्त रूप में जानना है तो दीनदयाल विद्यालय को जानना होगा जहाँ की शिक्षण व्यवस्था, विद्यालयीय व्यवस्था को आदर्श रूप में स्वीकार ही नहीं बल्कि अंगीकृत करना चाहिए जो आज से नहीं जब से विद्यालय प्रारम्भ हुआ था तब से भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार ही शिक्षण व्यवस्था को आत्मस्थ करने की प्रेरणा देता चला आ रहा है और इसीलिए यहाँ का हर विद्यार्थी एवं हर शिक्षक भारतीय ज्ञान परम्परा से ओतप्रोत रहता है।

आज आवश्यकता है आत्मविश्वासी और दृढ़निश्चयी होकर कार्य को वास्तविकता के धरातल पर सुंदर स्वरूप में परिणित करने की। कुल मिलाकर कहा जाए कि पीढ़ी का सर्वांगीण विकास तब होता है जब घर एवं विद्यालय दोनों मिलकर युग्मित रूप में कार्य करें। विद्यालय एवं विद्यालय से जुड़ी सभी व्यवस्थायें एवं व्यवस्था से जुड़े लोग सामूहिकता से पीढ़ी संवर्धन का कार्य करें जो इस विद्यालय में रहा है, जिसका अनुभव लगातार मुझे होता रहा है और उसकी अनुभूतियाँ मानस पटल पर हर समय रहती हैं।

भाव तो हृदय में इतने भरे हैं कि लेखनी अल्पविराम के लिए भी रुकना नहीं चाहती, पूर्ण विराम तो कहीं दूर कि बात है, किन्तु लेखन कि जिस मर्यादा को हमने अपने इस विद्यालय में जाना है उसको सादर प्रणाम करता हुआ अपने भावों को बाँधते हुये लेखनी से विनम्र निवेदन करता हूँ कि मेरा साथ दे।

- डॉ० उमेश चंद्र तिवारी
पूर्व आचार्य पं० दीनदयाल विद्यालय
कानपुर

राष्ट्रीय अधिवेशन, युग-भारती संगठन को नई ऊर्जा प्रदान करे।
- जागृत गुप्ता २००६

पं0 दीनदयाल विद्यालय -एक समग्र शिक्षण संस्थान

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा में एक श्रेष्ठ स्थान रखता है। मेरा परिचय दीनदयाल विद्यालय से वर्ष १९७२ में हुआ, जब यहाँ पर जीवविज्ञान विषय में आचार्य की नियुक्ति हेतु एक विज्ञापन आया। मेरा साक्षात्कार विद्यालय में माननीय रज्जू भईया जी ने लगभग एक घन्टे तक लिया। मैंने १९७० में एम.एस.सी. किया था, तो मेरी तैयारी बहुत अच्छी थी साथ ही आत्मविश्वास भी प्रबल था। इसलिए साक्षात्कार देने में अच्छा लग रहा था। एक घन्टे के लंबे साक्षात्कार में रज्जू भईया ने विषय और विषयेत्तर कई प्रश्न किए जिसका मुझे लगा की मैंने संतुष्टिदायक उत्तर भी दिया किन्तु जैसा की मेरा स्वभाव है, मैंने चयन की बहुत ज्यादा आशा नहीं की थी। इसी कारण में एक बार भी विद्यालय अपने साक्षात्कार का परिणाम जाने नहीं गया। फिर एक दिन विद्यालय से ठाकुर चंद्रपाल जी ने संदेश भेजा कि आपका चयन हो गया है, किन्तु आश्चर्य कि आप एक बार भी जिज्ञासावश परिणाम पता करने नहीं आये, चलिये कोई बात नहीं अब आकर अपना अध्यापन कार्य संभालें। १७ जुलाई १९७२ को मैंने विद्यालय में अपना कार्य भार ग्रहण किया और ४१ वर्षों के संतुष्ट अध्यापन एवं सफल प्रशासनिक कार्य करते हुये मैंने जून २०१३ को प्रधानाचार्य पद से सम्मानजनक अवकाश प्राप्त किया।

प्रारम्भ में मेरा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से बहुत थोड़ा ही संबंध रहा था, किन्तु विद्यालय में आने के बाद राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ के सभी कार्यक्रमों में जाने लगा। वहाँ से मुझे न सिर्फ अच्छे और सारगर्भित अध्यापन की राह मिली वरन शिक्षक का शिक्षकत्व कैसा हो यह भी जानने का सुअवसर मिला। जब मैं विद्यालय आया तब केवल आठ तक की कक्षायें थी। उस समय मुझे पढ़ाने में बहुत परेशानी होती थी, क्योंकि विद्यालय हिन्दी माध्यम का था, मैने अपनी पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में की थी। धीरे-धीरे अभ्यास होता गया और विषय पढ़ाने में आनन्द आने लगा। मैं अपना विषय पढ़ाने में अधिकतर चित्र बनाकर ही पढ़ाता था, जिससे विषय रुचिकर बन जाता तथा छात्र आसानी से समझ जाते थे।

मै विद्यालय से जाने वाले देशदर्शन कार्यक्रम में अवश्य जाता था। प्रति वर्ष एक प्रान्त का चुनाव किया जाता था। दशहरे के अवकाश में ही देशदर्शन जाता था और मुझे उसमें प्राथमिक चिकित्सा विभाग का दायित्व सौंपा जाता था। देशदर्शन की टीम में श्री ओम शंकर जी, मा. प्रयाग जी, मा. शेंडे जी, मा. चन्द्रपाल जी एवं श्री आनन्द जी प्रमुख रूप से रहते थे। अन्य आचार्य भी अपनी सुविधानुसार जाते थे। यह देशदर्शन लगभग १५ दिन का रहता था। अधिकतर यात्रा बस द्वारा ही होती थी। बस विद्यालय प्रांगण से छात्रों एवं आचार्यो को लेती थी और देशदर्शन के बाद वापस विद्यालय में ही छोड़ती थी। एक बार मुझे छात्रों को दिल्ली से चन्दीगढ़ तक की हवाई यात्रा करने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। उसके बाद की यात्रा बस से हुई, यह यात्रा कुल्लू मनाली तक की थी। देशदर्शन हमारे विद्यालय में मात्र मनोरंजन का अवसर न होकर सचमुच देशदर्शन ही होता था। सभी बच्चे गंतव्य के बारे में जिज्ञासु भी रहते थे और हल्के-फुल्के वातवरण में बहुत सी जानकारी जुटा लेते थे, कालांतर में उन पर वृहद चर्चा भी होती थी।

उस समय विद्यालय में हम लोग 'परिवारी' भावना से कार्य करते थे। यदि कोई आचार्य अस्वस्थ होता था तो हम सभी आचार्य लोग उनको देखने घर पर जरूर जाते थे। इसी प्रकार छात्रों के यहाँ भी आचार्य सम्पर्क में रहते थे। कुछ अच्छे छात्र आचार्यो को सौंप दिये जाते थे कि वह उनको अच्छा निखार सकें। कुछ कमजोर छात्रों का दायित्व भी आचार्यों को सौंपा जाता था ताकि उनको भलीभाँति पढ़ा कर उनका परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट किया जा सके और उनका आत्मविश्वास भी मजबूत किया जाये। हमारा शिक्षण केवल अध्यापन तक सीमित नहीं था बल्कि चरित्र निर्माण का दायित्व बोध लिए था।

उत्तरप्रदेश की परीक्षा की श्रेष्ठता सूची यानि मेरिट लिस्ट में अपने विद्यालय से प्रतिवर्ष कई छात्रों का नाम रहता था। इसी कारण दीनदयाल विद्यालय का नाम सुचर्चित और सुसम्मानित रहा है। हम युगभारती के परिवारीजन उसी तपस्थली का प्रतिसाद हैं। अपने विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों में भावनात्मक लगाव अद्‌भुत है। हमारी युगभारती संस्था इसी भाव से पुष्पित एवं पल्लवित होती रहे, ईश्वर से यही कामना है।

- प्रकाश नारायण बाजपेई
पूर्व प्रधानाचार्य
पं० दीनदयाल विद्यालय, कानपुर

आचार्य श्री ओमशंकर जी...

मुझे साक्षात अनुभव होता है और मेरी जैसी अनुभूति पं दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर के अधिकांश पूर्व छात्रों को भी होगी कि विद्यालय में अध्ययन करने में जितना गौरवान्वित हम सभी ने महसूस किया, उससे कहीं अधिक आदरणीय आचार्य श्री ओमशंकर जी के सानिध्य में, उनके मार्गदर्शन में हनुमत कृपा से शिक्षा और ज्ञान को ग्रहण करने में अपने सौभाग्य का अनुभव हुआ। इस दृष्टि से हम सभी अति सौभाग्यशाली है, जिन्होंने उनके कार्यकाल के दौरान विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की।

हम सभी पूर्व छात्र आचार्य जी के स्नेह, अपनत्व से आप्लावित महसूस करते हैं। यह आभा मण्डल उनके व्यक्तित्व में नैसर्गिक रूप से विद्यमान है। वह जहाँ भी विचरण करते हैं, जिसके साथ भी सशरीर उपस्थित रहते हैं, उस स्थान और उन व्यक्तियों को इस प्रभा का पारलौकिक एवं आध्यात्मिक अनुभव स्वयं ही हो जाता है।

उनके मुखारविन्द से निर्गत हुआ एक-एक शब्द मनभावन तो होता ही है, अपितु उसमें शिक्षकत्व एवं दार्शनिकता का जो पुट होता है, वो हम सभी युगभारतियों को बोधिसत्व के मार्ग पर चलने को प्रेरित करता है। इसी क्रम में आज सोशल मीडिया के उद्‌भव के बाद से आचार्य जी द्वारा व्हाट्सअप के माध्यम से नियमित प्रेषित किया जाने वाला सदाचार संप्रेषण हमें आह्लादित तो करता ही है, साथ ही हम सभी को सुपथ पर चलने के लिये प्रेरित करता है, आव्हान्वित करता है।

- प्रतीप दुबे
बैच १९८५

वर्तमान परिदृश्य में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में मूल्य चेतना की आवश्यकता

प्राणीमात्र स्वभावतः शुद्ध चैतन्य स्वरुप है। अज्ञान के कारण ही उनमें भेद की प्रतीति होती है। जिस प्रकार अज्ञानी मनुष्य को सत् के स्थान पर केवल प्रपंचमय जगत ही दिखता है, उसी प्रकार वर्तमान में समाज अत्यंत भ्रामक स्थिति से ग्रसित है। कारण स्पष्ट हैं - अविश्वास, आसक्ति, अहंकार, लिप्सा, धन-लोलुपता एवं महान बनने का लोभ-संवरण ।

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धांत पर चलने वाली हमारी भारतीय परंपरा अब व्यक्तिवादी पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण कर रही है। हमारा समाज, आज भोग-विलासता के विभिन्न उपादानों की सतत खोज और उसकी प्राप्ति को ही अपने जीवन का अभीष्ट मान चुका है। परिणामतः व्यक्ति शनैः शनैः सामाजिक से एकाकी होता जा रहा है। हमारी सनातनी परंपरा में परिवारवाद को बहुत ही विस्तार से परिभाषित किया गया और उसका गरिमामय अनुसरण ही हर मनुष्य की मर्यादा बतायी गयी। समाज बनता है परिवारों से और परिवार बनता है संबंधों से, किन्तु आज यह व्यवस्था अर्थयुक्त एवं भोगवादी सामाजिक अवधारणा में कदाचित् अपनी सार्थकता खोती जा रही है। मानवीय मूल्यों का दिन-प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है, क्योंकि संयुक्त परिवारवाद अब एकात्मक परिवारवाद का स्वरुप ले चुका है, जहाँ परिवार मात्र पति, पत्नी एवं बच्चों तक सीमित रह गया है।

हमारा पारिवारिक एवं सामाजिक ढाँचा मानवीय मूल्यों की बल्लियों के सहारे दृढ़ता से न केवल स्वयं को स्थिर रखता था वरन् दूसरी संस्कृतियों के लिये भी प्रेरणास्रोत हुआ करता था। ये जीवन मूल्य सहस्त्रों वर्षों में मानव सभ्यता को परिभाषित एवं संश्लेषित करने वाले त्यागमयी महान व्यक्तित्वों के द्वारा संजोयी गयी वे थाती हैं, जिनका अनुसरण करके प्रभावशाली एवं सारगर्भित जीवन जी कर मोक्ष तक प्राप्त किया जा सकता है। जीवन मूल्यों की उन सुदृढ़ बल्लियों को उपभोक्तावाद की दीमकों ने चाट-चाट कर खोखला सा कर दिया है और उस पर टिका हमारा भव्य सामाजिक ढाँचा कदाचित चरमराने सा लगा है।

परिभाषाओं की गूढ़ता में न जाते हुए ये समझना आवश्यक है कि वास्तव में ये जीवन मूल्य हैं क्या? जीवन मूल्य किसी व्यक्ति को उसके समाज, देश, काल द्वारा प्रदत्त पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होने वाले वे गुण, धर्म, अनुभव, परंपराओं और ज्ञान का सार हैं जिनका अनुपालन कर व्यक्ति न केवल अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध करने में सफल रहता है अपितु दूसरों को भी ऐसा जीवन जीने के लिये प्रेरित करता है।

अधिकार से पहले कर्तव्य को परिभाषित किया गया है। हमें क्या मिला-इसके पहले हमने क्या दिया ? इसकी अवधारणा के अनुयायी थे हम। आज हर तरफ से अधिकारों की लड़ाई की बात की जाती है किन्तु कोई अपने कर्तव्यों के पालन को सुनिश्चित नहीं करता। गाँधी जी का विश्वास था कि मनुष्य भीतर से अच्छा हो जाये तो उसके द्वारा निर्मित वाह्य व्यवस्था भी अच्छी हो जायेगी। मार्क्स की मान्यता थी कि व्यवस्था अच्छी हो तो उसके भीतर मनुष्य अच्छा हो जायेगा, पर ऐसा होगा कैसे? वर्तमान भारतीय सामाजिक ताना-बाना ऐसा बन पड़ा है, जिसमें महादेवी वर्मा की ये पंक्तियाँ बड़ी सार्थक जान पड़ती हैं कि-''निर्माण की इससे बड़ी विडंबना क्या हो सकती है कि शिल्पी और उपकरणों के बीच में आग्नेय रेखा खींचकर कहा जाये कि कुछ नहीं बनता या सब कुछ बन चुका।''

वर्तमान में देश की सबसे प्रमुख समस्या है- शिक्षा। शिक्षा का सही रूप समाज के सामने प्रस्तुत करना हम सभी की प्राथमिकता होनी चाहिये। पश्चिमी शिक्षा के अंधानुकरण ने हमारी परंपराओं से हमें बहुत दूर कर दिया है। आज गुरु का स्थान शिक्षक और विद्यार्थी का स्थान परिक्षार्थी ने ले लिया है। गुरु का अर्थ है जो अशिक्षा और अज्ञान का अंधकार दूर करे। आज पुनः शिक्षक को गुरु

बनाने की आवश्यकता है क्योंकि गुरु छात्र को पुस्तकीय शिक्षा के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान, कर्तव्यों का पालन व निर्वहन, विवेकपूर्ण ढंग से करना सिखाता है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ सुसंकृत एवं सारगर्भित जीवन जीने में है न कि मात्र धनोपार्जन का साधन खड़ा करने में। शिक्षा नैतिकता, व्यवहारिकता एवं विभिन्न विचारधाराओं के लिये सकारात्मक होनी चाहिये ताकि व्यक्ति अपने जीवन में निहित स्वार्थ से ऊपर उठकर सामाजिक हित में निर्णयात्मक हो सके। वो कर्तव्यनिष्ठ बनें और सृजन की महत्ता को स्वीकार करे। भेद-भाव, अस्पृश्यता, वैमनस्यता, धार्मिक कट्टरता का परित्याग सहज भाव से कर सके। हमारे सामाजिक ढाँचे का शैक्षिक और बौद्धिक रूप से विकास एवं उसका अपमार्जन आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि हम अपने युवाओं का बौद्धिक विकास करने में समर्थ होते हैं तो भारत के सुदृढ़ और समृद्ध बनने का मार्ग स्वयं ही प्रशस्त हो जायेगा।

जन-सामान्य का जागरण ही विकास का प्रथम सोपान है- जागरण क्यों? क्या हम सोये हुये हैं? क्या हम खुली आँखों से स्वप्न देख रहे हैं? कई अर्थों में है, क्योंकि यदि हम अपने सामने हो रहे अनाचार पर मौन हैं, यदि हम स्वयं ही एक भ्रष्ट तंत्र के पोषक हैं, यदि हम किसी के प्रति हो रहे अत्याचार पर संवेदन शून्य हैं, तो हाँ! हम सोये हुये हैं और ऐसे सुषुप्त समाज को जागरण की अति आवश्यकता होती है।

एक वस्तुस्थिति और भी समझने की है कि हमारा जीवन पूरे समाज का जीवन है। यदि हम अपने जीवन को जीने के लिये समाज के विभिन्न संसाधनों का दोहन करते हैं तो हमारा भी समाज के प्रति कुछ दायित्व बनता है। इन दायित्वों का बोध और उनका यथोचित निर्वहन भी हमारे जीवन मूल्यों का एक भाग है। कर्तव्य और दायित्वों का बोध परिवार से प्रारंभ होकर समाज व देश के प्रति अग्रसारित होगा। अपने परिवारिक संबंधों के प्रति सबको संवेदनशील व सहिष्णु होना होगा तभी व्यक्ति समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों का पालन समझेगा और उनकी पूर्ति हेतु समर्पित भी होगा। समर्पण व्यक्तित्व विकास का वह आधारभूत अवयव है जो मानव जीवन को उदात्त व तेजस्वी बनाता है। बिना समर्पण किसी भी कार्य के चरम तक नहीं पहुँचा जा सकता। भारत तो वो देश है जहाँ महर्षि दधीचि ने देवसंस्कृति एवं मानव जाति की रक्षा हेतु वज्र बनाने को अपनी देह तक समर्पित कर दी थी। इन्हीं उच्चादर्शों की यशगाथा आज पुनः विचारणीय है और संपूर्ण समाज को पुनः स्मरण कराने योग्य है ताकि आगे की पीढ़ी भी इन्हें आत्मसात कर अनेकानेक उच्चादर्शों को स्थापित करने हेतु प्रेरित हो सके।

समर्पण के साथ त्याग का बहुत गहरा संबंध है। त्याग का अर्थ मात्र खोना नहीं है। त्याग का अर्थ अपना कुछ देकर किसी को समृद्ध करना और फिर उसी से प्राप्त प्रसन्नता व आत्मसंतोष से स्वयं को उर्जित करना है। त्याग व्यक्ति में निर्लिप्तता का भाव जागृत करता है और निर्लप्त मन से वही व्यक्ति त्याग की मंशा रख सकता है जिसमें उच्च कोटि के आदर्श कूट-कूट कर भरे हों। जहाँ एक ओर समाज में चारों तरफ मात्र संग्रहण की भावना अपने चरम पर है वहीं दूसरी ओर समाज का एक अंग पूर्णतया अभावग्रस्त है। यह असंतुलन त्याग व समर्पण की भावना से दूर किया जा सकता है किन्तु इसके लिये आवश्यक है, एक बलवती इच्छाशक्ति।

सब कुछ बन गया या फिर कुछ नहीं बन सकता की अवधारणा निर्बल सोच, कुंठा, अकर्मण्यता और हीन इच्छाशक्ति को दर्शाती है। आज आवश्यकता है कि लोगों के बीच सकारात्मकता इच्छाशक्ति का संचार किया जाये ताकि उदात्त और उन्मुक्त भाव से जनमानस विकास के बारे में न केवल सोचे-विचारे अपितु उनमें अपना महत्वपूर्ण योगदान भी दे। शारीरिक और मानसिक रूप से रुग्ण समाज इतिहास के पन्नों में दफन होकर समाप्त हो जाया करते हैं। स्वस्थ सामाजिक अवधारणा व सकारात्मक मानसिकता ही व्यक्ति को कुछ नवीन करने के लिये प्रेरित करती है।

उपर्युक्त वर्णित वक्तव्य भावनाओं का स्वर हो सकते हैं किन्तु ये भी सर्वविदित है कि भावनायें ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। संवेदनहीनता आज के समाज की सबसे बड़ी विकृति है एवं संपूर्ण विश्व में अपने पाँव पसार चुकी है। तथाकथित आतंकवाद आज इसी संवेदनहीनता का ही परिणाम है। कभी प्राणीमात्र की रक्षा करने के लिये वचनबद्ध मनुष्य आज सार्वजनिक रूप से किसी भी मनुष्य के प्राण हरने में तनिक भी नहीं हिचकता है। कारण साधारण सा है कि अब स्वार्थ सर चढ़कर बोल रहा है, नैतिकता मृत प्रायः हो गई है, मानवता खून के आँसू रो रही है, अहंकार के मद में अच्छे-बुरे का भाव समाप्त होता जा रहा है। भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अनाचार जीवन के अभिन्न अंग होते जा रहे हैं।

अतैव वर्तमान में मूल्य चेतना की आवश्यकता इसलिये महत्वपूर्ण है क्योंकि शनैः-शनैः हम अपने वास्तविक स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। यह प्रक्रिया न रोकी गयी तो हमारे ब्रह्मस्वरूप का विनाश निश्चित है और कदाचित हमारे सामाजिक जन-जीवन के परिवाररूपी ढाँचे का विध्वंस भी सुनिश्चित होगा। हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी अभी संक्रमण काल में है, उसे अभी अपने सभी जीवन मूल्य स्मरण तो हैं किन्तु वो भोग-विलास एवं तथाकथित विकास की चकाचौंध से भ्रमित हैं। अगर इस पीढ़ी को उनके समृद्ध एवं वैभवशाली जीवन मूल्यों की अवधारणा से परिचित कराया जाये तो वे भारत को समर्थ, समृद्ध एवं प्रसन्नचित बनाने की प्रक्रिया में अपना अमूल्य योगदान देने में अवश्य सफल होंगे।

संक्षेप में कहा जाये तो उपर्युक्त जीवन मूल्यों का मानव जीवन में अमूल्य योगदान है और हम सभी इन्हें अपने जीवन में आत्मसात करके, उनका अनुसरण करके न केवल अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं वरन सम्पूर्ण समाज के समक्ष एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं ताकि अधिकाधिक लोग भी ऐसा सुसंस्कृत, समृद्ध और सारगर्भित जीवन जीने के लिये प्रेरित हो सकें।

जीवन मूल्यों की रक्षा हेतु समर्पित भाव से परमात्मा का वरण करना होगा। सब कुछ उसी का है, उसी में निहित है और उसी परमब्रह्म में विलीन हो जाना है। इसी भाव में जीवन की सार्थकता भी है और उपयोगिता भी। माँ गीता अध्याय ३ के १३वें छंद में कहती हैं-

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।

जो व्यक्ति परमब्रह्म में पूर्णतया लीन रहता है, उसे अपने आध्यात्मिक कर्मों के योगदान के कारण अवश्य ही भगवद्धाम की प्राप्ति होती है, क्योंकि उसमें हवन आध्यात्मिक होता है और हवि भी आध्यात्मिक होती है। आध्यात्मिक चेतना की ऐसी स्थिति में होता हवन, अग्नि, यज्ञकर्ता तथा अन्तिम फल- यह सब परब्रह्म में एकाकार हो जाता है। गुरु-शिष्य दोनों ईश्वर से करबद्ध यह प्रार्थना करें कि उन दोनों का विकास, पोषण, संवर्धन, और तेजस साथ साथ बढ़े, कोई वैमनस्यता न हो और ईश्वर सबको संरक्षण प्रदान करें। चहुँ ओर शांति व्याप्त हो। अपने गुरु आचार्य श्री ओमशंकर जी त्रिपाठी और ईश्वर के श्रीचरणों में सादर प्रणाम करते हुए कठोपनिषद् के अमृत उद्धरण से लेखनी को इस विषय पर विराम देता हूँ।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

- डॉ० पंकज श्रीवास्तव
बैच १९९१
संचालक - ओम सर्जिकल सेन्टर एण्ड मेटर्निटी होम, वाराणसी

शुभकामना संदेश

आलोक यादव
2007

युग भारती संस्था सदैव समाज की चेतना को जाग्रत करने, राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने तथा जन-जन में सेवा, संस्कार और सद्भाव की भावना का संचार करने के लिए तत्पर रही है।
"युग प्रभा" के इस विशेषांक तथायुग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन के सफल आयोजन पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

DR. SARASWAT'S PATHOLOGY

(FIRST NABL ACCREDITED LAB IN KANPUR)

7/145, Plot no. 7, Swaroop Nagar, Kanpur Nagar (Main Branch)

Director: Dr. Praveen Saraswat, M.B.B.S., M.D.(Path)

डॉ. प्रवीण सारस्वत
बैच १९८२

Website: www.sraswatpathology.com

E.Mail : info@saraswatpathology.com

- A Centre for all the specialized tests with quality assurance.
- Glycosylated Hemoglobin (HbA1c) by D-10 variant systems.
- Bio-rad-HPLC Technology for the first time in Kanpur: very accurate results with high precision.
- Hematology by Sysmex XN-10 a five part differential fully automated hematology analyzer.
- Immunoassays by cobas e 411, tumour markers, CPK-MB (MASS) & Troponin -t (Quantitative) & Troponin I (Quantitative)
- Blood culture by Bact /Alert system for instant report of blood culture.
- Other Numerous special tests.

AMRITA CLINIC

NURTURING BODIES, EMPOWERING MINDS

A UNIT OF AMRITA CLINIC
HERBLOOM
A centre for aesthetic & functional gynaecology and graceful aging

Dr. Amrita Saha

MBBS. MS. FMAS. MBA.
PGDHHM, PGDMLS,
FELLOWSHIP IN COSMETIC GYNAECOLOGY
STEM CELL AND REGENERATVE MEDICINE

1 HIGH RISK PREGNANCY
2 LAPAROSCOPIC GYNAECOLOGICAL SURGERIES
3 COSMETIC GYNAECOLOGY
- LASER, PRP FOR ♦ URINARY INTCONTINENCE
♦ VAGINAL LAXITY
♦ SEXUAL DYSFUNCTION
♦ CERVICAL EROSION ♦ RECURRENT VAGINAL INFECTION
- BOTOX • GENITAL PEELING
- GENITAL FILLERS • LASER HAIR REMOVAL

MOST ADVANCED LASER TREATMENT AVAILABLE

Dr. Ganesh Shanker

M.D. (BHU) Consultant Psychiatrist
Ex. Associate Prof. (Psychiatry) GSVM Medical College Kanpur
General Secretary Central Psychiatric Society
Life Fellow : Indian Psychiatric Society
Life Fellow : Indian Association of Private Psychiatrists
Life Fellow : Indian Association of Child Psychiatrists

- All Kind of Psychiatric Disorders
- Relationship Issues
- De- Addiction
- Child Behavioural Problems
- Psychometric Assessment
- RTMS THERAPY

ONLINE COUNSELLING SERVICES BY EXPERIENCED & QUALIFIED TEAM OF CLINICAL PSYCHOLOGIST & COUNSELLORS

AMRITA CLINIC- 113/228 Swaroop Nagar, Kanpur 208002.
(Behind Swaroop Nagar Police Station, Opposite to Pavni Pathology)
अमृता क्लीनिक – 113/228 स्वरूप नगर, कानपुर 208002
(स्वरूप नगर थाने के पीछे, पावनी पैथोलॉजी के सामने)

+91 7784 849451

Search Amrita Clinic Swaroop Nagar on Google

Bundelkhand Superspeciality Hospital

BUNDELKHAND
SUPERSPECIALITY HOSPITAL
Caring | Healing | Leading

A Premier Multispeciality Hospital Of Bundelkhand.

- The only hospital in the Bundelkhand region that provides treatment for the majority of ailments under one roof.
- A record of performing open heart surgery on more than 200 patients in the last one year has been set.
- 24x7 (360) degree treatment for all diseases like Cardiology facilities, Gastroenterology facilities, Gynecology and Obstetrics facilities, Pediatrics department and all types of surgeries etc.

DR. RAM PRATAP SINGH BUNDELA
MD, DM (GASTROENTEROLOGY)
(Interventional Gastroenterologist)

DR. NIRDESH JAIN
MD, DM, FSCAI (CARDIOLOGY)
(Interventional Cardiologist)

DR. PRIYANKA SINGH
M.B.B.S., M.S. (OBS & GYNAE)
Director

DR. RUCHI JAIN
M.B.B.S, M.D
Director

EXPERTISE OF CARENESS ARE ALWAYS CLOSE TO YOU

Free treatment facility provided by Ayushman Bharat, BHEL and various TPA

Address:- Medical Tiraha, Kanpur Gwalior Bypass Road, Jhansi- 284128, Phone. 0510-2970210 Mo. 7068025249

जीवन की कठिन परिस्थितियाँ

मनोदशा, मार्गदर्शन और सकारात्मकता की ओर यात्रा

जीवन एक अविरल प्रवाह है। कभी मंद सरिता की शीतल धारा, तो कभी प्रचंड समुद्र की उग्र लहरें। इसमें सुख-दुख, सफलता-विफलता, आशा-निराशा का अनवरत आवागमन चलता रहता है। सामान्य समय में मन स्थिर रहता है, किंतु कठिन परिस्थितियाँ आते ही यह संतुलन डगमगाने लगता है। संकट केवल बाहरी परिस्थितियों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अंतर्मन के गहन कोनों में प्रवेश कर हमारी मनोदशा को भी प्रभावित करते हैं। ऐसे समय में उचित मार्गदर्शन और सकारात्मक दृष्टिकोण ही वह दीपक है, जो अंधकार में प्रकाश की किरण बिखेरता है।

कठिन समय में मनोदशा के रूपांतरण –

विपरीत परिस्थितियाँ मानो मनुष्य के भीतर एक गहरी खाई उत्पन्न कर देती हैं, जिसमें वह धीरे-धीरे डूबने लगता है-

आत्मविश्वास का क्षय : विफलताओं और आलोचनाओं के प्रहार से आत्मबल शिथिल होने लगता है।

निराशा और कुंठा : निरंतर प्रयास के पश्चात भी परिणाम न मिलने पर जीवन निरर्थक प्रतीत होता है।

भविष्य की अनिश्चितता : ''अब आगे क्या होगा?'' का भय मन के आकाश पर घने बादल बनकर छा जाता है।

सामाजिक व मानसिक अलगाव : कठिन समय व्यक्ति को एकाकीपन की ओर धकेलता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सकारात्मकता की ओर यात्रा : उपाय एवं चिंतन –

कठिनाई कोई अवरोध नहीं, बल्कि आत्मविकास की पाठशाला है। जो इसे समझ लेता है, वह कठिनाई को अवसर में परिवर्तित कर देता है।

दृष्टिकोण का रूपांतरण : संकट को समस्या नहीं, बल्कि संभावना मानना ही सफलता की कुंजी है।

ध्यान और आत्मचिंतन : योग, ध्यान और श्रेष्ठ साहित्य का संग साथ भीतर स्थिरता और ऊर्जा का संचार करता है।

कर्तव्यनिष्ठा व संकल्प : जब व्यक्ति कर्तव्यपथ से विचलित नहीं होता, तभी वह कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है।

सहयोग व संगठित प्रयास : सामूहिकता में ही मानसिक शक्ति का संचार होता हैय संगठन ही मनुष्य का वास्तविक कवच है।

कृतज्ञता व सेवा भाव : जो कुछ हमारे पास है, उसके लिए आभार और दूसरों की सेवा, जीवन को सच्ची सकारात्मकता से आलोकित करती है।

महापुरुषों के विचारों का आलोक

इतिहास के पन्नों पर महापुरुषों के विचार सदैव मार्गदर्शक दीपक की भाँति प्रज्वलित होते हैं –

लोकमान्य तिलक : ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूँगा।'' यह संकल्पशक्ति दर्शाता है कि दृढ़ इच्छाशक्ति से कोई भी बाधा असंभव नहीं रहती।

डॉ. हेडगेवार : ''स्वयं को संगठित करो, यही सच्ची सेवा है।'' संगठन और अनुशासन कठिनाई में विजय दिलाते हैं।

माधवराव गोलवलकर (गुरूजी) : ''व्यक्ति निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण संभव है।'' आत्मबल से सम्पन्न व्यक्ति ही समाज को सशक्त बना सकता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय : ''अंत्योदय समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुविधा पहुँचना ही सच्चा मानववाद है।'' यह हमें स्वार्थ से ऊपर उठकर समर्पण का संदेश देता है।

बलराज मधोक : ''राष्ट्र का पुनर्निर्माण तभी संभव है जब हम अपने भीतर जागृति लाएँ।'' यह विचार हमें समस्या का नहीं, समाधान का हिस्सा बनने को प्रेरित करता है।

अशोक सिंघल : ''संघर्ष से घबराना नहीं चाहिए, वही हमें निखारता है।'' प्रत्येक बाधा एक नई संभावना का द्वार खोलती है।

निष्कर्ष :-

जीवन की कठिनाइयाँ अंत नहीं, बल्कि नव आरंभ होती हैं। वे हमारे धैर्य, साहस और दृष्टिकोण की कसौटी हैं। संकट हमें तोड़ने नहीं आते, बल्कि निखारने आते हैं।

अतः स्पष्ट है कि प्रेरणा, सेवा और आत्मबल ही जीवन के स्थायी स्तंभ हैं। जो इनका सहारा लेता है, वह न केवल स्वयं कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र को भी नई दिशा प्रदान करता है। ''जब मन अंधकार में हो, तो दीपक बाहर नहीं, भीतर जलाना चाहिए।''

-डॉ० मोहनकृष्ण मिश्र
बैच १९८६

''राष्ट्र के सुप्त होने से ही सब प्रकार की खराबियों घर करती हैं। राष्ट्र के सुप्त होने से उसकी विभिन्न इकाइयों का प्रतिनिधित्व करने वाली सत्ताएं जैसे राज्य, पंचायत परिवार आदि सभी अनियन्त्रित और उच्छृंखल हो जाती हैं। राष्ट्र भ्रष्ट हो सकता है । ष्प्रभुता पाइ काहि मद नाहींष वाली चौपाई सही प्रभुता उतरती है। किन्तु यदि राष्ट्र जाग्रत और दक्ष हो तो राज्य की मर्यादित रहती है। राज्य तो राष्ट्र का वकील है। कई बार वकील अपने मुवक्किल की ओर से पैरवी करते समय ऐसी भाषा में बातचीत करता है । मानों वही प्रार्थी है। ऐसा करना जरूरी होता है। वकालतनामा लिख दिया जाता है य किन्तु यदि वकील ठीक काम न करे तो वकालतनामा बदला जा सकता है । यही बात राज्य के साथ भी है। राज्य के समस्त अधिकार राष्ट्र द्वारा ही प्रदान किए जाते हैं और यदि राष्ट्र जाग्रत न रहा तो राज्य उन अधिकारों का दुरपयोग कर सकता है। राज्य यदि अनियंत्रित होकर राष्ट्र से समस्त सत्ताओं का अपहरण कर ले तो तानाशाही स्थापित हो जाती है, और राष्ट्र पंगु हो जाता है।''

-पं० दीनदयाल उपाध्याय

विद्यालय प्रवेश -वह यादगार पल

वर्ष १९७१, मैं अपनी पाँचवी की कक्षा सरस्वती शिशु मंदिर से पास कर, अगले विद्यालय में प्रवेश के लिए उत्सुक था। कौतुहलवश पिताजी से पूछा कि मेरा एडमिशन कब होगा? संक्षिप्त उत्तर था - 'बता दूँगा' एक दिन बोले- 'तैयार हो जाओ, एडमिशन के लिए चलना है।' मैं पिताजी के साथ चल दिया। नया विद्यालय, नया प्रांगण, नए आचार्य, नया ऑफिसय मैं अत्यधिक प्रभावित व उत्साहित था, जिज्ञासा थी कि इस नए विद्यालय में कौन प्रवेश की औपचारिकताएं पूरी करायेगा?

थोड़ी देर में प्रांगण में एक कार ने प्रवेश किया। सभी का ध्यान उस ओर अनायास ही चला गया। पिताजी मेरा हाथ पकड़ कर कार की ओर अग्रसर हुए। मैंने माननीय बैरिस्टर नरेंद्र जीत सिंह को ड्राइविंग सीट पर देखा और साथ में बिलकुल सफेद परिधान, लंबी सफेद दाढ़ी, काले फ्रेम का चश्मा पहने, एक अत्यन्त ओजस्वी व्यक्ति को देखा, सोचा शायद यही प्रधानाध्यापक हैं और निश्चय ही यही विद्यालय में प्रवेश देंगे।

पिताजी से कुछ समय बातें करने के बाद वह व्यक्ति मुझसे बोले- 'विद्यालय में प्रवेश लेना है?' मैंने हामी भरते हुए जल्दी से प्रपत्र उनको दे दिया। उस ओजस्वी व्यक्ति ने मेरे प्रपत्र पर लिखा 'स्वीकृत' और बोले की एक त्रुटि सुधार कर रहा हूँ। उन्होंने नाम 'हरी कान्त' काट कर 'हरि कांत' कर दिया और बतलाया है कि इसका अर्थ है- 'दिव्यता से परिपूर्ण इसका जीवन में अनुसरण करो और इस नए विद्यालय में प्रतिभा अर्जित करो। बहुत आशीर्वाद !' वह ओजस्वी व्यक्ति जिससे की पिताजी ने मेरा प्रवेश अनुमोदित करवाया था, वह कोई और नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख परमपूज्य गुरुजी श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर जी थे जोकि स्वयं पण्डित दीनदयाल विद्यालय के प्रेरणा स्रोत थे और उनके साथ में खड़े थे विद्यालय संस्थापक व संरक्षक, माननीय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी।

मेरे जीवन का वह अतिमहत्वपूर्ण क्षण था। पिताजी ने एक युगपुरुष से प्रवेश दिलाकर न सिर्फ उच्च आदर्शों को अनुसरण करने की प्रेरणा दी, बल्कि जीवनपर्यंत मुझे यह एहसास भी दिलाया कि विद्यालय एवं छात्रावास प्रवेश की वह प्रक्रिया मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय था जो अब अविस्मरणीय संस्मरण का रुप ले चुका है।

- हरि कांत मिश्र
१९७६ बैच

ध्येयसिद्धि के लिये उस पर अपनी श्रद्धा चाहिये। कोई भी व्यक्ति एक ही समय में सहस्त्रों उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकता। अपने सामने एक ही लक्ष्य रख कर उसकी प्राप्ति के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर करना पड़ता है। श्रद्धा और विश्वास से अपने सामने रखा हुआ एकमात्र लक्ष्य प्राप्त करने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहना सफलता की कुंजी है। एक बार विचारपूर्वक अपना लक्ष्य और उसकी पूर्ति के साधन निश्चित हो जाने पर उस पर अटल श्रद्धा रखनी चाहिये । अपने लक्ष्य पर श्रद्धा और हृदय में लक्ष्य के प्रति अव्यभिचारी निष्ठा के बिना हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कदापि नहीं कर सकेंगे।

(श्री गुरूजी : समग्र दर्शन)

स्थित प्रज्ञ श्रद्धेय बैरिस्टर नरेंद्रजीत सिंह

जीवन परिचय-

श्रेष्ठ कानूनविद, महान समाजसेवी, प्रतिष्ठित शिक्षाविद, अनेक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थानों के संथापक, सनातन परंपराओं के प्रति समर्पित श्रद्धेय बैरिस्टर नरेंद्रजीत सिंह जी का जन्म १८ मई १९११ को कानपुर में हुआ। इनके पिता राय बहादुर विक्रमजीत सिंह जी एक प्रबुद्ध शिक्षाविद, समाजसेवी एवं क्षेत्र के यशस्वी कानूनविद थे। नरेंद्रजीत सिंह जी ने बीएनएसडी इंटर कॉलेज से सन् १९२६ में हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर से वर्ष १९२८ में न मात्र विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में इंटरमीडिएट की परीक्षा की बल्कि प्रदेश में छठा स्थान भी प्राप्त किया। उसके बाद सन १९३० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से विज्ञान वर्ग में चतुर्थ स्थान के साथ प्रथम श्रेणी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। विधि (कानून) शिक्षा में विशेष रुचि होने के कारण इन्होंने 'इनर टेंपल लंदन' से बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की। एक विद्वान अधिवक्ता के दायित्व के साथ बैरिस्टर साहब ने अनेक सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना की, उनका मार्गदर्शन एवं संचालन किया। बैरिस्टर साहब का विवाह तत्कालीन कश्मीर नरेश के दीवान बद्रीनाथ जी की विदुषी कन्या सुशीला जी (बूजी) के साथ हुआ। आप वर्ष १९५६ से १९९३ तक ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल के अध्यक्ष रहे तथा अनेक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाओं, धर्मार्थ औषधालयों एवं पुस्तकालयों के संचालक भी रहे।

प्रभावशाली व्यक्तित्व-

'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।'

अर्थात श्रेष्ठ व्यक्ति जैसा आचरण करते हैं दूसरे व्यक्ति भी वैसा ही आचरण करते हैं। आशय यह कि श्रेष्ठ व्यक्ति जो भी कार्य करते हैं या जो आदर्श स्थापित करते हैं, सामान्य लोग उनका अनुसरण करते हैं। सन् १९७७ में जब मेरा प्रवेश पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर में हुआ तब मुझे श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के विराट व्यक्तित्व एवं उनकी आत्मीयता को निकट से अनुभूत करने का अवसर मिला। विद्यालय के छात्रों के मध्य उनके विचार अत्यंत प्रेरणाप्रद व उत्साह भरने वाले होते थे। छात्रों की शंकाओं का समाधान वो अत्यंत रोचक पूर्ण ढंग से करते थे। उनके जीवन, उनके विचारों पर श्रीमद्भगवदगीता के आध्यात्मिक ज्ञान का स्पष्ट प्रभाव प्रदर्शित होता था। स्थितप्रज्ञ, अर्थात ऐसा व्यक्ति जो सभी स्थितियों में संतुष्ट रहता है, दुःख-सुख में सम तथा जिसके राग, भय और क्रोध समाप्त हो गए हों, ऐसा स्थिर बुद्धि वाला व्यक्तित्व सहज रूप से बैरिस्टर साहब के रूप में देखा जा सकता था। उनके आचार-विचार में नैतिकता व आदर्शों का समावेश रहता था। उनका स्नेह, उनकी आत्मीयता मुझे वी.एस.एस.डी. कॉलेज के मेरे विद्यार्थी जीवन (१९८४ से १९८९) में भी प्राप्त हुई। सांस्कृतिक संगठन विद्यार्थी परिषद के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए महाविद्यालय के विभिन्न रचनात्मक आयोजनों में बैरिस्टर साहब का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होता था। चाहे वो सुभाष चंद्र बोस जयंती पर आयोजित होने वाला रक्तदान शिविर हो या महाविद्यालय की अन्य पाठ्य सहगामी गतिविधियां।

पं.दीनदयाल विद्यालय एवं वी.एस.एस.डी. कॉलेज, कानपुर के विद्यार्थी होने के कारण महाविद्यालय में शिक्षक के रूप में नियुक्ति के समय मुझे विशेष प्राथमिकता प्राप्त हुई। बैरिस्टर साहब का हमेशा अपने विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्रति असीम स्नेह और पूर्ण विश्वास रहता था।

इस प्रकार श्रद्धेय बैरिस्टर साहब एक आदर्श गृहस्थ, आदर्श विधिवेत्ता, आदर्श शिक्षाविद, आदर्श समाज सेवक एवं आदर्श प्रबंधक के रूप में एक देव पुरुष थे, जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक स्वतंत्रता, शैक्षिक उन्नयन एवं सामाजिक उत्थान हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उनके द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थानों से निकले हजारों छात्र आज भारत के साथ-साथ दूसरे देशों में भी प्रकाश बिखेर रहे हैं। भगवत गीता के महत्वपूर्ण सूत्र 'सर्व भूत हिते रतः' को आत्मसात कर समाज सेवा एवं परोपकार को जीवन का उद्देश्य बनाकर माननीय बैरिस्टर साहब ने सभी प्राणियों के हित के मंत्र को चरितार्थ किया।

-प्रो० मनोज अवस्थी
१९८४ बैच
अध्यक्ष, वाणिज्य संकाय
वीएसएसडी कह्लेज, कानपुर

"राष्ट्र के लिए चार बातों की आवश्यकता होती है। प्रथम भूमि और जन, जिसे हम देश कहते हैं दूसरी सबकी इच्छाशक्ति याने सामूहिक जीवन का संकल्प। तीसरी एक व्यवस्था जिसे नियम या संविधान कह सकते हैं और जिसके लिए सबसे अच्छा शब्द हमारे यहाँ प्रयुक्त हुआ है -ध्धर्म ध्। चौथा है जीवन- आदर्श स इन चारों की समष्टि को राष्ट्र कहा जाता है। जिस प्रकार व्यक्ति केः लिए शरीर, मन,बुद्धि और आत्मा जरूरी है, इन चारों को मिलाकर व्यक्ति बनता है उसी प्रकार देश, संकल्प, धर्म और आदर्श के समुच्चय से राष्ट्र बनता है।"

- पं दीनदयाल उपाध्याय

विद्यालय और छात्रावास की अमिट स्मृतियाँ...

लगभग नौ वर्ष का रहा होऊंगा मैं, जब विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से माता-पिता और भाई-बहनों संग अपने पैतृक गाँव से कानपुर शहर में आ गया था। यहाँ आने के बाद कानपुर शहर के पूर्वी छोर स्थित कृष्णानगर के एक हिंदी माध्यम के विद्यालय से मैंने कक्षा छह से दस तक शिक्षा प्राप्त की। अपनी इस शिक्षा के समय तक मेरे निवास पर बिजली की सुविधा नहीं थी। अपनी अथक मेहनत एवं शिक्षकों के मार्गदर्शन से मैंने दसवीं की बोर्ड परीक्षा में अपने विद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये। इसके बाद विद्यालय में चहुँओर मेरी प्रशंसा होने लगी। जो मिलता वही मेरी तारीफ करता, परन्तु मेरे मन में अब कहीं और पढ़ने की इच्छा बलवती होने लगी थी और धीरे-धीरे वह इच्छा जिद में परिवर्तित हो गयी।

उस समय बोर्ड-परीक्षा के परिणाम समाचार पत्र में प्रकाशित होते थे। तब मैंने कानपुर शहर के दो प्रमुख विद्यालयों क्रमशः पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय एवं बी. एन. एस. डी. इंटर कॉलेज के परिणामों को भी देखा और पाया कि उनमें पढ़ने वाले सभी छात्र प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण हुए हैं और प्रदेश की मेरिट सूची में प्रथम दस, पंद्रह छात्र तो इन्हीं विद्यालयों के हैं। बस फिर क्या? मैंने भी निश्चित कर लिया कि अग्रिम शिक्षा के लिये इन्हीं विद्यालयों में से किसी एक में प्रवेश लेना है मुझे। जहाँ एक ओर मेरा वर्तमान विद्यालय और उसके सभी शिक्षक मुझे हाथों हाथ ले रहे थे और अधिकांश सुविधाएँ सहर्ष देने को तैयार थे वहीं दूसरी ओर मैं घर से सत्रह किलोमीटर दूर शहर के दोनों प्रमुख विद्यालयों में प्रवेश हेतु चक्कर लगा रहा था। बहुत प्रयास के बाद मुझे सौभाग्य से दोनों ही विद्यालयों में प्रवेश मिल गया। जिनमें से मैंने पं० दीनदयाल विद्यालय को चुना या यूं कहा जाए कि नियति ने मेरे लिये इस विद्यालय का चुनाव किया।

जीवन में पहली बार चौदह वर्ष की आयु में अग्रिम शिक्षा हेतु घर छोड़कर छात्रावास में प्रवेश लिया। एक छोटे से गाँव से आए मेरे जैसे बालक के लिए छात्रावास और वहाँ का अनुशासन अत्यंत कठोर जान पड़ने लगा। लगता था कि मानो एक कारागार है और उस पर अंग्रेजी न बोल पाना एवं अन्य छात्रों से अनजानापन मेरी कठिनाई को और बढ़ा रहा था। कक्षा में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की इतनी सघन और विस्तृत व्याख्या से पहली बार मेरा परिचय हुआ। मेरी परेशानियां बढ़ने लगीं।

हमारे अंग्रेजी के शिक्षक आदरणीय श्री अनिल त्रिपाठी जी के द्वारा बताए गए अंग्रेजी कविताओं के अर्थ, भाव, भंगिमाओं के साथ बताई गई उनकी व्याख्या और कुछ विशेष साथियों द्वारा उनके साथ किए जाने वाले प्रश्नोत्तर मेरे लिए किसी व्यक्ति को जबरदस्ती बैठाकर दिए जाने वाले दंड जैसे प्रतीत होने लगे थे। हमारी हिंदी की कक्षा में श्री सुमित्रानंदन पंत जी की कविताओं का प्रकृति वर्णन था तो अंग्रेजी की कक्षा में रॉबर्ट फ्रास्ट और जॉन मिल्टन की कविताएँ चलती थीं। साथ ही साथ शेक्सपीयर की अपनी 'thou goest' शैली की अंग्रेजी में ''वेनिस के सौदागर'' की कथा।

हालांकि मैं छात्रावास में रहकर इस प्रकार के एकाकी वातावरण में स्वयं को ढालने पर अड़ा था क्योंकि इस विद्यालय में आने की जिद भी तो मेरी ही थी। इसी बीच छह महीने बाद ही मुझे और द्वादश कक्षा के छात्रों को हमारे अंग्रेजी के शिक्षक की शादी में जाने का निमंत्रण मिला। सभी बहुत उत्साहित थे क्योंकि सभी को शादी स्थल तक ले जाने की व्यवस्था भी विद्यालय ने आचार्य श्री दीपक जी को सौंपी थी। यद्यपि मैं भी मन ही मन जाने को बहुत उत्सुक था, परन्तु नवीन प्रवेश के कारण अन्य साथियों के सदृश मेरे पास शादी समारोह में पहनने के लिये उचित पोशाकें न थीं। साथ ही अंग्रेजी शिक्षक के सम्मुख अंग्रेजी के न आने का भय एक और बाधा बन रहा था।

मुझे इस पशोपेश को देखकर मेरे ही कक्ष के दो अग्रजों ने, न केवल मुझे प्रोत्साहित किया अपितु दोनों ने मिलकर अपनी उपलब्ध पोशाकों से मुझे तैयार भी कर दिया। इसके बाद लगभग जबरदस्ती अपने साथ मुझे विवाह समारोह में शामिल कराने ले भी गए। आचार्य श्री दीपक जी के सानिध्य में हम सभी छात्र गुरूवार, २१ फरवरी १९८५ की शाम अपने अंग्रेजी के शिक्षक श्री अनिल त्रिपाठी जी की शादी में शामिल होने उन्नाव पहुँच गए। वहाँ हम सभी ने समारोह का आनंद लिया और आचार्य श्री अनिल जी और अपनी गुरु माता को वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएँ देने के पश्चात आईसक्रीम खाते हुए उनके साथ एक फोटो भी खिंचाई। इस समय भी मुझे अपनी उस वेशभूषा में वहाँ की उपस्थिति और अंग्रेजी में कहे जाने वाले औपचारिक वार्तालाप का डर सता रहा था जिसके कारण मैं फोटो में चुपचाप पीछे की पंक्ति में खड़ा रहा।

एक सीमित समय के पश्चात हम सभी आचार्य दीपक जी के साथ उसी रात अपने छात्रावास वापस आ गए। लौटने के पश्चात् एक बार मैंने अपने कक्ष के उन दोनों सहृदय अग्रजों से यह जरूर जानना चाहा कि मैं शादी के समय उस पोशाक में कैसा लग रहा था और जो मैंने कुछ शब्द अंग्रेजी में वहाँ बोले क्या वह सही थे ? जिसके प्रत्युत्तर में मेरे एक अग्रज ने (जो अब इस दुनिया में नहीं हैं) हंसते हुए कहा था कि ''जम रहे थे तुम और हाँ, शादी में लोग दूल्हे को देखते हैं किसी बाराती को नहीं'' और दूसरे अग्रज ने भी कुछ ऐसी ही हास्य मिश्रित बात कही। आज इस अनुभव को बीते चालीस वर्ष से अधिक हो चुके हैं, परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि जैसे अभी कल की ही बात हो।

ईश्वर से प्रार्थना है कि मेरे सभी आचार्य स्वस्थ और दीर्घायु हों तथा सभी अंग्रेज एवं सहपाठियों का सानिध्य एवं उनका मित्रवत लगाव चिरस्थायी रहे।

- कृष्ण कुमार तिवारी
बैच १९८६
कुलसचिव, आईआईटी गुवाहाटी, आसाम

बुन्देल खण्ड - एक दर्शन

''बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।'' आल्हा-ऊदल की वीरता और चन्देलों की शिल्पकला से अलंकृत बुन्देलखण्ड की इस महान धरती से जो अपने अन्दर खनिज रुपी लाल सोने को अपनी छाती में अंगीकृत किये है, मैं रवीन्द्र कुमार गुप्ता ८८ बैंच से आपको प्रणाम करता हूँ। इस बुन्देली धरती से सवई जनन के राम राम।।

बुन्देलखण्ड को अगर हम सीमाओं में बांधने का प्रयास करें, तो बुन्देलखण्ड प्राचीन काल में चेदि महाजनपद और विदेह राज्य के अर्न्तगत आता था, जिसकी राजधानी शुक्तिमती थी। महाभारत काल में यह शिशुपाल का राज्य बना। राजा विराट की महान नगरी विराट नगरी वर्तमान में राठ जो बुन्देलखण्ड के मध्य में स्थित है, यहाँ पर पाण्डव अज्ञातवास में रहे और भीम ने कीचक का वध भी यहाँ पर किया था। जिस स्थान पर भीम ने कीचक को पटक कर उसका वध किया था, वहाँ पर एक तालाब बन गया था, जो आज भी स्थित है। साथ ही छतरपुर जिले में भीम के द्वारा उदलित भीम कुण्ड है, जिसका जल सामान्यतः शान्त रहता है लेकिन एशिया में कहीं भी भूकम्प आने से पहले उसके जल में तीव्र हलचल प्रारम्भ हो जाती है, ये आज भी वैज्ञानिक शोध का विषय है।

बुन्देलखण्ड में छतरपुर जिले में स्थिति खजुराहो के चन्देलकालीन निर्मित मंदिर पूरे विश्व में अपनी श्रंगार एवं वास्तुकला के प्रतीक हैं। १६वीं सदी में ओरछा की पावन धरा पर पुनः बुन्देला राजा रुद्र प्रताप सिंह ने बुन्देलखण्ड की नींव रखी। बुन्देली राजा छत्रसाल ने मुगलों के खिलाफ जंग लड़कर स्वतंन्त्र बुन्देलखण्ड राज्य बनाया। आज बुन्देलखण्ड में ग्वालियर एवं चम्बल सम्भाग से लेकर पन्ना जनपद तक लगभग दो राजा के १५ जनपद आते है। वीरता से लेकर सम्प्रभुता तक के इतिहास में बुन्देलखण्ड की कथायें गाई गयीं हैं। आल्हा-ऊदल, रानी लक्ष्मीबाई, राजा छत्रसाल और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परमानन्द जी की वीरता से यहाँ का बच्चा बच्चा वाकिफ है।

''आल्हा-ऊदल बड़े लड़्डैया, जिनसे हार गयी तलवार'' में आल्हा गायन हर बुन्देली की जुबान पर मिल जायेगा। हरदौल, ओरछा के राजा वीर सिंह देव के बेटे थे। वीर सिंह देव ने अपने बड़े बेटे जुझार सिंह को ओरछा की राजगद्दी सौंपी और हरदौल को ओरछा का दीवान बनाया। जुझार सिंह कई बार मुगलों से उलझते रहते थे। ऐसे में रियासत का सारा काम हरदौल ही देखते थे। ओरछा के गजेटियर में इस बात का उल्लेख है कि हरदौल से जलकर किसी ने राजा जुझार सिंह से शिकायत कर दी कि उनकी पत्नी चंपावती और हरदौल सिंह के बीच अवैध संबंध है। इस पर राजा जुझार सिंह ने रानी चंपावती को अपने हाथों से हरदौल को जहर परोसने का आदेश दिया। रानी जब यह न कर सकी, तो हरदौल ने अपनी भाभी का दामन पाक साफ रखने के लिए खुद जहर पी लिया।

कहा जाता है कि हरदौल की समाधि दतिया के पास बनाई गई। जुझार सिंह और हरदौल की बहन कुंजाबाई ने जब अपने जीवित भाई जुझार सिंह को अपनी बेटी की शादी में आने का न्योता भेजा, तो जुझार सिंह ने कहा कि वह अपने प्रिय भाई हरदौल को आमंत्रित करे।

इसके बाद कुंजाबाई अपने भाई हरदौल की समाधि पर जाकर रोने लगी। बहन के रोने पर हरदौल प्रकट हुए और उन्होंने अपनी बहन से वादा किया कि वे भाँजी की शादी में भात लेकर जरूर आएंगे। कहा जाता है कि हरदौल ने अदृश्य रहकर अपनी भाँजी की शादी में भात दिया। इसके बाद से बुंदेलखंड के हर घर में शादी के मौके पर हरदौल को याद

किया जाता है और उन्हें शादी में आमंत्रित किया जाता है।

१६वीं शताब्दी बुन्देली राजा मधुकरशाह बुन्देला और उनकी पत्नी कुँवर गनेश के द्वारा राम राजा मन्दिर की स्थापना हुयी। अयोध्या के अतिरिक्त ओरछा भी भगवान राम के शासन के आधीन था। इसी लिये आज भी ओरछा में प्रतिदिन भगवान राम को ''गॉड ऑफ ऑनर'' से सम्मानित किया जाता है। वेतवा नदी के तट पर स्थित ओरछा में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये विभिन्न प्रकार की Water Activity भी आयोजित हो रही है।

दर्शनीय स्थल :- झाँसी का किला, ओरछा का किला, कालिंजर का किला, पन्ना टाइगर रिजर्व, खजुराहो के चन्देल कालीन मंदिर, राम राजा मंदिर ओरछा, भीम कुण्ड, जटाशंकर, पाण्डव प्रपात आदि मुख्य रुप से दर्शनीय है।, महोबा का सूर्य मंदिर, चंद्रिका देवी का मंदिर जिसके बारे में श्रद्धालु कहते है कि देवी दिन में तीन बार अपना रुप बदलती हैं।

खानपान :- बुन्देली खाना अपने आप में कई आयाम से अलंकृत है। प्रमुख रुप से माड़े, यहाँ का बुन्देली भोजन का प्रतीक है। इसमें गेहूँ को एक रात पहले भिगो कर, फिर पीसा जाता है एवं रुमाली रोटी की तरह सेक कर चने की दाल के साथ घी एवं लाल सूखी मिर्च एवं दही बड़े के साथ बड़े प्यार से परोसा जाता है।

खनिज सम्पदा :- बुन्देल खण्ड की छाती में लाल सोना भरा पड़ा है जिसे हम भवन निर्माण के लिये उपयोग करते है। प्रतिदिन लगभग हमीरपुर जनपद से ही ३०० ट्रक राज्य और गैर राज्य को जाते है, गिट्टी एवं क्रेशर के लिये झाँसी एवं कबरई प्रमुख स्थान हैं।

- रवीन्द्र कुमार गुप्त
१९८८ बैच
प्रांतीय उपाध्यक्ष
सेवा भारती, कानपुर प्रान्त

युग-प्रभा विशेषांक समाजहित की नई पहल का प्रतीक बने। - नितिन कुमार गौड़ १९९४

आस्था, इतिहास और स्थापत्य का संगम - ओरछा

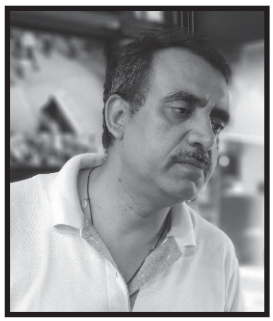

इतिहास अगर कहीं पत्थरों में सांस लेता है। कला अगर कहीं अतीत की सैर कराती है। स्थापत्य अगर कहीं अचरज में डाल कर छोड़ देता है और आस्था कहीं समर्पण से जुड़ जाती है, तो वो नगर ओरछा कहलाता है। बेतवा नदी के किनारे बसे इस नगर की स्थापना १६वीं शताब्दी में बुंदेला राजपूत राजा रुद्र प्रताप सिंह ने की थी। यहाँ के महल, मंदिर और स्मारक आज भी पुरानी भव्यता को सहेज कर रखे हुए हैं। यहां के मंदिरों की घंटियां, महलों की छांव और लोक गाथाओं की गूंज मध्यप्रदेश की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और लोक चेतना का जीवंत प्रतीक हैं। ''बुंदेलखंड की अयोध्या'' ओरछा की मिट्टी को श्रीराम जैसे राजा और बुंदेला जैसे रामभक्त मिले। ओरछा की यही विशेषताएं इसे मध्यप्रदेश का प्रमुख धार्मिक और पर्यटन केंद्र बनाती हैं। पिछले कुछ वर्षों में यहां आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। ओरछा की लोक संस्कृति में त्याग, भाईचारे और असल बुंदेला मूल्यों की सुगंध है। राजा हरदौल को जनमानस आज भी लोकदेवता की तरह पूजता है।

ओरछा का धार्मिक महत्व :-

१. श्री राम राजा सरकार-

- ओरछा का अवध और अवधपति प्रभु श्रीराम से बहुत पुराना जुड़ाव है। ओरछा में भगवान राम, राजा के रूप में पूजे जाते हैं।
- जीवनदायिनी बेतवा नदी यहां श्रीराम के पांव पखारती है। राजा के रूप में विद्यमान राम राजा सरकार की ४ बार आरती होती है तथा ''गॉड ऑफ ऑनर'' दिया जाता है।
- ओरछा के विषय में कहा जाता है- ''राम के दो निवास खास, दिवस ओरछा रहत, शयन अयोध्या वास।'' हमारे आराध्य, हमारे राम को दो स्थान अति प्रिय हैं- एक अयोध्या और दूसरा ओरछा।
- राम नवमी और अन्य पर्वों पर हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं।

२. राजा महल-

- राजा महल बुंदेला राजाओं की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कलात्मक संवेदनाओं का प्रतीक है।
- इसकी भीतरी दीवारों पर बनी जीवंत भित्ति चित्रकारी शाही जीवन, देवी-देवताओं और धार्मिक कथाओं को रंगों के माध्यम से जीवंत कर देती हैं
- महल का स्थापत्य भव्य और बारीक है।

३. लक्ष्मी नारायण मंदिर

- यह मंदिर अपनी जटिल नक्काशी, दीवारों पर चित्रित युद्ध और धार्मिक दृश्यों के साथ-साथ अनोखी स्थापत्य शैली के लिए प्रसिद्ध है।
- मंदिर में धार्मिक आस्था और बुंदेली कला का अद्भुत संगम देखने को मिलता है, जो इसे केवल पूजास्थल नहीं, बल्कि कला का संग्रहालय भी बनाता है।

४. जहाँगीर महल-

- जहांगीर महल ओरछा की स्थापत्य भव्यता और मुगल-राजपूत शैली का अद्‌भुत उदाहरण है। इसकी फिरोजी टाइल्स, नक्काशीदार मेहराबें और बालकनियां स्थापत्य की अनमोल धरोहर हैं।
- महल की ऊँचाई से ओरछा का मनोरम दृश्य देखते ही बनता है।

५. बुंदेला छतरियां-

- बेतवा नदी के किनारे स्थित बुंदेला राजाओं और उनके परिजनों की स्मृति में निर्मित छतरियां ओरछा की ऐतिहासिक विरासत की साक्षी हैं।
- इन छतरियों की नक्काशी, गुम्बदाकार आकृतियाँ और शांत वातावरण दर्शकों को एक आध्यात्मिक अनुभूति से भर देता है।

६. ओरछा पक्षी अभ्यारण्य -प्रकृति प्रेमियों के लिए ओरछा का पक्षी अभ्यारण्य किसी स्वर्ग से कम नहीं है। बेतवा नदी के किनारे स्थित यह अभ्यारण्य प्रवासी और स्थानीय पक्षियों की अनेक प्रजातियों को आश्रय देता है। खासकर सर्दियों के मौसम में यह स्थल बर्ड वॉचिंग के लिए आदर्श बन जाता है।

धार्मिक पर्यटन केंद्र बनने की ओर अग्रसर ओरछा-

७. ओरछा, अब वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में नई पहचान बनाने की ओर अग्रसर है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर ओरछा को प्रतिष्ठित पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा ओरछा में पर्यटन अधोसंरचनाओं और सुविधाओं के विकास के लिए स्वदेश दर्शन योजना २.० के तहत टूरिस्ट एक्सपीरियंस सेंटर, हुनरशाला, एंट्री प्लाजा के साथ यात्रा पथ का विकास किया जाएगा।

८. वर्ष २०२७-२८ में ओरछा को यूनेस्को विश्व धरोहर के रूप में मान्यता दिए जाने के लिए केंद्र सरकार ने यूनेस्को को सिफारिश की है। साथ ही ओरछा को यूनेस्को की एच.यू.एल. (हिस्टोरिकल अर्बन लैंडस्केप) पहल के तहत चुना गया है।

९. प्रदेश में सांस्कृतिक, धार्मिक पुनर्जागरण और पर्यटन के विकास के उद्देश्य से १८ लोकों के विकास के लिए कार्य किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत ओरछा में भी श्रीराम राजा लोक का निर्माण किया जा रहा है।

१०. जन आस्था और धार्मिक महत्व रखने वाले क्षेत्र को पवित्र बनाए रखने के उद्देश्य से प्रदेश के धार्मिक नगरों में पूर्ण शराबबंदी लागू की है। जिसमें ओरछा भी शामिल है।

११. अमृत भारत स्टेशन योजना (एबीएसएस) के तहत ६ करोड़ रुपए से अधिक की लागत से ओरछा स्टेशन का लोकार्पण किया गया है।

१२. ६ धार्मिक नगरों मैहर, चित्रकूट, ओंकारेश्वर, महेश्वर, ओरछा और अमरकंटक में भी बड़ी संख्या में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये दीनदयाल रसोई योजना का विस्तार किया है। जहाँ ५ रुपए में श्रद्धालुओं को भोजन मिलेगा।

विकास मिश्र, १९९१ बैच
भारतीय प्रशासनिक सेवा, म.प्र.

कालपी : बुन्देलखण्ड का प्रवेश द्वार

कालपी, जिसे प्राचीन काल में 'कालप्रिया' नाम से जाना जाता था, उत्तर प्रदेश के जालौन जिले की एक प्रमुख ऐतिहासिक नगरी है। यह यमुना नदी के दक्षिणी तट पर बसी है और कानपुर से लगभग ७८ किमी दक्षिण-पश्चिम और झाँसी की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग-२७ व रेल मार्ग से जुड़ी हुई है। इसकी औसत ऊँचाई ११२ मीटर है।

प्राचीन इतिहास :- पाषाण (पेलियोलिथिक) काल में लगभग ४५,००० वर्ष पूर्व के मानव उपकरण यहाँ पाए गए हैं, जिसमें पत्थर व हड्डी के औजार शामिल हैं। चौथी सदी में कन्नौज के राजा वसुदेव द्वारा इसका पुनःनिर्माण किया गया, जिसे 'कालप्रिया नगरी' कहा गया और क्रमशः कालपी नाम प्रचलित हुआ।

पौराणिक महत्व :- माना जाता है कि महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास यहीं जन्मे थे। आज भी यमुना तट पर उनके नाम पर मंदिर और गुफा विद्यमान हैं। एक किशोर रूप मंदिर भी है जहाँ उनकी बाल्यावस्था की यादें संरक्षित हैं।

मध्यकालीन इतिहास :- ११९६ में कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे जीता। लोदी वंशकाल में यहाँ तांबा मुद्रा का मिंट था। अकबर के समय यहाँ सरकार का मुख्यालय था। बीरबल का जन्म पास ही हुआ था।

मुगल से मराठा और ब्रिटिश काल :- मध्य १८वीं सदी में मराठों ने कब्जा किया, और १८०३ में ब्रिटिशों ने कब्जा कर लिया। १८१८-२४ तक यह बुन्देलखण्ड एजेंसी का मुख्यालय रहा। १८५८ के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई और स्पर्धा में ब्रिटिश जनरल ह्यू रोज ने यहाँ विद्रोही सेना को परास्त किया।

प्रमुख धरोहर व पर्यटन स्थल :- चौरासी गुम्बद : लोदी काल का एक खूबसूरत मकबरा, जिसमें ८४ गुंबद हैं। लंका मीनार (टॉवर) : यमुना तट पर स्थित यह ऐतिहासिक स्मारक जाना-माना स्थल है।

कालपी किला : यमुना के किनारे स्थित बलवत्तर किला, जहाँ १८५७ में युद्ध हुए थे।

वेद व्यास मंदिर एवं गुफा :- महाभारत रचयिता को समर्पित एक आध्यात्मिक स्थल है।

सूर्य मंदिर (सूर्य कुंड) :- कलप्रिया नाथ सूर्यदेव का यह प्राचीन मंदिर नागर शैली में बना है।

भौगोलिक व आर्थिक दृष्टिकोण:- हल्का व शुष्क जलवायु वाला यह क्षेत्र ८९२ मिमी वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है और यहाँ का औसत तापमान लगभग २५.९ °C रहता है। आर्थिक दृष्टि से, यह गेहूँ, तिलहन, कपास और घी का प्रसंस्करण केंद्र है। साथ ही हस्तनिर्मित कागज (हैंडमेड पेपर) की कारीगरी स्थानीय उद्योग का आधार है।

परिवहन सम्पर्क :-

रेल :- उत्तर मध्य रेलवे के कानपुर-झाँसी सेक्शन पर प्रमुख स्टेशन।

सड़क :- राष्ट्रीय राजमार्ग २७ व यूपीएसआरटीसी बस सेवाएँ।

विमान :- निकटतम हवाई अड्डा कानपुर (चकेरी) लगभग १०० किमी दूर है।

निष्कर्ष :- कालपी सिर्फ एक नगर नहीं, बल्कि भारतीय इतिहास और संस्कृति का जीवंत संग्रहालय है। यहाँ से मानव सभ्यता के आरंभिक युग की कहानी जुड़ी है, साथ ही महाभारत के रचयिता की जन्मभूमि, मुगल-ब्रिटिश उतार-चढ़ाव औरस्वतंत्रता संघर्ष की यादें, सबका प्रतिबिंब मिलता है। अपने व्यापारिक आधार-विशेषकर हस्तनिर्मित कागज के कारण यह आज भी जीवन्त है। यदि आप ऐतिहासिक और सांस्कृतिक यात्रा में रुचि रखते हैं, तो कालपी आपके लिए एक अनमोल नगरी है।

- आदर्श पुरवार
१९९१ बैच

शुभकामना संदेश

देवर्षि मिश्र
2005

नितिन कपूर
1992

युग प्रभा एवं युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन, संगठन की सतत यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। इन आयोजनों के माध्यम से समाज में सेवा और मानवता का संदेश और प्रखर होगा। हम इसकी पूर्ण सफलता की मंगलकामना करते हैं।

सर्वोत्तम इलाज को समर्पित
समस्त रोगों का
आधुनिकतम इलाज

FORTUNE
HOSPITAL

हेल्पलाइन नम्बर

7080 300 300
9795 322 222
शारदा नगर कानपुर

आयुष्मान लाभार्थी
व निर्धन मरीजों का

निःशुल्क इलाज
(सरकारी योजनाओं के तहत)

Dr. Manish Verma
(Batch 1991)

शुभकामना संदेश

कौशल किशोर भरतिया
1977

विजय गर्ग
1977

युग प्रभा विशेषांक तथा युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन के सफल आयोजन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। हमें विश्वास है कि यह आयोजन संगठन की भावी दिशा को और सुदृढ़ करेगा तथा समाज में सेवा और संस्कार की प्रेरणा का प्रसार करेगा।

FORTé®
MY TOOLS - MY TRUST
6 MONTHS WARRANTY
Customer Care:0512-2212509
WhatsApp:915122212509
Toll free: 1800 212 4282
Youtube: www.youtube.com/@Forteindia
Website: https://forteindia.co.in

युग भारती के इस अधिवेशन के लिए अनेकों शुभकामनायें ।
Vishnu
Team - Intigus
GABAGRAM-NT
Gabapentin 400/100mg + Nortriptyline 10mg Tablets
Dalex-ER
Divolproex Sodium Extended Release 250/500 mg Tablets
Pregus-D 50 75
Pregabalin 50/75 + Duloxetine 20 mg Capsules
Profal-LA/Forte
Propranolol 20/40+Flunarizine 10/5mg Scored Tablets
MINDAX
A Division of Intigus
BRAINAX
A Division of Intigus
INTIGUS PHARMA
Care With Emotions...

ओरछा के राजा राम

"रामराजा के दो निवास हैं खास, दिवस ओरछा रहत, रात्रि अयोध्या वास।"

जैसे ही यह पंक्ति आप के द्वारा पढ़ी जायेगी, तो आपको यह समझने में देर न लगेगी कि मैं आपको ओरछा के विषय में कुछ बताना चाहता हूँ या यूँ कहूँ कि अपने लेख के माध्यम से आस्था व विश्वास की यात्रा करवाने की कोशिश करना चाहता हूँ।

ओरछा एक ऐतिहासिक व धार्मिक नगरी है और बुन्देलखण्डवासियों के राजा राम की नगरी है। यह नगरी जीवनदायनी व पावन बेतवा नदी के किनारे बसी है। इतिहासकार बताते हैं, इस नगरी की स्थापना १६वीं शताब्दी में बुन्देला शासक रूद्र प्रताप सिंह जी के द्वारा की गई है। ओरछा के प्रसिद्ध राम मन्दिर की स्थापना राजा मधुकर शाह जी द्वारा करवाई गई थी। इस राम मन्दिर के विषय में एक बड़ी रोचक कथा है। कहते हैं कि राजा मधुकर शाह जी श्री कृष्ण भक्त थे और उनकी रानी गनेश कुँवर जी श्री राम भक्त थीं। एक बार राजा व रानी मे प्रभु भक्ति को लेकर बहस हो गई। तब राजा ने रानी से कहा कि वह यदि सच में राम भक्त हैं तो भगवान राम को अपने साथ ओरछा लाये। यह बात सुनकर रानी अयोध्या चली गयीं और भगवान से उनके साथ ओरछा चलने की करूण याचना करने लगीं। किन्तु जब भगवान नहीं आये तो अत्यन्त दुःखी होकर रानी ने सरयू नदी में छलांग लगा दी और उसी समय रानी को आभास हुआ कि उनकी गोद में भगवान राम व माता जानकी जी आ गई हैं। उसी रात को रानी को स्वप्न में प्रभु आये और उन्होंने कहा कि मैं आपके साथ चलूँगा किन्तु मेरी तीन शर्तें हैं।

१. आप मुझे लेकर केवल पुष्य नक्षत्र में ही यात्रा करेंगीं।

२. जिस स्थान पर मेरी स्थापना होगी, मैं वहाँ से विस्थापित नहीं होऊँगा।

३. जिस दिन से भगवान ओरछा में विराजेंगे, वही ओरछा के राजा कहलायेंगे।

इसलिए ओरछा राजा राम की नगरी के नाम से जानी जाती है।

आज भी ओरछा में यह मान्यता है कि जो भी व्यक्ति पुष्य नक्षत्र में ओरछा जाकर राम राजा से विनती स्वरूप कुछ माँगता है, राम राजा सरकार उस याचक की मनोकामना पूर्ण करते हैं, क्योंकि वे राजा हैं और याचक उनकी प्रजा। इसके अतिरिक्त एक कहानी यह भी प्रचलित है कि जब रानी वृद्ध हो गई और राम राजा की सेवा खड़े होकर करने में उन्हें कष्ट होने लगा तो राम राजा ने रानी को स्वप्न में दर्शन दिये और कहा कि आप अब हमारी सेवा पूजा बैठकर किया करें। आपके कष्ट को देखकर हमें भी कष्ट होता है तो रानी ने उनसे विनती की आप खड़े रहे और मैं बैठ जाऊँ, यह मेरे लिए सम्भव नहीं होगा। तब भगवान राम राजा ने कहा ठीक हैं, मैं आपके लिए बैठ जाता हूँ। तब तो आप बैठकर मेरी सेवा करेंगीं। तो रानी ने कहा प्रभु आप मेरे लिए बैठ गये, यह बात मैं सबको कैसे समझाऊँगी? क्या कोई मानेगा? तब भगवान ने कहा आप दरबार लगवाये, मैं सबके सामने बैठ जाऊँगा और हुआ भी वैसा ही। भगवान सबके सामने एक पैर को मोड़कर बैठ गये। आज भी भगवान उसी अवस्था में विराजमान हैं। ये केवल कुछ अविश्वसनीय लोक प्रचलित कथाएँ हैं, जो मैंने आपको बतायी। ऐसी न जाने कितनी घटनायें हैं, हमारे राजा राम जी की। यह जानने के लिए तो आपको इस पावन नगरी में आना ही पड़ेगा और यहाँ से रामराजा सरकार के आशीर्वाद के रूप में अपने जीवन का एक अविश्वसनीय, अद्भुत संस्मरण ले जाना पड़ेगा।

– राघवेन्द्र सिंह
१९७६ बैच

विद्यालय : चरित्र निर्माण की कार्यशाला

''विद्यालय केवल एक इमारत नहीं होती, वह एक भावनात्मक, बौद्धिक और आध्यात्मिक कार्यशाला होती है। जहाँ एक बालक को मानव बनाया जाता है।'' मेरे जीवन की दिशा और दशा, दोनों की नींव मेरे विद्यालय ने रखी। आज जब मैं स्वयं को मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से संतुलित पाता हूँ तो यह मात्र मेरी मेहनत नहीं, बल्कि उस परिवेश, उन संस्कारों और उन शिक्षकों की देन है जिन्होंने मुझे गढ़ा।

मेरे जीवन में आत्म-निर्माण का महत्वपूर्ण सोपान दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आया। गर्मियों की छुट्टियाँ खत्म हुई थीं। मेरा प्रवेश कानपुर के पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में हुआ था। सत्र का प्रथम दिन था। माँ ने टिफिन बाँधते हुए कहा- ''स्कूल में मन लगाना।'' मेरे मन में उस दिन कुछ और ही हलचल थी। एक जिज्ञासा, एक कौतूहल। कुछ ऐसा जो शब्दों में नहीं कहा जा सकता था। मैं विद्यालय पहुँचा। प्रार्थना के लिये हम सभी विशाल कक्ष में एकत्र हुए और धीरे-धीरे यह महसूस होने लगा कि यह केवल एक ''प्रार्थना सभा'' नहीं है, बल्कि ऊर्जा का एक विशाल केंद्र है। विभिन्न देवताओं की प्रार्थनाएँ- शिव की शांति, विष्णु की मर्यादा, हनुमान जी महाराज की शक्ति, माँ सरस्वती की विद्या, मेरे अवचेतन मन में उतरने लगीं। धीरे-धीरे दिन बीतने लगे और यह आभास होने लगा कि प्रार्थनाएँ हमें केवल धार्मिक नहीं बनाती हैं, वरन वे हमें ऊर्जावान, केंद्रित और जागरूक बनाती हैं। जीवन की हर कठिनाई में आज भी वो शब्द मन में गूँजते हैं और राह दिखाते हैं। विशाल कक्ष के वातावरण में बहती वेदों की ऋचाएँ, हनुमान चालीसा के स्वर, सरस्वती वंदना के मधुर उच्चारण मानो हम सभी को किसी और ही लोक में पहुँचा देते थे। आँखें बंद करते ही बाहर की दुनिया से नाता टूट जाता और भीतर कुछ शांत, कुछ गूढ़ घटित होने लगता।

इन प्रार्थनाओं के पश्चात आचार्य श्री ओमशंकर जी का बेहद सधा हुआ प्रभावी संबोधन होता था। उन्होंने कभी हमें मात्र अच्छे अंक लाने के लिए प्रेरित नहीं किया। वे हमेशा कहते थे कि ''अच्छे विद्यार्थी तो बहुत मिलते हैं, परन्तु अच्छे मनुष्य दुर्लभ होते हैं।'' उनका प्रत्येक शब्द हमारे चरित्र को आकार देने वाला होता था। आचार्य जी की बातें हमारे मन के किसी गहरे हिस्से को छू जाती थीं।

ऐसा लगता था मानो किसी ने भीतर कोई दीप जला दिया हो। विद्यालय में मुझे केवल विषयों का ज्ञान नहीं मिला। वहाँ मुझे जीवन जीने की कला, धर्म के मर्म और समाज के प्रति मेरी भूमिका का बोध मिला। वहाँ के प्रत्येक आचार्य ने मेरी दृष्टि को गहराई दी, मेरे चिंतन को दिशा दी और मेरे हृदय में संवेदना बोई। यह शिक्षा मात्र पुस्तकों तक सीमित नहीं थी, बल्कि दिनचर्या में ही ऐसे तत्व निहित थे जो आत्मा को छू जाते थे।

मेरी स्मृतियों में आज भी जीवंत है, वह मध्यावकाश का समय। जब हम सभी एक ही पंक्ति में चटाई पर बैठते। बिना किसी वर्ग, जाति, उम्र या पारिवारिक पृष्ठभूमि का भेद किए हुए दोपहर का भोजन करते। सभी मिलकर भोजन मंत्र का उच्चारण करते। भोजन मंत्र के उच्चारण में जो सामूहिक ऊर्जा होती थी, उसने मुझे पहली बार यह सिखाया कि ईश्वर कहीं बाहर नहीं, हमारे भीतर ही होता है। यह केवल ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना नहीं, बल्कि उस क्षण की पवित्रता को स्वीकार करने का माध्यम था। यह ''वसुधैव कुटुंबकम्'' के जीवंत अभ्यास का समय था। सबसे सुंदर बात यह थी कि भोजन करने के लिये स्वयं भोजन लाने की अनिवार्यता नहीं थी। यदि कोई छात्र भोजन नहीं ला पाया तो उसका पड़ोसी बिना झिझक प्रेमपूर्वक अपना भोजन बाँटता था। यह सीख, यह संस्कार हमें जीवन भर के लिए करुणा, सहानुभूति और सामूहिक चेतना सिखाते थे। यही वे क्षण थे जहाँ हमने न

केवल खाना साझा किया, बल्कि हृदय भी। उस पल में जो शिक्षा मिली वह किसी पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं थी, वह एक संस्कार था। जो कहीं गहरे हम सभी मे बैठ गया।

आज जब मैं कोई व्यावसायिक निर्णय लेता हूँ या सामाजिक कार्यों में भाग लेता हूँ तो बार-बार उन मूल्यों की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। जब भी कोई कठिन निर्णय लेना होता है, कोई नैतिक द्वंद्व सामने आता है तो लगता है जैसे प्रार्थना सभा की वही घंटी कहीं भीतर बज रही है और राह दिखा रही है। मेरा धैर्य, मेरी सहिष्णुता, मेरी सहयोग भावना, यह सब उस वातावरण का प्रतिबिंब है। जहाँ जीवन की छोटी-छोटी क्रियाएँ भी एक महान उद्देश्य लिए होती थीं। आज जब मैं अपने जीवन में ठहरकर देखता हूँ तो वह अनुशासन, वह करुणा, वह संयम सब मेरे उसी विद्यालय से उपजे हुए प्रतीत होते हैं। विद्यालय ने मात्र मुझे सफल ही नहीं बनाया, सार्थक भी बनाया है। उसने केवल जानकारी नहीं दी, दृष्टि भी दी।

उसने मुझसे यह नहीं पूछा कि मैं क्या बनना चाहता हूँ, बल्कि यह सिखाया कि मुझे कैसा बनना चाहिये और शायद यही विद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है कि वह मात्र तुम्हें आकार नहीं देता, बल्कि वह तुम्हें जागृत करता है। हमारे विद्यालय ने हमें केवल सफलता की ओर नहीं, बल्कि सार्थकता की ओर अग्रसर किया। उस शिक्षा ने हमें बताया कि जीवन केवल स्वयं के लिए नहीं होता। यह समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए होता है।

आने वाली पीढ़ी के लिए मेरा संदेश यही है कि ''शिक्षा को केवल डिग्री या रोजगार का माध्यम न बनाएं। उसे आत्मा के विकास, चरित्र के निर्माण और समाज के प्रति कर्तव्य के रूप में देखें। विद्यालय के हर क्षण को केवल दिनचर्या न समझें, वह आपके व्यक्तित्व का आधार है।'' मैं अपने विद्यालय, अपने आचार्यों और उस पवित्र परिवेश को कोटि-कोटि नमन करता हूँ। उन्होंने मुझे वह बनाया, जो मुझे होना चाहिये।

''यदि जीवन एक दीप है, तो विद्यालय उसकी वह लौ है जो हमें दिशा भी देती है और दृष्टि भी।''

- संदीप शुक्ल
१९८३ बैच

व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में चारों का ध्यान रखना होगा। चारों की भूख मिटाये बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव और न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उन्नति आवश्यक है। आजीविका के साधन, शान्ति ज्ञान एवं तादात्मय-भाव से ये भूखें मिटती हैं। सर्वांगीण विकास की कामना ही व्यक्ति को समाजहित में कार्य की प्रेरणा देती है।

(पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन)

मैं और युगभारती

जीवन एक अद्‌भुत यात्रा है। जिसमें कभी-कभी ऐसी चुनौतियाँ आती हैं जो हमें तोड़ने की कोशिश करती हैं, लेकिन फिर कुछ ऐसे लोग मिलते हैं जो आपको इन चुनौतियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करते हैं और जीवन को एक सही दिशा में मोड़ देते हैं। मेरी जिन्दगी में भी ऐसी एक चुनौती आई थी । जब पता चला कि मेरे पति को कैंसर है और वो भी अब चौथी स्टेज पर है। इस समाचार ने मेरे साथ-साथ पूरे परिवार को भीतर से हिला कर रख दिया। उस समय मेरी आँखों में सिर्फ आँसू ही थे और दिल में पीड़ा के साथ एक अनजान भय। मेरी दुनिया जैसे किसी गहरे अंधकार में डूब रही थी और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए ? फिर एक दिन मेरे पास रोहित के सहपाठी डॉ० अरुण मिश्र जी का फोन आता है और मुझे बताया जाता है कि इस विकट घड़ी में मैं अकेली नहीं हूँ। डॉ० अरुण मेरे पति के स्कूलिंग के दिनों से साथी रहे हैं। दोनों साथ-साथ कानपुर के पंडित दीनदयाल विद्यालय में बारहवीं तक साथ पढ़े थे।

फिर एक दिन मुझसे मिलने आये श्री अजय शंकर दीक्षित जी, जिनको अब मैं भइया बोलती हूँ, उनका स्नेहमयी व्यवहार और इतना कहना कि ''आप अकेली नहीं है। आपके साथ हम सभी हैं।'' मेरी आत्मशक्ति में वृद्धि कर गया। मुझे ''युगभारती'' के रूप में एक भावमयी और विलक्षण परिवार मिल चुका था। रोहित और मैं उनकी बीमारी से लड़ रहे थे और इस लड़ाई में हमारे साथ था, युगभारती परिवार। शरद गुप्त जी और प्रदीप उपाध्याय जी जैसे युगभारती सदस्यों के कारण इस जीवन युद्ध में हम कभी अकेले नहीं पड़े लेकिन नियति के आगे किसकी चली है। विधि के विधान के आगे दिल्ली, लखनऊ और कानपुर के बड़े बड़े चिकित्सकों के प्रयास फीके पड़ गए और एक दिन रोहित हम सभी को छोड़कर इस संसार से विदा ले गए। मैं भीतर तक टूट गयी, पारिवारिक दायित्वों के बोझ से बिखर जाने का डर सताने लगा लेकिन मेरा युगभारती परिवार मेरा सम्बल बना रहा। आज आचार्य ओमशंकर जी, वीरेंद्र त्रिपाठी जी, डॉ० मोहनकृष्ण मिश्र जी सहित सम्पूर्ण युगभारती के सहयोग से मेरी जिन्दगी को सही दिशा प्राप्त हुई है।

इन सभी के मार्गदर्शन से मुझे अपने बिखरे जीवन को समेटने में मदद मिली, 'युग भारती'' जैसी प्रतिष्ठित संस्था के साथ कार्य करने का अवसर मिला। यहां मुझे समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर मिल रहा है। विशेषज्ञों के साथ काम करने के सुयोग से मैं न केवल आपने पेशेवर कौशल को विकसित कर पा रही हूँ बल्कि सामाजिक सेवा में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे पा रही हूँ। डॉ० मोहन कृष्ण मिश्र जी का समर्थन मुझे निरन्तर अपने काम में सुधार करने के लिए प्रेरित करता है। जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें उचित मार्गदर्शन और मजबूत इरादों की आवश्यकता होती है। हनुमानजी महाराज की कृपा से उचित समय पर मुझे यह प्राप्त हुआ। अंत में मैं डॉ० पवन मिश्र जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस लेख को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और आवश्यक सहयोग प्रदान किया। ईश्वर से प्रार्थना है कि युगभारती के इस आत्मीय परिवार पर सदा अपनी कृपादृष्टि बनाएं रखें ताकि हम समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष का कार्य करते रहें।

- रेनू पाण्डेय
पत्नी स्व० रोहित पांडेय
बैच १९९२

शुभकामना संदेश

शोभित खरे
2005

अनुराग पुरवार
1988

युग भारती परिवार के इस राष्ट्रीय अधिवेशन तथा युग प्रभा विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक अभिनंदन। यह अवसर न केवल संगठन के लिए गौरव का प्रतीक है, बल्कि समाज में सेवा, संस्कार और सद्भावना की ज्योति प्रज्वलित करने वाला महोत्सव भी है।

रतनदीप हॉस्पिटल

मल्टी सुपर स्पेशलिटी, सर्वोदय नगर, कानपुर

Ph. 7233900037, 7233900038,
0512-2220111, 0512-2500111

www.ratnadeephospital.com

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
PRE ACCREDITED

YOUR HEALTH OUR CONCERN

24 hr EMERGENCY SERVICE

- ECHS, CGHS Ayushman Bharat Empanelled
- Facilities of TPA's

DR. PRADEEP TRIPATHI
M.S. Orthopaedic Surgeon

DR. RATNA TRIPATHI
Managing Director

A Complete Health Care Unit

(With All Advanced Modalities Of Treatment)

स्मृतियों में बसा आँगन

यह लेख मेरे प्रिय पंडित दीनदयाल विद्यालय में बिताए उन सुनहरे वर्षों की भावनात्मक झलक है, जिन्हें आज भी स्मरण कर मेरा हृदय भर आता है। विद्यालय का हर कोना, हर कक्षा, हर गतिविधि आज भी मेरे मन के आँगन में जीवंत है और मुझे रोमांचित करती है। इस लेख के माध्यम से मैंने अपने बचपन, संघर्ष, शिक्षा और उन आत्मीय संबंधों को संजोने का प्रयास किया है, जो समय के साथ और भी मूल्यवान हो गए हैं। मेरा एक निवेदन है कि इस लेख को पढ़ने से पहले विद्यालय परिसर का स्मरण करें, और फिर अपने पुराने दिनों को याद करके, इसका आनंद लें। इस लेख को समर्पित करता हूँ – अपने उस विद्यालय को, जिसने मुझे आकार दिया, उन गुरुओं को जिन्होंने मुझे दिशा दी और उन साथियों को जिन्होंने इस यात्रा को यादगार बना दिया।

पंडित दीन दयाल विद्यालय का वह आँगन मेरे जीवन की सबसे मधुर स्मृतियों में से एक है। जब मैंने पहली बार वहाँ कदम रखा, तो न मेरे पास कोई परिचित चेहरा था, न ही कोई सहारा बस एक नन्ही सी उम्मीद और दिल में ढेर सारा डर। पर उसी आँगन ने मुझे थाम लिया, जैसे कोई माँ अपने बच्चे को गोद में भर ले। वहीं से मुझमें आत्मविश्वास की पहली किरण फूटी, वहीं से जीवन को दिशा मिली। प्रवेश परीक्षा की प्रक्रिया कठिन थी, पर मैंने भीतर कुछ टूटने नहीं दिया। मेरे पसीने की हर एक बूँद, जागी हुई हर एक रात इस सफर का हिस्सा बन गई। जब मैं सफल होकर विद्यालय के भीतर पहुँचा, तो वह हरियाली भरा शांत वातावरण जैसे आत्मा को स्पर्श कर गया।

नई कक्षाओं में कदम रखते ही मन में उत्सुकता का समंदर था, अनजाने लोगों के बीच खुद को तलाशने की शुरुआत थी। पहले साल में चुनौतियाँ भी आईं, अकेलापन भी था। पर वक्त के साथ दोस्त मिले और सबसे बढ़कर ऐसे शिक्षक मिले जिन्होंने न केवल विषय सिखाया, बल्कि जीवन को जीने की कला भी सिखाई। उनकी बातों में अपनापन था, उनके मार्गदर्शन में माँ-बाप जैसी ममता थी। जब हम हताश होते, तो उनका एक विश्वास भरा वाक्य हमें फिर से खड़ा कर देता। उन्होंने हमें सिर्फ अच्छा विद्यार्थी ही नहीं बल्कि एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा दी। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि वे शिक्षक नहीं, मेरे जीवन के निर्माता थे।

अगर मैं अपने शिक्षकों की बात करूँ, तो सबसे पहले जिस नाम की छवि मेरे मन में उभरती है, वह हैं – मनोज आचार्य जी। संस्कृत के गूढ़ श्लोकों और व्याकरण की सूक्ष्मताओं को उन्होंने जिस सहजता और गहराई से सिखाया, वह आज भी मेरी स्मृतियों में गूंजता है। उनके शब्दों में ज्ञान के साथ-साथ एक शांति थी, जो हमें भीतर तक छू जाती थी, वहीं गणेश आचार्य जी हमारे लिए एक अद्‌भुत प्रेरणास्रोत थे। उनके स्नेहिल मार्गदर्शन ने हमें न केवल उत्कृष्टता का अर्थ समझाया, बल्कि उसे पाने का साहस भी दिया। जब गणित की गुत्थियाँ उलझने लगतीं, तब महेश आचार्य जी का धैर्य और विषय की सरल व्याख्या हमारे लिए जैसे एक प्रकाशपुंज बन जाता। उन्होंने हमें यह सिखाया कि सोच को दिशा देने से ही हल निकलते हैं। दीपक आचार्य जी ने प्रमेयों और निर्मेयों जैसे जटिल विषयों को अपनी विलक्षण शैली से इतना सहज बना दिया कि हम न केवल उन्हें समझ पाए, बल्कि आत्मविश्वास से भर उठे। गणित हमारे लिए डर नहीं, आनंद का विषय बन गया। उच्च कक्षाओं में जब संख्याओं की गहराइयाँ और जटिलताएँ बढ़ीं, तब कैलाश आचार्य जी ने हमारी रुचि को न सिर्फ बनाए रखा, बल्कि उसमें लगन और समर्पण की आग भर दी।

मेरे विद्यालय जीवन की स्मृतियों में, कुछ नाम ऐसे हैं जो दिल में हमेशा के लिए बस गए हैं। सतीश आचार्य जी की बात करूँ तो ऐसा लगता है मानो इतिहास हमारे सामने जीवंत हो उठता था। उनका पढ़ाने का ढंग इतना सरल, इतना सहज था कि मुगलों के दरबार, स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानी, और प्राचीन सभ्यताओं के ध्वंसावशेष - सब हमारी कल्पना में सजीव हो उठते। उन्होंने हमें सिखाया कि इतिहास केवल तारीखों का बोझ नहीं, बल्कि हमारी पहचान की जड़ें हैं। जगपाल आचार्य जी ने भूगोल को जिस तरह जीवंत और रोचक बनाया, वह अविस्मरणीय है। उनके साथ मानचित्रों की यात्रा करते हुए हम देश की सीमाओं से निकलकर पूरे विश्व को महसूस करने लगे थे। उनकी कक्षाओं में पहाड़, नदियाँ, रेगिस्तान और महासागर सब जैसे हमारी कहपियों से निकलकर हमारी सोच का हिस्सा बन गए थे।

गया प्रसाद आचार्य जी की अंग्रेजी कक्षा में बैठना हमेशा एक सौभाग्य लगता था। उनके उच्चारण में शुद्धता थी, व्याख्या में गहराई थी, और शैली में एक ऐसा आकर्षण जो हमें भाषा की आत्मा तक ले जाता था। उन्होंने शब्दों के पीछे छिपे भावों को महसूस करना सिखाया, और अंग्रेजी को एक विषय से ज़्यादा, एक संवाद का माध्यम बना दिया। फिर आते हैं वे दो नाम, जिनकी स्नेहिल उपस्थिति आज भी दिल को छू जाती है-बिहारीलाल आचार्य जी और शारदा मैडम। जहाँ बिहारीलाल जी का व्यवहार पिता-सा स्नेहिल था, वहीं शारदा मैडम की मुस्कान जैसे हर चिंता हर लेती थी। वे दोनों हमारे मनोबल के रक्षक थे। जब कोई बात समझ नहीं आती थी, तो वे डाँट नहीं लगाते थे बल्कि समझते थे, सुनते थे, और हमें हमारी गति से बढ़ने का अवसर देते थे।

कुछ विषयों से हम छात्र जीवन में अक्सर डरते हैं, लेकिन जब सही शिक्षक मिल जाएँ तो वही डर धीरे-धीरे ज्ञान की गहराई में बदल जाता है। भौतिकी जैसे कठिन और तर्कप्रधान विषय को सहज और सजीव बनाने का श्रेय हेमन्त आचार्य जी और श्रीप्रकाश ओझा आचार्य जी जैसे पारंगत शिक्षकों को जाता है। उनके व्याख्यान किसी जादू की तरह होते थे, जो जटिल सूत्रों को भी सरल बना देते। उनके शब्दों में तर्क की स्पष्टता थी और उनकी मुस्कुराहट में धैर्य। उन्होंने हमें सिर्फ नियम नहीं सिखाए, बल्कि सोचने का ढंग दिया, हर सवाल के पीछे की कहानी समझाई। रसायन विज्ञान की गहराइयों में उतरने का साहस हमें मिला राजेश आचार्य जी और दिनेश आचार्य जी के कुशल मार्गदर्शन से। उनके पढ़ाने का ढंग ऐसा था कि अणुओं और अंशों की दुनिया हमारी अपनी बन गई। उन्होंने हमें केवल सूत्र नहीं रटवाए, बल्कि उनकी आत्मा को समझने का अवसर दिया। वे विज्ञान को कक्षा की दीवारों से निकालकर जीवन की प्रयोगशाला तक ले गए। जीव विज्ञान में उमेश आचार्य जी और श्रीप्रकाश नारायण आचार्य जी ने तो जैसे हमें प्रकृति से जोड़ दिया। जीवन के हर रूप में छिपी वैज्ञानिकता को उन्होंने हमारे सामने खोल कर रख दिया। उनके साथ हर कक्षा एक यात्रा ोती थी- कोशिका से लेकर जीन तक, पेड़ से लेकर मनुष्य तक। उनकी बातों ने हमारे भीतर जिज्ञासा जगाई, और विज्ञान को महज किताब से निकालकर हमारी सोच में बसा दिया।

और जब बात हिंदी की हो, तो दुर्गेश आचार्य जी और रामतीर्थ आचार्य जी का स्नेहिल, गंभीर और प्रेरणास्पद शिक्षण आज भी मन को छू जाता है। उन्होंने हमें केवल भाषा नहीं सिखाई- उन्होंने हमें शब्दों की गरिमा, अभिव्यक्ति की शक्ति और भावनाओं की गहराई समझाई। उनके पढ़ाए दोहे, कहावतें और कविताएँ आज भी जीवन के हर मोड़ पर रास्ता दिखाती हैं। उच्च कक्षाओं में विद्यालय के प्रधानाचार्य जी से हमें अनुशासन और मर्यादा की शिक्षा मिली। जब वे कक्षा में आते, तो जैसे भाषा स्वयं सजीव होकर बोलने लगती। उनके द्वारा पढ़ाया गया हर पाठ, हर कविता, हर व्याख्या सीधे हृदय को छू जाती थी। उन्होंने हमें न केवल व्याकरण सिखाया, बल्कि

हिंदी की आत्मा से परिचित कराया। साहित्य उनके शब्दों में बसता था और मर्यादा उनके व्यवहार में। उनकी कक्षा केवल एक शैक्षणिक सत्र नहीं होती थी, वह जीवन-दर्शन का अनुभव होती थी। आज भी जब कभी किसी दोहे या कविता की पंक्ति स्मृति में आती है, तो उनके स्वर, उनकी मुद्रा और उनका स्नेहिल चेहरा आँखों के सामने आ जाता है।

कुछ शिक्षक ऐसे होते हैं, जो किताबों से परे जाकर हमारे भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानते हैं और उन्हें दिशा देते हैं। आनंद वर्मा आचार्य जी ऐसे ही एक शिक्षक थे, जिन्होंने कला के क्षेत्र में हमें एक नई दृष्टि दी। उनकी कक्षा में केवल रंगों और रेखाओं की बात नहीं होती थी, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति होती थी। उन्होंने हमें सिखाया कि कल्पना भी एक भाषा होती है और हर चित्र, हर आकृति हमारे भीतर की भावनाओं का आईना हो सकती है। सुभाष आचार्य जी ने खेल के मैदान में हमें अनुशासन, सहयोग और आत्मबल का अर्थ सिखाया। उनके प्रशिक्षण में केवल दौड़ना, खेलना या जीतना नहीं था बल्कि खुद से बेहतर बनने की भावना थी। उन्होंने हमें समझाया कि शारीरिक स्वास्थ्य ही मानसिक दृढ़ता की नींव है और खेल केवल समय बिताने का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का साधन भी है। सीमा मैडम का योगदान हमारे जीवन में उस समय आया जब तकनीक हमारे लिए एक नई दुनिया थी। उन्होंने हमें कंप्यूटर की भाषा सिखाई और तकनीकी दुनिया के दरवाजे खोले। उनकी सिखाई हुई बातें आज भी हमारी डिजिटल समझ की बुनियाद हैं। उन्होंने हमें प्रोग्रामिंग सिखाई, यह विश्वास दिया कि हम तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

इन सभी गुरुजनों से मिले अमूल्य ज्ञान, मार्गदर्शन और स्नेह ने ही हमें इस मुकाम तक पहुँचाया है। उन्होंने हमारे भीतर विचारों की ज्योति जलाई, आत्मविश्वास जगाया और जीवन को सही दिशा दी। लेकिन हमारी शिक्षा केवल पुस्तकों और कक्षा तक सीमित नहीं रही। अब बात करते हैं उस स्थान की, जहाँ हमने अनुशासन, संघर्ष और टीम भावना को वास्तव में जिया-हमारे विद्यालय के खेल मैदान की। जहाँ हर दोपहर क्रिकेट बॉल से फुटबॉल खेलने जैसा 'खास एडवेंचर' होता था। असली फुटबॉल न होने पर, हमारी क्रिकेट बॉल ही 'फुटबॉल' बन जाया करती थी और वो भी पूरे मान-सम्मान के साथ! लंच ब्रेक में जब घंटी बजती, तो मैदान पर ऐसा लगता जैसे किसी टूर्नामेंट का फाइनल चल रहा हो। चार-पाँच टीमें एक साथ, एक ही जमीन पर, एक ही जुनून में डूबी हुई। हर कोई अपनी-अपनी 'बॉल' को बचाते हुए गोल की तरफ बढ़ता और इस सब के बीच अपनी फुटबॉल (क्रिकेट बॉल) को गोल तक पहुंचाना ...उफ्फ ! आज भी उस 'मिशन इम्पॉसिबल' को याद करता हूँ तो चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। ना कोई रेफरी, ना कोई नियम, ना कोई सीमा - बस दोस्ती, मस्ती और थोड़ी सी चोटें। पर मजा ऐसा, जो आज के सबसे महँगे वीडियो गेम में भी नहीं मिलता।

अपने लेख को समाप्त करने से पहले, मैं विद्यालय के प्रधानाचार्य आदरणीय ओमशंकर जी के प्रति कुछ शब्द लिखना चाहता हूँ प्रधानाचार्य जी केवल एक प्रशासक नहीं थे, वे हमारे लिए एक संरक्षक, एक पथ-प्रदर्शक और सच्चे अर्थों में अभिभावक थे। उन्होंने अनुशासन को डाँट-डपट से नहीं, बल्कि संवेदना और विश्वास के साथ हमारे जीवन में स्थापित किया। उनकी सख्ती में ममता की झलक थी, और उनके मौन में भी गूढ़ शिक्षा छिपी होती थी, ऐसा मौन जो कभी-कभी शब्दों से ज्यादा गूंजता था।

वे जब विद्यालय प्रांगण में चलते थे, तो लगता था जैसे सादगी और गरिमा साथ-साथ चल रही हो। उन्होंने हमें केवल नियमों का पालन करना नहीं सिखाया, बल्कि यह समझाया कि अनुशासन कोई बंधन नहीं, बल्कि स्वतन्त्रता को सार्थक बनाने की प्रक्रिया है। उन्होंने मर्यादा को डर से नहीं, बल्कि आत्मसम्मान से जोड़कर प्रस्तुत किया।

उनकी हिंदी पढ़ाने की शैली अपने आप में अद्वितीय थी। जब वे कक्षा में आते, तो शब्द जीवंत हो उठते थे। कविता हो या निबंध,

उनके स्वर में ऐसा माधुर्य होता कि साहित्य एक अनुभव बन जाता। उन्होंने हमें यह महसूस कराया कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण भी कर सकती है। प्रधानाचार्य जी की दृष्टि दूरदर्शी थी, वे हर छात्र में संभावनाएँ देखते थे और उन संभावनाओं को साकार करने के लिए चुपचाप, बिना किसी दिखावे के, अपना सब कुछ लगा देते थे। उन्होंने कभी मंच पर खड़े होकर अपनी प्रशंसा नहीं करवाई, पर हर मंच के पीछे उनकी प्रेरणा होती थी।

आज जब हम जीवन के विभिन्न मोड़ों पर निर्णय लेते हैं, चुनौतियों से जूझते हैं, या आत्ममंथन करते हैं तो उनके आशीर्वचन, उनके दिए हुए मूल्य और उनकी जीवन दृष्टि हमें भीतर से दिशा देती है। उनके स्नेहिल संरक्षण में हमने केवल एक अच्छा विद्यार्थी नहीं, एक अच्छा इंसान बनना सीखा और यही उनकी सबसे बड़ी शिक्षा थी, जो हमारे साथ जीवनभर चलेगी।

उनके प्रति हृदय की गहराइयों से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। सिर झुकाकर, विनम्रता से उनके चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ। उनका आशीर्वाद यूँ ही हम सब पर बना रहे, यही प्रार्थना है।

विद्यालय ने हमें जो शिक्षा, संस्कार और आत्मबल दिया, वह आज भी हमारे जीवन का मार्गदर्शन कर रहा है। जीवन की आपाधापी में जब भी थकान महसूस होती है, तो स्मृतियों की वो शांत शरण हमारा विद्यालय, एक संबल बनकर सामने आ जाता है। वे सुनहरे दिन, वे शिक्षक, वे साथी और वह वातावरण- सब कुछ आज भी हमारी स्मृतियों में वैसे ही जीवंत हैं जैसे कभी हुआ करते थे। एक कक्षा, एक गलियारा, एक पेड़ की छाँव या खेल के मैदान की वो धूल सब में कोई न कोई कहानी छिपी है, जो आज भी मन को भीतर से छू जाती है। इस पावन स्मृति को समर्पित यह लेख मेरे लिए केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि हृदय की भावना है-उस स्थान और उन व्यक्तित्वों के प्रति, जिन्होंने मुझे गढ़ा, सँवारा और जीवन की राह में आत्मविश्वास से आगे बढ़ना सिखाया। इस विद्यालय को, अपने सभी शिक्षकों को और साथियों को सादर नमन। यही प्रार्थना है कि हम सभी जहाँ भी हों, विद्यालय का नाम हमेशा गौरव से ऊँचा करते रहे।

शब्द भले ही समाप्त हो जाएँ, पर यह कृतज्ञता कभी समाप्त नहीं होगी।

- पदम ओमर
बैच २००८
असिस्टेंट प्रोफेसर
सिविल इंजीनियरिंग विभाग
अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

"राष्ट्र के लिए राज्य है, राज्य के लिए राष्ट्र नहीं। इसी प्रकार राजनीति के लिए राष्ट्रीयता के पोषण के लिए राजनीति होनी चाहिए। वह राजनीति जो राष्ट्र को क्षीण करे अवांछनीय रहेगी।"

- पं० दीनदयाल उपाध्याय

शुभकामना संदेश

अजित अग्रवाल
1985

आशीष पांडेय
1995

युग प्रभा और युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन, सेवा एवं समर्पण की भावना का जीवंत स्वरूप है। हम कामना करते हैं कि यह आयोजन संगठन के कार्यों को और गति प्रदान करे तथा समाज के हर वर्ग में प्रेरणा का संचार करे।

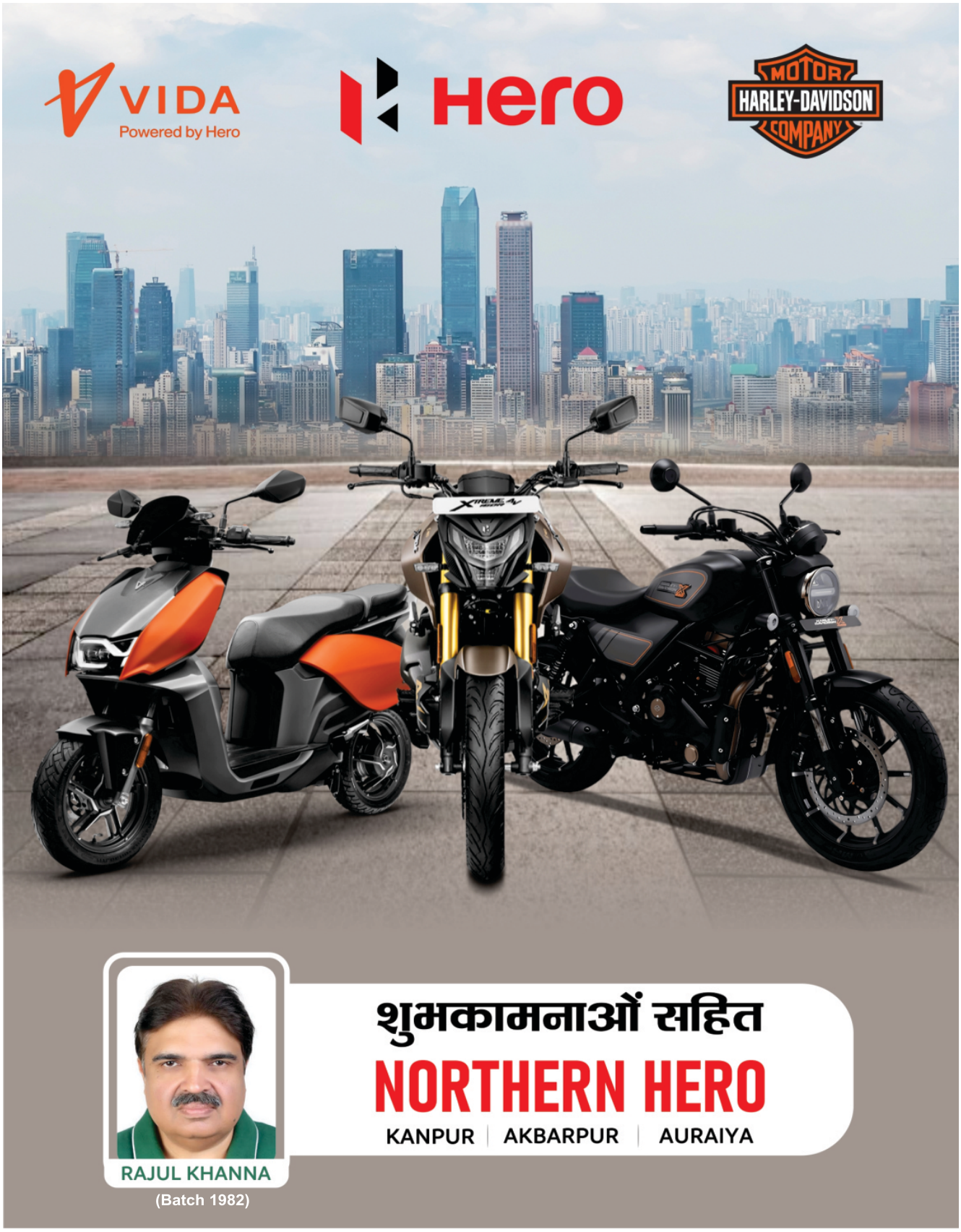
VIDA
Powered by Hero
Hero
MOTOR
HARLEY-DAVIDSON
COMPANY
RAJUL KHANNA
(Batch 1982)
शुभकामनाओं सहित
NORTHERN HERO
KANPUR | AKBARPUR | AURAIYA

PRABHAT ENGINEERING COLLEGE

N.H-2 KALPI ROAD, NEAR BARA TOLL, KANPUR-209311 (UP)

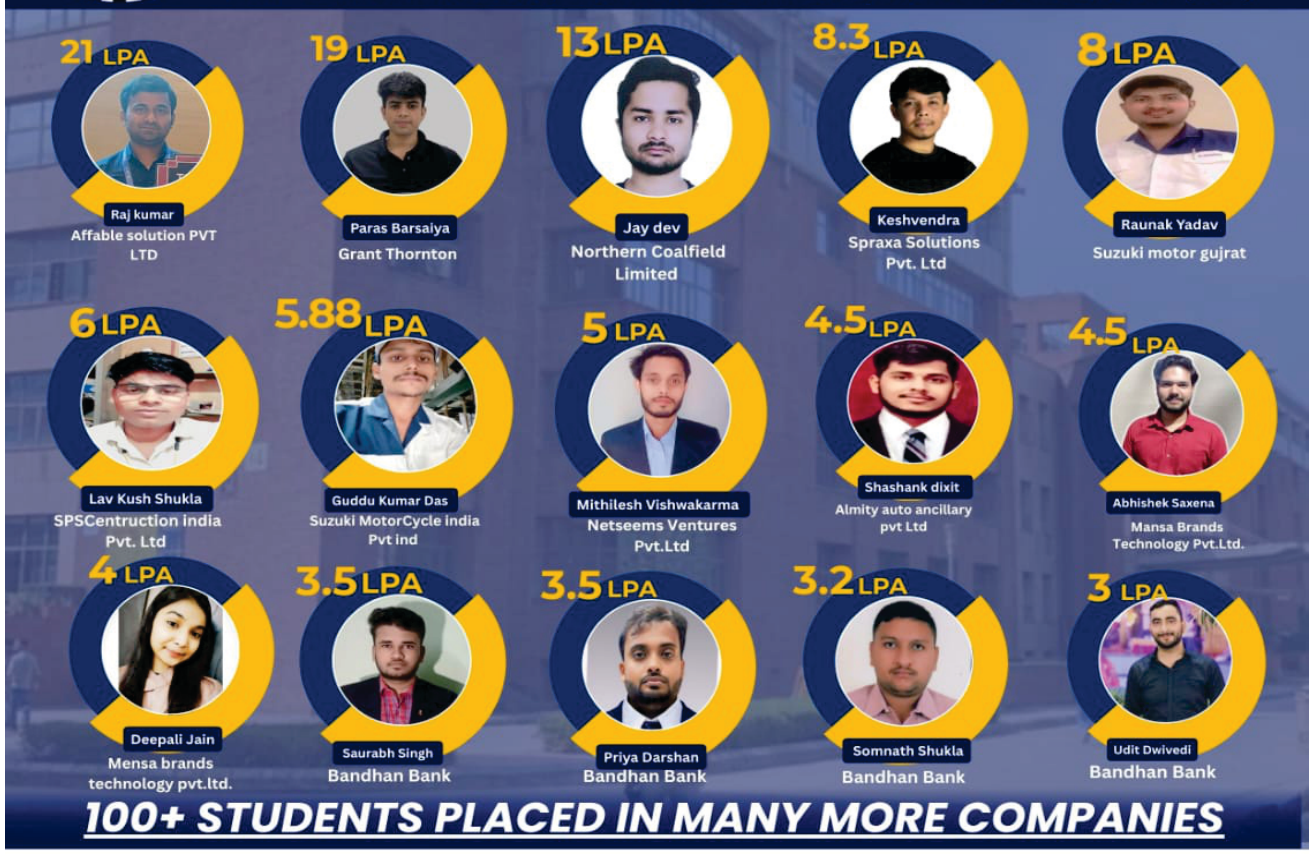

100+ STUDENTS PLACED IN MANY MORE COMPANIES

17 years of excellence

APPROVED & AFFILIATED BY
3346 5309 419

21 LPA HIGHEST PACKAGE

85% PLACEMENT RATE

25+ COMPANIES VISITED

3.2 LPA AVERAGE PACKAGE

OUR TOP COURSES

ADMISSION OPEN 2025-26

- POLYTECHNIC
  ME | ME(P) | CE | EE
- B.TECH
  CSE | ME | EE | CE
- B.PHARM | D.PHARM
- M.B.A

www.prabhateng.co.in

FOR ADMISSION,CALL: 7007343755 / 9044489777/ 9936544911

सर्व स्वर्णकार जागृति परिचय सम्मेलन एवं स्वर्णकार
आईना मासिक पत्रिका विमोचन की सभी को हार्दिक शुभकामानाएं

MANHATTAN SPORTS

All Type of Sports Equipments Such as Cricket Badminton,
Basket Ball, Volley Ball, Hockey

The Waffle Co.

WAFFLESS | THICK SHAKES | PANCAKES | FRIES | COFFEE & MORE.

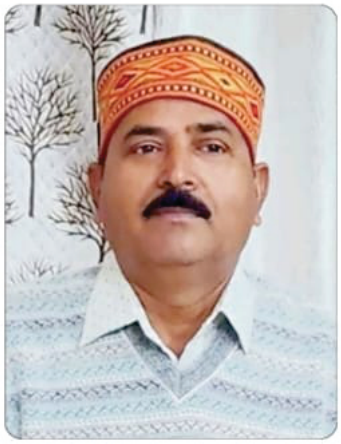

अशोक सोनी
प्रदेश अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू महासभा बुन्देलखण्ड

नितिन सोनी

सचिन सोनी

Kachehri Sadar Road, Kachehri Chauraha, Jhansi (U.P.) · Mob.: 7309540946, 8808408455

अवसाद से मेरी लड़ाई और युगभारती

अवसाद (डिप्रेशन) वर्तमान समय में एक प्रमुख मानसिक समस्या के रूप में सामने उभर कर आया है। विश्व की एक बहुत बड़ी आबादी, विशेष रूप में पश्चिमी देशों में यह समस्या तीव्र गति से बढ़ रही है। भारत जैसे देश में जहाँ अभी परिवार जैसी संस्था पूर्ण रूपेण विखंडित नहीं हुई है, ये समस्या अभी अपने विकराल स्वरुप में नहीं है। परन्तु चिन्तनीय तो है ही। इस लेख में अपने अनुभवों के आधार पर कुछ उपायों की चर्चा करूंगा। जिनको किये जाने से अवसाद को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। मेरा ये लेख कई वर्ष भीषण अवसाद में गुजारने और उससे लड़कर आज स्थिर होने के अपने अनुभवों, अपने उपायों को शब्द रूप देने का प्रयास है।

१) अपने इष्ट देव श्री हनुमान जी के दर्शन, नियमित मंदिर जाने, वहां की आरती में उपस्थित रहना। यदि इसे अभ्यास में लाया जाए तो अवसाद निमंत्रण में आ सकता है।

२) नियमित प्राणायाम से अवसाद को मैनेज किया जा सकता है लेकिन एक निश्चित समय पर नियमित रूप से न्यूनतम दो माह के बाद ही प्रभाव दिखेगा। प्राणायाम से मस्तिष्क में ऑक्सीजन बेहतर पहुँचती है, जिससे तनाव से राहत मिलती है।

३) कम भोजन, सात्विक आहार, फलाहार, विशेष रूप से नींबू संतरा आदि का सेवन करना ये सब भी अवसाद से लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केले में पाए जाने वाला मैग्नीशियम अवसाद से लड़ने में सहायता करता है।

४) मेरा अनुभव है कि नियमित सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म बेला में जागने से और व्यायाम करने से भी अवसाद और तनाव उत्पन्न करने वाले हार्मोन्स में कमी आती है और हैप्पी हार्मोन्स का स्राव बढ़ता है।

५) यदि आप अकेले रहते हैं और अवसादग्रस्त है तो यह आपके लिए और भी घातक हो सकता है। अपने मित्रों से, परिचितों से, रिश्तेदारों से लगातार संपर्क बना कर रखिए। अवसाद वास्तव में एक गम्भीर बीमारी है।

६) अपनी अभिरुचियों या किसी अन्य रचनात्मक क्रियाकलापों में भाग लेकर भी अवसाद पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

७) अपने रुचि के खेल, जैसे नियमित बैडमिंटन आदि खेलकर भी अवसाद को कम किया जा सकता है।

८) अपने मन के भावों को नियमित डायरी में लिखकर भी मैंने अपने अवसाद से युद्ध लड़ा है।

९) अवसाद की समस्या गंभीर रूप न ले पाए इसके लिये क्लीनिकल साइकोलोजिस्ट की सहायता लेना बहुत आवश्यक है। कई बार विटामिन डी की कमी से भी इसके होने की संभावना होती है, अतः समय समय पर विटामिन डी से सम्बंधित जांचें भी करा लेनी चाहिये।

मैने व्यक्तिगत रूप से अवसाद की अति गंभीर अवस्था को झेला है। जिससे बाहर निकलने में मेरे उपरिलिखित उपायों और प्रयासों के साथ युगभारती ने भी मेरी बहुत सहायता की है। विशेष रूप से आचार्य श्री ओमशंकर जी, अग्रज मोहनकृष्ण मिश्र जी, वीरेंद्र त्रिपाठी जी, नीरज कुमार जी, मनीष जी, अजय शंकर दीक्षित जी, डॉ० यतीन्द्र सिंह जी, निर्भय जी, सहपाठी पीयूष त्रिवेदी जी एवं अनुज अनन्त अवस्थी जी ने मुझे बहुत सम्बल दिया। मैं विशेष रूप से कानपुर के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक, बड़े भाई और युगभारती सदस्य आदरणीय डॉ. गणेश शंकर जी की चर्चा अवश्य करना चाहूंगा जिन्होंने अवसाद से मेरी लड़ाई में मुझे कभी अकेले नहीं पड़ने दिया और मेरी हर सम्भव सहायता की। आशा है कि अवसाद से जूझ रहे लोगों के लिये मेरा यह लेख उपयोगी सिद्ध होगा।

– अक्षय अवस्थी
बैच २००८

शेरू

शेरू का जीवन :- शेरू, कभी हमारा पालतू कुत्ता नहीं रहा। फिर भी वह हमारे परिवार का हिस्सा था। मेरी पत्नी और बच्चों ने उसे प्यार से यह नाम दिया था और धीरे-धीरे वह हमारे घर का ''अनकहा सदस्य'' बन गया। शेरू बहुत अनोखा था। वह अक्सर भूख लगने पर या ठंडी-बरसाती रातों में हमारे घर आ जाया करता। हम उसे दूध-रोटी या कोई नाश्ता दे देते, परन्तु उसकी एक आदत थी। वह कभी ज्यादा देर रुकता नहीं था। पेट भरते ही या बारिश थमते ही वह खुद गेट खोलकर बाहर निकल जाता।

एक दुःखद सुबह :- सुबह का समय था। मैं रोज की तरह बगीचे में पानी डालने और पौधों की देखभाल करने निकला। हवा में ओस की नमी थी और वातावरण ताजगी से भरा हुआ। सब कुछ सामान्य ही लग रहा था। लेकिन कभी-कभी साधारण सी सुबह भी जीवन का रुख बदल देती है। उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। जैसे ही मैंने नजर उठाई, गली के बीचो-बीच एक परिचित साया दिखाई दिया, वह शेरू था। कई वर्षों से वह हमारे जीवन का हिस्सा रहा था। पहली नजर में लगा कि वह सो रहा है। मैंने धीरे से आवाज दी "शेरू", परंतु उसकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। उसकी स्थिरता मुझे विचलित कर रही थी। मैंने खुद को समझाया कि शायद वह आराम कर रहा है और वापस पौधों की ओर ध्यान देने लगा। तभी मेरी पड़ोसन आईं। उनके हाथ में एक कपड़ा था। उन्होंने आकर धीरे से शेरू को ढक दिया। मैं घबरा गया और पूछा, ''क्या हुआ?'' उनकी आंखें नम थीं। उन्होंने कहा ''शेरू अब हमारे बीच नहीं रहा।'' ये शब्द सुनकर मेरे भीतर सन्नाटा छा गया। गली सूनी लगने लगी। सुबह की रोशनी फीकी पड़ गई।

पिछले पंद्रह दिनों से मैं देख रहा था कि शेरू दूध और रोटी खाना बंद कर चुका था। मेरा बेटा बार-बार कहता रहा कि हमें उसे डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए, परन्तु हम टालते रहे। शायद हमने सोचा कि वह हमेशा की तरह खुद ही ठीक हो जाएगा। पर नियति ने कुछ और ही लिखा था। शेरू सिर्फ एक आवारा कुत्ता नहीं था। बाहरी लोगों को शेरू महज एक गली का कुत्ता लगता होगा। एक आवारा कुत्ता जो इधर-उधर घूमता है लेकिन हमारे लिए वह परिवार था। जब भी मैं घर लौटता, वह मुझे देख दौड़कर आता। उसकी आँखों में ऐसी चमक होती, जैसे कोई अपना लंबे समय बाद मिला हो। उसकी पूँछ हिलती और मेरी सारी थकान पल भर में गायब हो जाती। वह बिना कुछ कहे इतना प्यार और अपनापन जताता था कि कभी-कभी लगता इंसान और जानवर के बीच की दीवार कितनी झूठी है। शेरू में वफादारी के साथ-साथ एक अलग तरह की समझदारी भी थी। जैसे किसी बूढ़े साधु की आत्मा उसमें बसती हो।

महाभारत की याद :- उस सुबह जब मैं शेरू के निर्जीव शरीर को देख रहा था। मुझे महाभारत की वह कथा याद आई जिसमें युधिष्ठिर अपने जीवन की अंतिम यात्रा पर थे। उनके साथ एक कुत्ता लगातार चल रहा था। जब स्वर्ग के द्वार पर पहुंचे, देवता ने युधिष्ठिर से कहा कि वे बिना कुत्ते के ही अंदर जा सकते हैं। परन्तु युधिष्ठिर ने स्पष्ट कहा- ''मैं अपने साथी को नहीं छोड़ सकता।'' उनकी करुणा देखकर कुत्ते ने अपने वास्तविक रूप, धर्मराज को धारण कर लिया। यह कथा बताती है कि इंसान और कुत्ते का रिश्ता कितना गहरा और आध्यात्मिक है। उस दिन शेरू को देखकर मुझे लगा कि शायद भगवान ने एक बार फिर कुत्ते का रूप धरकर हमें हमारी करुणा और संवेदनशीलता को परखने का अवसर दिया है।

मनुष्य और कुत्ते का बंधन :- इतिहास गवाह है कि इंसान और कुत्ता सदियों से साथ रहते आए हैं। गुफाओं से लेकर राजमहलों तक कुत्ता हर जगह इंसान का साथी रहा है। विज्ञान इसे पालतू बनाने की प्रक्रिया कहता है, परन्तु मैं मानता हूँ कि यह संबंध आत्मा के स्तर

पर लिखा गया है। शेरू इसी बंधन का जीता-जागता उदाहरण था। उसे हमसे ज्यादा अपेक्षा नहीं थी। वह सिर्फ भोजन और थोड़ी गर्माहट चाहता था। बदले में उसने हमें निःस्वार्थ प्रेम, वफादारी और अपनापन दिया।

अंतिम सीख :- उस सुबह, शेरू को जाते हुए देखकर मुझे गहरा दुख हुआ। लेकिन साथ ही आत्मसंतोष भी था कि हमें उसके साथ इतना समय बिताने का सौभाग्य मिला। उसने हमें सिखाया कि प्यार जताने के लिए शब्द नहीं चाहिए। साथ होना ही काफी है। उसकी मृत्यु ने हमें यह भी सिखाया कि देखभाल और प्यार को कभी टालना नहीं चाहिए। हमने सोचा कि समय है, डॉक्टर को बाद में दिखा देंगे। लेकिन समय चुपचाप हमारे हाथों से सूखी रेत सा निकल गया। मैंने प्रार्थना की कि अगले जन्म में शेरू को एक ऊँचा जीवन मिले। हिंदू दर्शन कहता है कि आत्मा जन्म और पुनर्जन्म के चक्र से गुजरती है। शेरू का जीवन कुत्ते का था, लेकिन उसका स्वभाव, उसकी करुणा और उसकी समझ कई इंसानों से भी ऊँची थी। शायद अगले जन्म में वह मनुष्य का रूप ले। कौन जाने, किसी और गली, किसी और सुबह, हमारा सामना फिर उससे हो।

दर्शन :- शेरू हमें यह सिखाकर गया कि असली रिश्ता स्वामित्व से नहीं, उपस्थिति से बनता है। अगर दिल में करुणा हो तो एक आवारा कुत्ता भी परिवार का अंग बन सकता है। उसने जन्म कुत्ते के रूप में लिया, परन्तु विदा होते समय हमें वह साधु जैसा लगा। जो बिना कुछ कहे गहरी सीख दे जाता है। शेरू आया तो एक आवारा जानवर बनकर, परन्तु गया एक शिक्षक बनकर। उसकी चुप्पी में भी एक आवाज थी- ''जीवन यात्रा है, मृत्यु केवल अगला पड़ाव।''

- प्रो० शुभेन्द्र सिंह परिहार
बैच १९८९
जयपुरिया इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ

''प्रत्येक देशभक्त व्यक्ति की ऐसी इच्छा होना स्वभाविक ही है कि अपना देश वैभवशाली बने। राष्ट्र सुखी, सम्पन्न हो ।राष्ट्रीय उत्पादन बढ़े ।बेकारी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशांति का अन्त हो ।न्याय सुलभ हो ।आपसी झगड़े समाप्त हों ।साम्प्रदायिक, क्षेत्रीय, भाषायी संकुचितताओं से ऊपर उठकर लोगों के सोचने, विचारने का तरीका हो ।दलीय अभिनिवेशों से नेतागण मुक्त हों। भारत अपने राष्ट्रीय स्वरूपों में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक सभी प्रकार के क्षेत्रों में लोक-कल्याणी सिद्ध हो ।जिसमें ऐसी इच्छा निर्माण नहीं होती हो उसे भारतीय तो क्या मानव कहना भी कठिन है ।''

– पं० दीनदयाल उपाध्याय

कहानी - मजबूरी

बढ़पुरा गांव का समिति भवन आज जगमगा रहा है। आज जनरेटर से होने वाला शोर भी माहौल में उमंग भर रहा है। गांव के बाहर बने समिति भवन से राम किशोर के घर तक जगह-जगह सफेद, लाल और हरी ट्यूबलाइट अपना रंग बिखेर रहीं हैं। आज बच्चों को भी देर रात तक ऊधम मचाने की छूट मिली है। उधर रानीगंज गांव के प्रधान ने दिनेश के ब्याह के लिए अपनी गाड़ी सजाने के लिए दी है। शाम होते ही दिनेश की बारात रानीगंज से बढ़पुरा के लिए रवाना हुई। शाम के सात बजे फूलों से सजी नीले रंग की पर्दे वाली कमांडर जीप मुख्य मार्ग से बढ़पुरा की तरफ मुड़ती है और मार्ग में चूने से बने निशान के आधार पर सीधा समिति भवन में रूकती है। दिनेश की बारात में आए सभी बारातियों के ठहरने की व्यवस्था आज समिति भवन में ही की गई है। बारातियों के सम्मान और सत्कार के साथ बहुत धूमधाम से दिनेश और सुशीला का विवाह संपन्न हुआ। अगले दिन सुशीला को विदा करके दिनेश सभी बारातियों के साथ अपने गांव रानीगंज लौटा। रानीगंज में सभी का बहुत ही धूमधाम से स्वागत हुआ। विशेष रूप से नई बहू सुशीला का। अगले दिन शाम होते-होते कुछ ही करीबी रिश्तेदार घर में बचे, वे भी शायद अगले एक से दो दिन में अपने-अपने घर चले जाएंगे। मगर रात के भोजन में रिश्तेदारों ने मजाक में ही सही, दिनेश को उसकी बढ़ती हुई जिम्मेदारी का एहसास करा दिया। उधर घर के बाहर नीम के पेड़ के नीचे बंधी गाय (श्यामा) दिनेश की राह निहारती हुई मानो यह कह रही हो कि आज वह भी दिनेश द्वारा तैयार किया गया चारा ही खायेगी। दिनेश अब अपनी खेती किसानी के काम पर लौट आया और उसी से अपने परिवार की जिम्मेदारी का निर्वहन करने लगा।

लगभग चार वर्ष बीत गए और दिनेश के घर आज सोहर गीत गए जा रहे हैं। सुशीला ने आज दूसरे बेटे को जन्म दिया है। गांव के पंडित जी की सलाह से छोटे बेटे का नाम किशन रखा गया है। किशन का बड़ा भाई राघव २ वर्ष का हो चुका है। दिनेश को अब स्वतः अपनी बढ़ती हुई जिम्मेदारी का एहसास होने लगा और हो भी क्यों न, आखिर खेती से घर बड़ी मुश्किल से जो चल रहा था। फिर भी दिनेश अपने काम में लगा रहा। कुछ दिन बाद ही सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में घर की एकमात्र बड़ी-बूढ़ी दिनेश की मां भगवान के घर चल बसीं। मानो घर की खुशियों में अचानक कोई ग्रहण सा लग गया हो। कुछ माह बीते तो दिनेश और सुशीला ने बच्चों के भविष्य को देखते हुए गांव छोड़कर शहर जाने का निर्णय लिया। अपने परिवार के अच्छे भविष्य के लिए दिनेश ने शहर के एक कारखाने में काम करना शुरू कर दिया। कारखाने में काम करके दिनेश को ठीक-ठाक वेतन महीने के अंत तक मिल जाता था। वेतन से दिनेश का परिवार तो संभलने लगा परंतु दिनेश को हर समय अपने गांव की याद सताती रहती। मानो मन गांव में हो और तन शहर में। दिनेश अपने गांव से लगभग एक हजार किलोमीटर दूर था, लेकिन कोई दूसरा विकल्प भी तो नहीं है ऐसा मानकर दिनेश जैसे-तैसे अपने पारिवारिक जीवन को पटरी पर ले आया।

बड़े बेटे राघव का विद्यालय में दाखिला दिलवाए हुए अभी ४ महीने ही बीते थे कि एक दिन विद्यालय के सूचना पट पर विद्यालय के अगले आदेश तक बंद रहने की सूचना लिख दी गई। विद्यालय में पूछने पर यह पता चला कि किसी महामारी के कारण विद्यालय को अगले आदेश तक बंद रखने का निर्णय लिया गया है। दो दिन बाद दिनेश रोज की तरह अपने कारखाने पहुंचा तो देखा आज तो कारखाने में ताला पड़ा है। उसके दिमाग में ख्याल आया कि शायद किसी गड़बड़ी के कारण कारखाना बंद होगा। वह बेबाक कारखाने के दरवाजे पर जा पहुँचा तो बाहर ही बैठे सुरक्षा प्रहरी ने हाथ हिलाते हुए इशारे से कारखाना बंद होने की सूचना दिनेश को दी, परन्तु दिनेश से रहा न गया तो उसने पास जाकर पूछा कि भाई कारखाना कब खुलेगा? इस पर जवाब आया, पता नहीं। दिनेश - पता नहीं, मतलब? सुरक्षा प्रहरी - मतलब यह है कि किसी महामारी के कारण कारखाने को तुरंत बंद करने के आदेश जिलाधिकारी महोदय से

प्राप्त हुए हैं। इसलिए कारखाना बंद है। जब कारखाना खुलेगा तब आना। इतना सुनते की दिनेश के पैरों तले मानो जमीन खिसक गई। नई-नई जमी गृहस्थी पर ग्रहण लग गया। सुशीला और दिनेश ने बिना देर किए शहर छोड़ कर गांव वापस जाने का फैसला किया, परन्तु ऐसा हो न सका क्योंकि शासन द्वारा आवागमन के सारे रास्ते बंद कर दिए गए थे। सरकारी या निजी वाहन सभी बन्द खड़े थे। दिनेश- अब हमारे पास जो भी जमा पूँजी है, उसके भरोसे ही शहर में समय काटना पड़ेगा। सुशीला- मगर समय कितना काटना है, यह भी तो पता नहीं है न। दिनेश- (लंबी सांस लेते हुए) सब ऊपर वाले के हाथ में है।

महामारी का प्रकोप दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। लोग घरों से बाहर निकलना तो दूर, घर से झांकते तक नहीं हैं। सड़कों पर मानो कर्फ्यू सा लगा हो। कभी खबर मिलती है कि छूने से महामारी फैल रही है तो कभी सुनाई देता है कि महामारी हवा से फैल रही है। अखबारों और समाचारों की मानों तो अस्पतालों में पैर रखने की जगह नहीं है। मरीजों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। महामारी से होने वाली मौतों की दर भी तेजी से बढ़ रही है। कुछ १५ दिन बीत चुके थे। सुशीला ने दिनेश को तबीयत कुछ ठीक न होने की बात कही। घर में रखी दवा खाकर सुशीला ने आराम करना ही बेहतर समझा। परन्तु सुशीला का बुखार बहुत तेजी से बढ़ रहा था। यह देखकर शासन द्वारा जारी किए गए नंबर पर दिनेश ने फोन करके चिकित्सकीय परामर्श मांगना चाहा। जानकारी मिलते ही चिकित्सक दल दिनेश के घर जा पहुंचा और कुछ प्राथमिक जांच करके, 'सुशीला महामारी की चपेट में है' बताते हुए सुशीला को अपने साथ अस्पताल ले गए। जहाँ किसी को भी जाने की अनुमति नहीं थी।

घर में जो भी जमा पूँजी थी, वह अस्पताल को इस उम्मीद से दिनेश ने दे दी कि सुशीला जल्द घर लौट आएगी। दो दिन बीत गए हैं लेकिन सुशीला की कोई खबर नहीं मिली। सुशीला ने जो कुछ थोड़े पैसे छुपा कर अलग-अलग जगह रखे थे, दिनेश उन सबको खोजकर इकट्ठा कर ही रहा था कि उसके पास अस्पताल से फोन आया और बोला कि दिनेश बोल रहे हो? दिनेश - हाँ, दिनेश बोल रहे हैं। अस्पताल से - सुशीला अब नहीं रही। महामारी की वजह से सुशीला की मौत हुई है। दिनेश कुछ बोलता इससे पहले ही फोन कट गया। खबर सुनते ही दिनेश एक पल को पत्थर सा हो गया। मानो उसके जिन्दा शरीर से किसी ने साँसे ही खींच ली हों। इससे पहले कि उसके परिवार को और ग्रहण लगे, दिनेश ने सुशीला की बची हुई यादों के साथ अपने बचे हुए परिवार राघव और किशन को गाँव ले जाना ही उचित समझा। मगर समस्या फिर वही कि आवागमन तो ठप पड़ा है। परन्तु इस बार दिनेश के पास न तो शहर में रुकने का कोई बहाना था और न ही कोई ठिकाना था। सब कुछ पहले ही खत्म हो चुका था। अगर कुछ था तो बस गिनती के कुछ पैसे जो सुशीला की बचत थी। दिनेश ने इस बार बिना कुछ सोचे समझे राघव और किशन के साथ पैदल ही शहर छोड़ कर गाँव जाने का फैसला कर लिया। कुछ जरूरत का सामान राघव के कंधे पर और बाकी का सामान दिनेश ने अपने कंधे पर रखकर गांव की ओर बढ़ना शुरू कर दिया।

आज लगभग डेढ़ महीने चलकर दिनेश अपने दोनों बेटों के साथ सुशीला की यादें लिए रानीगंज पहुँच गया है। आज दिनेश अपने गाँव जरूर पहुँच गया था लेकिन कुछ अधूरा सा था। वह अपने आप को लुटा हुआ महसूस कर रहा था। जिस सुशीला के साथ उसने बेहतर भविष्य के लिए गाँव से शहर का सफर शुरू किया था, अब उस भविष्य में सुशीला ही नहीं है।

- शिवम दीक्षित
बैच २००७
प्रबन्धक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, अयोध्या

स्वावलम्बन - पं. दीन दयाल उपाध्याय जी का दृष्टिकोण

''हमारा आर्थिक कार्यक्रम बिल्कुल समाजवादी है। हम वर्तमान आर्थिक ढाँचे में दिखने वाली आय-व्यय विषयक विषमता को नष्ट करने के लिए बद्धपरिकर है। अतएव न्यूनतम तथा अधिकतम आय के मध्य हम एक और बीस का अनुपात बैठाना चाहते हैं। हम न केवल आधारभूत उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं, बल्कि उन उद्योगों पर भी यह सिद्धान्त लागू करना उचित समझते हैं, जिन पर कुछ मुट्ठी भर लोगों का एकाधिकार हो जाता है। आर्थिक व राजनीतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण हमारा मुख्य सिद्धान्त है।''

- २५ जुलाई १९५३ को जनसंघ के महामंत्री के नाते दीन दयाल जी के भाषण का अंश।

उपर्युक्त व्यक्तव्य यह स्पष्ट करता है कि स्वावलम्बन का सूत्र विकेन्द्रीकरण की अवधारणा में समाहित है अर्थात् सैद्धान्तिक रूप से पंचायती राज व नगर पालिका/नगर निगम द्वारा संविधान द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग जितना किया जायेगा, स्वावलम्बन की अवधारणा को उतनी ही शक्ति मिलेगी। दीन दयाल जी ने प्रथम दो पंचवर्षीय योजनाओं की समीक्षा की थी और उसे अपनी पुस्तक "The two plans : Promises, Performances, Prospects" तथा ''भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा'' मे विस्तार से उल्लेखित किया है।

दोनों दस्तावेजों के मूल में है कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर पाश्चात्य दर्शन का प्रभाव अधिक है और इसके उत्पादन का आधिक्य मनुष्य को उपभोग करने की मानसिक गुलामी की ओर ले जाता है। दीन दयाल जी आगे लिखते हैं कि इसके लिए पाश्चात्य संस्कृति प्रमुखता से तीन आयामों को संस्कृति के रूप में मानव समाज में प्रतिवादित करती है।, ''उपभोगवाद, स्पर्धावाद और वर्ग संघर्ष'' इन सभी का आधार अनियंत्रित उपभोग है। उपभोग की लालसा यदि पूरी की जाए तो वह बढ़ती चली जाती है और अधिकाधिक उपभोग का सिद्धान्त ही मनुष्य के दुःखों का कारण है।

साम्यवादी एवं पूँजीवादी विचारधाराएँ समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, विधिशास्त्र सभी को अर्थशास्त्र के हवाले कर देती है। अर्थशास्त्र की औद्योगिकीकरण प्रवृत्ति में वित्तीय सत्ता के केन्द्रीकरण को पोषण प्रदान किया है। इससे मानव जीवन का ही मशीनीकरण हो गया है। दीन दयाल जी धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र में पारम्परिक संतुलन के हिमायती हैं और इस संतुलन कार्य को वे ''सांस्कृतिक कार्य मानते हैं तथा इस दृष्टि से अनुकूल अर्थायाम की स्थापना के हिमायती हैं।''

दीन दयाल जी ने स्वामित्व के सवाल पर स्पष्ट किया है कि हर व्यक्ति समाज का प्रतिनिधि है। अतः वह समाज की सम्पत्ति के एक हिस्से का 'न्यासी' या संरक्षक है। दीन दयाल जी व्यक्ति को श्री विहीन करने के खिलाफ थे। इसलिए पूँजी का केन्द्रीकरण चाहे वह पूँजीपतियों के पास हो या राज्य संस्था के पास। दीनदयाल जी दोनों के विरोधी थे। क्योंकि दोनों चाहते हैं कि मनुष्य उनका गुलाम या मजदूर बन कर रहे, उसमे शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने की शक्ति न रहे।

केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति मनुष्य के कर्तव्य-भाव को मारती है। उसमें 'मजदूर' का भाव जगाती है। 'मजदूरी का भाव, मजबूरी का भाव।' इसमें कर्ता का सम्मान एवं कर्तव्य का सुख नहीं रहता। इसमें राज्यवादी नौकरशाही का एक अतिरिक्त दोष और जुड़ जाता है। स्वावलम्बन के भाव को युवाओं में जागृत नहीं होने देने के कारणों में हमारी शिक्षा प्रणाली को दीनदयाल जी ने मूल कारण माना है। शिक्षा का अर्थ नौकरी करने वाले युवाओं का देश में रोल मॉडल के रूप में स्थापित नहीं करना है, वरन इस प्रकार के युवाओं का निर्माण करना है। जिसमें जोखिम लेने की क्षमता हो और इसके लिए आवश्यक पूँजी की व्यवस्था

करने की जवाबदेही राज्य की है। राज्य ने बहुत ही खूबसूरती से इन जोखिम लेने वाले युवाओं के मनोबल को तोड़ने के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जिसे 'बेरोजगार युवकों के लिए योजना' जैसे प्रकल्पों का नाम दिया गया। यह परोक्ष रूप से यह संसूचित करता है कि चूँकि तुम राज्य या पूँजीपतियों के मजदूर नहीं बन पाये, इसलिए तुम बेरोजगार हो अतैव तुम्हें सहायता राशि के स्थान पर ऋण उपलब्ध करवाया जायेगा जोकि बहुत ही कम मात्रा में होगा।

स्वावलम्बन को दीनदयाल जी ने 'अपरमात्रिक' शब्द से सम्बोधित किया है, उन्होंने इसे विस्तारित करते हुए स्पष्ट किया है कि यह सबको काम देने में सहायक हो, उत्पादन को विकेन्द्रित करे, उसका विकास पारम्परिक उत्पादक कारीगर व शिल्पी के औजारों के आधार पर हो, वह भारत की कृषि व ग्राम व्यवस्था के लिए पूरक हो, वह ग्रामों से प्रतिभा पलायन न होने दे, ग्रामों का ही उद्योग 'अपरमात्रिक' हो, उसका स्वरूप मानव मूल्यों के प्रति घातक प्रभाव वाला न हो, जन-श्रम-प्रधान उद्योगनीति हो न कि यंत्र प्रधान। जन-श्रम में सहायक के रूप मशीनों का यथायोग्य विकास हो।

दीनदयाल जी ने इसे गणित के सूत्र से प्रतिपादित भी किया है। यथा - ''ज x क x य $=$ इ''

यहाँ ज - जन

क - कर्म

य - यंत्र

इ - इच्छित संकल्प

इस सूत्र में 'ज' और 'इ' सुनिश्चित हैं और 'इ' तथा 'ज' के अनुपात में 'क' तथा 'य' को सुनिश्चित करना है, लेकिन केवल औद्योगिकरण लक्ष्य होने पर 'य' सभी को नियंत्रित करता है और 'य' के अनुपात में 'ज' की छटनी होती है। 'य' के अनुपात में 'इ' को भी यंत्रों के अति उत्पादन का अनुसरण करना पड़ता है जोकि सर्वथा आवंछनीय है। 'ज' की छटनी पर आधारित कोई भी अर्थव्यवस्था आलोकतांत्रिक है। 'इ' को नियंत्रित करने वाली कोई भी अर्थव्यवस्था तानाशाही है। अतः 'ज' तथा 'इ' के नियंत्रण में 'क' तथा 'य' का नियोजन होना चाहिए। यही लोकतांत्रिक एवं मानवीय अर्थव्यवस्था कही जा सकती है।

दीन दयाल जी ने समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान को सन्दर्भित करते हुए कहा है कि कर्म की प्रेरणा का आधार 'कर्तव्यसुख' है। वो उस अर्थशास्त्र के खिलाफ है जो मानव-जीवन के सामाजिक एवं मनोविज्ञानिक पहलुओं की उपेक्षा करता है। इसलिए वे यह प्रतिपादित करते हैं कि ''समाज के मानदण्ड ऐसे बनाए जाए कि हर वस्तु पैसे से न खरीदी जा सके। पैसे से ही मनुष्य आँकने का परिणाम यह होता है कि दुर्बल की रक्षा ही नहीं हो पाती है। श्रम की प्रतिष्ठा उससे मिलने वाले अर्थ कारण नहीं अपितु उसके धर्मत्व से है। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को दिया गया पारिश्रमिक उसके द्वारा किए श्रम का प्रतिदान नहीं वरन् उसके 'योगक्षेम' की व्यवस्था है।

स्वावम्बन के मूल में श्रम के अवसरों को उत्पन्न करना तथा इस कार्य में लगे सहयोगियों को सशक्त कर उनके द्वारा पुनः नये एवं स्वतन्त्र व्यवस्था को उत्पन्न करने का उद्देश्य रखना ही इसका मूल्य है, अन्यथा स्वालम्बन की व्यवस्था एक नयी सामंती व्यवस्था को विकसित कर देगी। युग-भारती स्वावलम्बन की व्यवस्था को सम्पूर्ण भारत मे विकसित करने मे सहायक की भूमिका सुनिश्चित कर सकती है, जिसके केन्द्र में निम्नलिखित सिद्धान्तों के साथ कार्य-योजना विकसित

की जा सकती है।

(क) प्रत्येक व्यक्ति में क्षमता है।

(ख) प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से अलग है।

(ग) व्यक्ति की क्षमता के अनुरूप सहयोग प्रदान करने से व्यक्ति राष्ट्र-हित मे कार्य करता है।

(घ) धन का मनोविज्ञान होता है कि धन का अभाव मनुष्य को चोर बनाता है और यह उपभोगवाद की संस्कृति मनुष्य को लालची बनाती है।

(ङ) भारतीय संस्कृति में धर्म का आधारभूत पुरूषार्थ माना गया है। ''सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलं अर्थः।'' चाणक्य के इस कथन के अनुसार 'अर्थ के बिना धर्म नहीं टिकता।''

उपर्युक्त सिद्धान्तों के आधार पर युग-भारती को 'स्वावलम्बन' पर एक विस्तृत कार्य-योजना को 'ओरछा संकल्प-पत्र' के रूप में विकसित करना चाहिए। जिसे भारत के सम्बन्धित नेतृत्व को समर्पित कर भावी योजनाओं के निर्माण में सहयोग करना चाहिए।

- अजीत कुमार सिंह
बैच १९८८
निदेशक पब्लिक हेल्थ
बिहार विद्यापीठ

यदि शिक्षक अध्ययन नहीं करता तो वह अच्छी शिक्षा नहीं दे सकता। जो दीपक स्वयं बुझ गया है, वह दूसरे दीपक को क्या जलायेगा? यदि किसी शिक्षक ने अपने विषय के अध्ययन की इतिश्री कर ली है, जिसने अपना ज्ञान-वर्धन समाप्त कर दिया है और जो पिछली बातें ही दुहराता है, वह विद्यार्थियों के प्रति न्याय नहीं करता। वह उनका मस्तिष्क प्रखर नहीं बना सकता। अतः शिक्षक को यावज्जीवन अध्ययन परायण रहना चाहिये ।

- रवीन्द्र नाथ ठाकुर

शुभकामना संदेश

अभय कुमार गुप्ता
1977

अमित गुप्ता
1992

युग प्रभा का प्रकाशन और युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन, संगठन की सामूहिक शक्ति, समर्पण और सांस्कृतिक चेतना का परिचायक है। इस पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ कि यह प्रयास समाज कल्याण की दिशा में मील का पत्थर बने।

MedLinks

SUPER SPECIALITY DERMATOLOGY | HAIR TRANSPLANTS

DR.PANKAJ CHATURVEDI, MD (AIIMS)

EXPERIENCE EXCELLENCE AT OUR WORLD-CLASS AESTHETIC AND HAIR TRANSPLANT CENTERS, OFFERING ADVANCED TREATMENTS, PERSONALIZED CARE, AND TRANSFORMATIVE RESULTS TO HELP YOU ACHIEVE UNPARALLELED CONFIDENCE AND BEAUTY. YOUR JOURNEY TO PERFECTION STARTS HERE.

AT MEDLINKS, WE BELIEVE IN THE PERFECT HARMONY OF SCIENCE & BEAUTY, WE SPECIALIZE IN REDEFINING BEAUTY AND SELF-CARE WITH WORLD-CLASS AESTHETIC AND HAIR RESTORATION TREATMENTS. ENSURING THAT EVERY TREATMENT IS TAILORED TO MEET YOUR UNIQUE NEEDS FROM ADVANCED SKIN SOLUTIONS TO INNOVATIVE HAIR REGROWTH TECHNOLOGIES, OUR SERVICES ARE DESIGNED TO HELP YOU LOOK AND FEEL YOUR BEST.

WHAT WE OFFER

SKIN BRIGHTENING & REJUVENATION | ANTI AGING | LASER RESURFACING | BOTOX & FILLERS
SLIMMING | COSMETIC SURGERIES | WELLNESS | LASER HAIR REDUCTION |
HAIR TRANSPLANT & GROWTH BOOSTERS

Stay Connected And Keep Glowing...

@medlinksaesthetics
@medlinkstrichology
@medlinksaesthetics
@medlinkshairtransplants
www.medlinks.in
hairtransplantdelhi.org

Gurgaon | Delhi
(Safdarjung Enclave, Punjabi Bagh)

शुभकामनायें

धर्मेन्द्र कुमार
अनुभाग अधिकारी
पर्यटन विभाग, उ.प्र. सचिवालय

शारद कश्यप
समीक्षा अधिकारी
पर्यटन विभाग, उ.प्र. सचिवालय

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय,

कानपुर के पूर्व छात्रों की एक अद्वितीय संस्था

'युग-भारती'

के ओरछा में 20-21 सितम्बर, 2025

को

होने वाले वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर

हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं

प्रेषित करते हैं।

AISHWARYA ELECTRICALS (P) LTD.

Our sincere best wishes:

Vaibhav Gupta 9839033104 **Abhishek Gupta 9839278866**

Triveni Solvex p Ltd.

We are manufacturer and supplier of Bird, Poultry & Animal Food, Carrier Oil, Cooking Oil, Inorganic and Organic Solvents, Herbal Products etc.

Best wishes from:

Radheyshyam Agarwal, Sharad Agarwal

स्वावलंबन - मेरी दृष्टि में

अवलम्ब लेकर जी रहा जो है मार्ग उसकी उन्नति का कहाँ पर ?
है सुखी जीवन, उसी का संसार में स्वावलम्बित होकर जीता यहाँ जो।।

-अज्ञात

स्वावलम्बन का अर्थ है- आत्मनिर्भरता। आत्मनिर्भरता का आशय यह कदापि नहीं है कि प्रत्येक कार्य व्यक्ति स्वयं करे बल्कि उसका एक ही प्रयोजन है कि मनुष्य आत्मनिर्भर होकर पहले अपने पर शासन करना सीखे फिर योग्य प्राणियों को अपने साथ जोड़कर आगे बढ़े। मन और मस्तिष्क के कारण ही मनुष्य को समझदार माना जाता है परन्तु कभी-कभी वह भूल जाता है कि उसकी प्रगति एवं विकास का अर्थ मात्र उसके आत्मनिर्भर या स्वावलम्बी हो जाने से नहीं है, बल्कि उस समूचे समाज का भी स्वावलम्बी होना है, जिसका कि वह एक सम्पुष्ट अंग है।

स्वावलम्बन, समाज की सर्वांगीण सफलता प्राप्ति का एक महामंत्र है, जीवन का उत्कृष्ट आभूषण है, कर्तव्य श्रृंखला की प्रथम कड़ी है, सर्वांगीण उन्नति का आधार है। गीता में प्रभु श्रीकृष्ण ने कहा है कि- 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।' अर्थात् जो मनुष्य अपने कर्मों में लगा रहता है, वह सिद्धि को प्राप्त करता है।

स्वावलम्बन का महत्व :-

वर्तमान समय में स्वावलम्बन की महत्ता और भी बढ़ गई है। आज के प्रगतिवादी और प्रतिस्पर्धावादी युग में स्वयं को समसामयिक बनाए रखने के लिए जरूरी है कि औरों से कुछ बेहतर करें, कुछ नवाचार करें। फिर चाहे वो किसी भी क्षेत्र में हो। पिछले कुछ वर्षों का अध्ययन करेंगे तो आप पाएंगे कि भारतवर्ष में नवाचारों का दौर आया है। प्रतिदिन नए स्टार्ट-अप खुल रहे हैं जो दर्शाता है कि युवा पीढ़ी अब आत्मविश्वास से भरी हुई है, उनमें रिस्क लेने की क्षमता है और वो कुछ अलग करना चाहती है। अंग्रेजी के एक विचारक ने कहा है कि The supreme fall of falls is this, the first doubt of one's self अर्थात् 'पतन में भी महान पतन यह है कि किसी को सबसे पहले अपने आप पर विश्वास न हो।'

स्वावलम्बन का महत्व तब और भी बढ़ जाता है जब आप इसमें कई व्यक्तियों को अपने साथ जोड़ लेते हैं क्योंकि तब आपके ऊपर जिम्मेदारी होती है स्वयं के साथ-साथ अन्य परिवारों की, उनकी सोच को जीवित रखकर, विचारों को साथ लेकर लक्ष्य तक पहुंचने की।

राष्ट्र और स्वावलंबन :-

राष्ट्र का विकास और स्वावलंबन परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। एक राष्ट्र की प्रगति उसके स्वावलम्बी होने में है। यदि हम अपने राष्ट्र की उन्नति चाहते हैं तो यह हमारे लिए नितान्त आवश्यक है कि हम स्वावलम्बी बनें और देश को नित नई ऊँचाइयों पर ले जाएं। आज भारत वैश्विक नवाचार सूचकांक-२०२४ के अनुसार १३३ देशों की सूची में ३९वें स्थान पर है जोकि दर्शाता है कि हम नवाचार के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहे हैं।

भारत को स्वावलंबन की दिशा में अग्रसर करने के लिए केन्द्र सरकार निरन्तर प्रयास कर रही है। फिर चाहे वो 'स्टार्ट अप इण्डिया' की पहल हो या फिर उद्योगों को स्थापित करने की दृष्टि से प्रारम्भ किया गया 'एकल विण्डो क्लियरेंस' प्रकल्प। हर क्षेत्र में सरकार किसानों को, उद्योगों को, महिला उद्यमियों को सम्बल देने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रयासरत है और जब प्रत्येक क्षेत्र आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा स्वावलंबन की स्थिति स्वतः मजबूत होगी।

मेरे जीवन में स्वावलंबन :-

मेरे जीवन में स्वावलंबन का बहुत गहरा योगदान है। सही मायनों में मुझमें स्वावलंबन का बीज एम.बी.ए. करने के बाद प्रस्फुटित हुआ, जब रिसर्च प्रोग्राम में केस स्टडीज करने का मौका मिला। एम.बी.ए. के बाद चार-पाँच वर्ष नौकरी करने के बाद मन में यह विचार पल्लवित हुआ कि स्वयं कुछ किया जाए, ऐसा कुछ जिससे आत्मसंतुष्टि भी मिले और दूसरों का भी आर्थिक, सामाजिक उत्थान किया जा सके। इसीलिए बड़े-बुजुर्गो के आशीर्वाद एवं ईश्वर की कृपा से दो शिक्षण संस्थान आरम्भ करने का सुयोग बना। जिसमें लोगों को रोजगार देने के साथ-साथ आर्थिक रूप से पिछड़े अभिभावकों की बेटियों को ५०१ रुपए में स्नातक की उपाधि देने का प्रकल्प चल रहा है। जिससे बुंदेलखंड जैसे शिक्षा के पिछड़े क्षेत्र में छात्राओं का शैक्षिक स्तर सुधर रहा है, उन्हें अवसर मिल रहे हैं। कुछ वर्षों बाद सन २०१८ में एक मित्र के साथ मिलकर मैंने मिनरल वाटर कम्पनी 'आक्सीनीर' की शुरुआत की। जो कई परिवारों को रोजगार देने के साथ-साथ सीएसआर फंडिंग के माध्यम से गौरी फाउंडेशन के द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण के क्षेत्र में अपने सामाजिकदायित्वों का निर्वहन कर रही है।

मैं अन्त में यही कहना चाहता हूँ कि स्वावलंबन एक ऐसा गुण है जो हमें जीवन में सफलता, प्रसन्नता और संतुष्टि प्रदान करने में मदद करता है। स्वावलंबन से आप अपना तो विकास करते ही हैं साथ-साथ परिवार, समाज और राष्ट्र का भी विकास करते हैं। स्वावलम्बन का वास्तविक उद्देश्य मात्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता प्राप्ति हेतु उद्योग स्थापित करना नहीं है बल्कि इसमें समाजहित और राष्ट्रहित के विस्तृत आयामों के समावेश करने से है। यह एक ऐसा भाव है जिसे हर व्यक्ति को स्वयं के भीतर विकसित करना चाहिए ताकि वह बेहतर बन सके, अपने जीवन को बेहतर बना सके और दूसरों के लिए प्रेरणा बन सके।

- विवेक चतुर्वेदी
बैच २००६
निदेशक
हनुमान कृपा महाविद्यालय, मऊरानीपुर, झांसी
विजडम इण्टरनेशनल स्कूल,मऊरानीपुर, झांसी
ऑक्सीनीर मिनरल वाटर

"हमने खेती और स्वदेशी उद्योगों की ओर दुर्लक्ष्य किया तंथा अपने लिए अहितकर एवं अप्रतिष्ठाकारक शर्तों पर भी विदेशी गठबन्धनों का स्वागत किया। विदेशी निहित स्वार्थ आज इतने प्रबल हैं कि वे देश के आर्थिक कार्यक्रमों को ही नहीं अपितु आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक क्षेत्र की नीतियों को भी प्रभावित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यदि हमें स्वतंत्रता बचानी है तो आर्थिक क्षेत्र में स्वावलंबी बनना होगा।"

(1968 में भारतीय जनसंघ के कालीकट अधिवेशन में पण्डित जी के अध्यक्षीय भाषण का अंश, जो सदैव प्रेरक रहेगा।)

युगभारती चित्रमाला

कार्पोरेशन बैंक
Corporation Bank
प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष
एक लाख ग्यारह हज़ार एक सौ ग्यारह
21092014
या धारक को OR BEARER

"वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पं. दीनदयाल उपाध्याय
की अन्त्योदय परिकल्पना"
मुख्य वक्ता
डॉ. सुधान्शु त्रिवेदी
(राष्ट्रीय प्रवक्ता भारतीय जनता पार्टी)
स्थान: कलाश भवन सभागार,
सीएसए कृषि विश्वविद्यालय कानपुर
दिनांक : 20 अगस्त 2017
दोपहर : 2:00 बजे
आयोजक- युगभा

युग भारती एंव पं० दीन दयाल उपाध्याय विद्यालय कानपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
प्रथम यतीन्द्र जीत सिंह मेमोरियल अन्तर्विद्यालयीय
खो खो प्रतियोगिता

2016
2017
2018
2019
2020
2021
2022
2023
2015
2014
2013
2012
2011
2010
2009
2008
2007
2006
2005
2004
2003
2002
2001
2000
1999
1998
1997
1996
1995
1994
1993
1992
1991
1990
1989
1988
1987
1986
1985
1984
1983
1982
1981
1978
1977
1976
1975

युग भारती पारिवारिक मिलन-2023

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर
मुख्य अतिथिः- मा0 अरूण

स्वच्छ भारत के लिये हमारा संकल्प
"पॉलीथीन बैग नहीं, हम जूट बैग ही इस्तेमाल करेंगे।"
निवेदक : युग भारती

युग-भारती
राष्ट्रीय अधिवेशन, लखनऊ
"युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन 2024 "
युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन 2024

EXIT

"युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन 2024 "

नीराजना
आमंत्रित कवि
हमारा लक्ष्य-राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व का उत्कर्ष
युग-भारती
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर के पूर्व छात्रों द्वारा संचालित संस्था

5 वाराणसी

वाराणसी | रविवार • 25 मई • 2025

सहारा | www.rashtriyasahara.com

राष्ट्र शिक्षा पर लिखी दो काव्य पुस्तकों का हुआ विमोचन

वाराणसी। हिंदी साहित्य की दो पुस्तकों 'उन्मुक्त मुक्तक' एवं 'साकल्य' का विमोचन पिछले दिनों लखनऊ में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान शिक्षाविद् यतीन्द्र कुमार शर्मा, पत्रकार एवं साहित्यकार डॉ. सौरभ मालवीय तथा प्रोफेसर पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, लखनऊ विवि द्वारा किया गया। कार्यक्रम के केंद्रबिंदु आचार्य कवि ओम शंकर त्रिपाठी रहे। उनके द्वारा रचित इन दोनों पुस्तकों की पाठकों ने खूब सराहना की। विमोचित दोनों काव्य पुस्तकों के सम्पादक डॉ. पंकज श्रीवास्तव ने बताया कि 'शिवोहम्' प्रकाशन में प्रकाशित इन पुस्तकों में लिखी कविताओं का महत्त्व हिंदी पाठकों के लिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि इनमें विचारों और भावों का केवल सुखद इंद्रजाल न होकर मां भारती के चरणों में सर्वस्व न्यौछावर करने की राष्ट्रशिक्षा लिखी गयी है। लिहाजा स्वयं पढ़ें और अपने बच्चों में भी यह राष्ट्रभावना भरें। यह कार्यक्रम 'युगभारती' के सहयोग से हुआ।

युग-प्रभा
विशेषांक

सामाजिक समरसता पर्व

विवेक को महामंत्री बनने पर दी बधाई

मऊरानीपुर। नगर के व्यवसायी विवेक चतुर्वेदी को बुंदेली इकाई का महामंत्री पद मिलने पर लोगों ने खुशी जाहिर की है। मालूम हो कि रविवार को पंडित दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय कानपुर की युग भारती बुंदेलखंड क्षेत्र का पूर्व छात्र सम्मेलन एक गेस्ट में संपन्न हुआ। जिसमें विद्यालय के आचार्य दीपक राजे मुख्य अतिथि के रूप पे उपस्थित हुए। सम्मेलन में विद्यालय के 1976 से लेकर 2007 तक के छात्र भी सम्मलित हुए। सम्मेलन में हिंदू नव वर्ष को लेकर एवं राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को लेकर संबोधन किया गया। सम्मेलन में युग भारती के अध्यक्ष वीरेंद्र त्रिपाठी ने अध्यक्षता की एवं बुंदेलखंड इकाई का गठन किया गया। जिसमें राघवेंद्र प्रताप सिंह को अध्यक्ष एवं विवेक चतुर्वेदी को महामंत्री मनोनीत किया गया। ब्यूरो

"जय श्री राम"

आँधियाँ जोर की चलती हों, उल्काएँ रूप बदलती हों,
धरती अधैर्य धर हिलती हो, अपनों की सुमति न मिलती हो,
तब 'जयश्रीराम' पुकार उठो, पुरखों का तेज निहार उठो
हनुमन्त तेज को धार उठो,
जय जय का स्वर उच्चार उठो।।१।।

जब मनस प्रकंपित रोता हो, बौद्धिक बल साहस खोता हो,
परिवार बोझ सा ढोता हो, आत्मिक बल दिन में सोता हो,
तब राम मंत्र का जाप करो, मन ही मन मन का ताप हरो,
अपने ऊपर विश्वास करो,
संगठन-मंत्र जपते विचरो।।२।।

जब सब सबपर आशंकित हो, धीरज के चरण विकंपित हों,
वीरता विकल आतंकित हो, नय अनय-मंत्र से मंत्रित हो,
तब क्षात्र तेज को धार उठो, जय जयति मंत्र गुजार उठो,
अरि पर बन वज्र-प्रहार उठो
कर सिंहनाद हूँकार उठो।।३।।

जब 'राज' 'नीति' से खाली हो, उद्यान उजाड़ू माली हो,
घर घाल रही घरवाली हो, अपनी संतान बवाली हो,
तब फिर बैरागी स्वर साधो, अपने में अपनापन बाँधो,
चैतन्य तत्व को संसाधो,
अपने शिवत्व को आराधो।।४।।

जब कोई साथ न देता हो, सारा जग बस अभिनेता हो,
बाजार नीति-प्रणेता हो, सत केवल खेती-खेता हो,
तब महादेव को याद करो, क्षणभर भी मत बरबाद करो,
निज शक्ति शौर्य के साथ वरो,
उत्थित समाधि-स्वर बन विचरो।।५।।

ओमशंकर

उद्‌भूत : २७-०७-२०२५

हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम

श्यामल तन में उज्जवल मन है,
कर्म साधना आठों याम।
हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम।।

तारामंडल घड़ी तुम्हारी,
बिन चाबी गतिमान रहे।
हुआ सवेरा करो जागरण,
मुर्गा बारंबार कहे।
पंचवटी सी पावन कुटिया,
घर तेरा साकेत धाम।
हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम।।

खाते चारा प्रेम भरोसा,
पशु अपनी पशुता भूले।
ब्रह्म मुहूर्त में प्रभु पूजा,
गले में लघु घंटा झूले।
गौ की सेवा होती घर-घर,
घर तेरा गोलोक धाम।
हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम।।

गोद पालने में सुत सोवे,
कोयल सी गावे नारी।
सात सुरों में चकिया बाजे,
चूड़ी कंगन सरगम न्यारी।
गेहूं जीवन, चूर्ण आत्मा
कालचक्र गति है अविराम।
हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम।।

धरती में जीवन तलाशते,
बखर तिफारा कठा चले।
रोटी-माठा लावे गोरी,
उड़ती चुनर गले मिले।
नारी लज्जा वस्त्र लपेटे,
चलें कन्हैया उंगली थाम।
हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम।।

जीवन की आपाधापी में,
खुद को भी हमने न जाना।
पशुओं को भी प्रेम सिखाकर,
तुमने ब्रह्म रूप पहचाना।
हम माया की छाया ढूंढे,
रात दुपहरी सुबह शाम।
हे कृषक तुझे मेरा प्रणाम।।

– सुभाष शर्मा

राष्ट्र का निर्माण हो !...

एकात्म मानववाद की,
परिकल्पना का मान हो।
अंग्रेजियत की भीड़ में,
हिंदी का जब सम्मान हो।
तब राष्ट्र का निर्माण हो।।

वंचितों की भीड़ में जो,
अंत में बेबस खड़ा है।
वस्त्र वंचित देह भीतर,
भूख लेकर जो पड़ा है।।
बजबजाती नालियों से,
रात दिन जो जूझता है।
अश्रुपूरित नैन में जो,
स्वप्न लेकर घूमता है।।
उस मनुज का उत्थान हो,
तब राष्ट्र का निर्माण हो।।

चीथड़ों से तन लपेटे,
वक्ष पे नवजात बाँधे।
अनवरत जो चल रही है,
पीठ पर संसार साधे।।
जीवन थपेड़ों से यहाँ,
किंचित नहीं भयभीत जो।
नित कंटकों से लड़ रही,
साहस के गाती गीत जो।।
उस नार का सम्मान हो,
तब राष्ट्र का निर्माण हो।।

- डॉ० पवन मिश्र
बैच १९९६

युग-प्रभा और अधिवेशन, दोनों ही समाज के उत्थान का आधार बनें - प्रतीक पांडेय २००७

परम धर्म

किताबें तब खुलती हैं,
जब पेट भरा होता है।
भरे पेट की छांव में
सत्य, धर्म, नैतिकता
ये सब बहुत सुंदर लगते हैं।
अहिंसा की खोखली बातें,
मुट्ठी में रोटियाँ लेकर
किए जाते हो तुम।
और हम?
हम रोटी के लिए,
मुट्ठी खोलते-खोलते थक जाते हैं।
मैंने देखी हैं वो आँखें,
जो चूल्हे की राख से भी ज्यादा बुझी थीं।
उन होंठों पर न कोई आदर्श था,
न कोई प्रवचन
सिर्फ एक खामोशी थी,
जो भयावह चीख से भी
ज्यादा डरावनी थी।
तुम पूछते हो,
'क्यों झुके हैं हम ?'
काश, कभी भूख
उतरती तुम्हारी रीढ़ में,
तुम्हारा सफेद
बिलकुल बेदाग,
धुला-धुलाया, इस्तरी किया हुआ।
और मेरा सफेद ?
पसीने में भीगा,
धूल में लिथड़ा
पर सफेद ही है, है ना?
बस फर्क इतना है
तुम भोथरे सिद्धांत के रंग में जीते हो
और मैं? भूख के रंग में।
जब भूख पेट से होकर
सिर पर चढ़ती है,
तो किताबें चुप हो जाती हैं।
और उस वक्त,
रोटी बन जाती है-
धर्म, परम धर्म।

– शशांक मोहन दुबे
बैच २०१०

दीवाली

इस दीवाली,
माँ की आंखें होगी सजल,
पिता का बढ़ेगा बाहुबल,
छोटी बहना की मनेगी राखी,
संगिनी को मिलेगा साथी,
बेटा मनाएगा उल्लास की होली,
और बिटिया रानी रचेगी
खुशियों की रंगोली।

फाल्गुन की मस्ती

माघ में है फागुन की मस्ती, बयार में है हल्की सी ठिठुरन
धुंध ने हैं अपने पाँव समेटे, और धूप ने भी हैं अपने पंख पसारे

इस धुंध की झीनी चादर में, जब देखा उसको मुस्काते
इस हल्की हल्की ठिठुरन में, जब अहसास हुआ है जुम्बिश का
इन सर्द-सर्द निगाहों ने, जब तेरी आभा के जाम लगाये हैं
इन ठिठुरती बाहों ने, जब खुल के गले लगाया है

तब जाके अहसास हुआ, इस बसंत ऋतु के दस्तक का
तब जाके वो दूर हुई, इन सर्द महीनों की ठिठुरन
तब जाके वो तपिश मिली, जो दबी पड़ी थी इन आँखों में
तब जाके अहसास हुआ, इस सुखद मिलन की वेला का....

यह प्रेम बड़ा अतरंगी है, जो माप गया हर दूरी को
यह जान के भी की ना होगा मेल, फिर भी है घूमे गोल गोल
यह प्रेम बड़ा सतरंगी है, जो जान गया है रंगों को
यह तो मेरी फितरत है जो, देख सका इस चाहत को....

- संजीव चौहान
१९९७ बैच

बरसती बरखा सुहानी !!

साँझ में घिरती घटा की, अलक उड़ स्वच्छंद खेले।
लुक-छिपा है सूर्य उनमें, स्वर्ण कण नभ में बिखेरे।
झूम कर लटके घटा भी, सूर्य के गल-बाँह डाले।
जिद पकड़ कर पूछती है, दिन कटा कैसा बता रे।
बस जरा सी देर में ही, खिलखिला कर उड़ चली यों।
कान में जैसे सुनी हो, गुदगुदाती हुई कहानी।
बरसती बरखा सुहानी!

आतुर हुई है धरा भी, है खड़ी आँचल पसारे।
लाड़ली अब अंक लग कर, गोद में मेरी समा रे।
हर्ष धरती का मुखर है, हास है सब पर लुटाया।
भर रही है बिंदु मोती, थाल सा आँगन सजाया।
हृदय धरा पर बहा कर, भींचती यों बाँध कस कर।
अंक में सच ही समाहित, सिक्त मिट्टी सोख पानी।
बरसती बरखा सुहानी!

मेघ से अम्बर पटा था, अब जरा सा खुल गया है।
सूर्य भी अब विदा होकर, क्षितिज में जा छिप गया है।
निकल आये कुछ सितारे, व्योम में हैं झिलमिलाते।
हैं सुझाते रात को वेख ओढ़नी उनसे बना ले।
रात का परिहास देखो - कह रही है भीगती वह।
ओढ़ ली चुनरी अगर तो, धूप बिन होगी सुखानी।
बरसती बरखा सुहानी!

प्रेम में एक युगल डूबा, प्रणय मद में बह रहा है।
समय की पद-चाप मंथर, मुग्ध हो क्षण थम गया है।
बोलते हैं मुख मधुर कुछ, नयन भाषा खूब बूझें।
जो कहा वह है अकिंचन, अहम यह कि हृदय रीझें।
प्रकृति भी यह सब समझ कर, लिख रही स्मृति पटल पर।
शीत में ऊष्मा बनेगी, मिलन की यह मधु निशानी।
बरसती बरखा सुहानी!

- सतीश चन्द्र गुप्ता
बैच १९९१

अधिवेशन गीत

गांव गांव घर घर में संयम शक्ति शौर्य पहुंचाना है ,
प्रेम युक्ति से संगठना कर विजयमंत्र दुहराना है ।।
जो भी जहां कहीं रहता हो,
जो कुछ भी निज–हित करता हो ,
थोड़ा समय देश–हित देकर
निज जीवन सरसाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
भारत मां हम सबकी मां है यह अनुभूति महत्वमयी ,
सेकुलर वाली तान निराली शुरू हुई है नयी नयी ।
भ्रम भय तर्क वितर्क वितंडा छोड़ लक्ष्य पर दृष्टि रहे ,
हिन्दुराष्ट्र के विजय घोष से नभ को आज गुंजाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
हिंदुदेश में हम–सब हिंदू जाति पांति आडंबर है ,
शक्ति संगठन के अभाव में दर दर उठा बवंडर है ,
प्रेम मंत्र संगठन तंत्र से बद्धमूल विश्वास करें ,
जनजीवन से भ्रामकता को जड़ से दूर भगाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
जहां किसी को भय भासित हो उसके दाएं खड़े रहें ,
लोभ लाभ के प्रति आजीवन सभी तरह से कड़े रहें ,
भारत सेव्य और हम सेवक यही भाव आजन्म रहे ,
यही भाव जन जन के मन में हम सबको पहुंचाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
भारत की संस्कृति में गौरव गरिमा समता ममता है ,
समय आ पड़े तो अपने बल दुष्ट–दलन की क्षमता है ,
हम अपनी संस्कृति की रक्षा हेतु सदैव सतर्क रहें ,
यही विचार भाव जन जन को हमको आज सिखाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...

» ओम शंकर

शुभकामना संदेश

राकेश गुप्ता
1982

संपूर्ण सिंह
1978

युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन एवं युग प्रभा का प्रकाशन, संगठन की निरंतर प्रगति और सक्रियता का द्योतक है। यह अवसर समाज को नई सोच, नई ऊर्जा और नई दृष्टि प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। हार्दिक मंगलकामनाएँ।

FENA

BETTER PRODUCTS, CLEANER WORLD

फेना डिटर्जेंट पाउडर

फेना डिटर्जेंट बार

फेना इम्पैक्ट वॉश पाउडर

फेना इम्पैक्ट वॉश बार

फैबरिक केयर

निप डिशवॉश बार

निप डिशवॉश राउंड

निप डिशवॉश महाटब

निप डिशवॉश जेल

निप डिशवॉश पाउडर

कॉप फ्लोर और टॉयलेट क्लीनर

होम केयर

फेमस ब्यूटी सोप – सैन्डल

फेमस ब्यूटी सोप – रोज़

फेमस ब्यूटी सोप – लेमन

फेमस ब्यूटी सोप – जेसमिन

फेमस लिक्विड हैंडवॉश

पर्सनल केयर

MADE IN INDIA WITH PRIDE

फेना ही लेना

49+ YEARS OF RESEARCH IN THE SCIENCE OF WASHING

*Product Images are for representation purpose only. Actual may differ.

Fena POWERWASH | Fena Impact Wash | NIP NATURE & SHAKTI | COP TOILET AND FLOOR CLEANER | FAMUS BEAUTY SOAP | HANDWASH

Fena (P) Limited, A-237, Okhla, Phase-1, New Delhi-20, India | 011- 69057100 | response@fena.com | www.fena.com

हमारे विशिष्ट सहयोगी

बैच	नाम	बैच	नाम
१९८३	प्रदीप श्रीवास्तव जी	२००७	आलोक यादव जी
१९७६	राघवेंद्र प्रताप सिंह जी	२००६	विवेक चतुर्वेदी जी
२००१	डॉ. राम प्रताप बुंदेला जी	२००५	देवर्षि मिश्र जी
१९८६	प्रवीण द्विवेदी जी	१९७७	विजय कुमार लहारिया जी
१९७७	विजय गर्ग जी	१९८४	डॉ. प्रदीप त्रिपाठी जी
१९८४	बालेन्द्र प्रताप सिंह जी	१९९१	डॉ. मनीष वर्मा जी
१९९७	डॉ. गणेश शंकर जी	१९९९	डॉ. पंकज चतुर्वेदी जी
१९७८	संपूर्ण सिंह जी	१९८२	राकेश गुप्त जी
१९८२	डॉ. प्रवीण सारस्वत जी	१९८८	डॉ. अनुराग पुरवार जी
१९९२	नितिन कपूर जी	२००६	शरद कश्यप जी
२००५	शोभित खरे जी	१९८७	कुमार आनंद अग्रवाल जी
१९७७	कौशल किशोर भरतिया जी	१९८५	अजित अग्रवाल जी
१९९५	आशीष पांडेय जी	१९७७	अभय कुमार गुप्त जी
१९९२	अमित गुप्ता जी	१९९४	नितिन कुमार गौड़ जी
२००६	जागृत गुप्ता जी	२००७	प्रतीक पांडेय जी

अधिवेशन आयोजन समिति

राघवेंद्र प्रताप सिंह जी	१९७६
राकेश गुप्त जी	१९८२
दिनेश प्रताप जी	१९९१
डॉ. अनुराग पुरवार जी	१९८८
सुनील द्विवेदी जी	१९८७
डॉ. अर्जित गौरव श्रीवास्तव जी	१९९५
डॉ. सोहित गुप्त जी	१९९६
डॉ. राम प्रताप बुंदेला जी	२००१
देवर्षि मिश्र जी	२००५
शोभित खरे जी	२००५
विवेक चतुर्वेदी जी	२००६
आलोक यादव जी	२००७

युग-भारती प्रबंधकारिणी समिति

आचार्य ओमशंकर जी
संस्थापक एवं संरक्षक

आचार्य दीपक जी
उप संरक्षक

संरक्षक मंडल

विनय अजमानी

ओमप्रकाश मोटवानी

डॉ प्रवीण सारस्वत

अजयशंकर दीक्षित

राजेश खरे

वीरेंद्र कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष

डॉ मोहन कृष्ण मिश्र
महामंत्री

अभय गुप्त
कोषाध्यक्ष

उपाध्यक्ष

डॉ आशु शुक्ल

विवेक भागवत

प्रवीण अग्रवाल

पुनीत श्रीवास्तव

विवेक गुप्त

मनीष कृष्णा
सगंठन सचिव

डॉ पवन मिश्र
बौद्धिक सचिव

डॉ शैलेन्द्र पांडेय
योजना सचिव

रोहित दुबे
व्यवस्था सचिव

अखिल तिवारी
आई टी सचिव

डॉ शुभेन्द्र सिंह परिहार
मंत्री

डॉ मनोज अवस्थी
सह- कोषाध्यक्ष

निर्भय सिंह नौलखा
सह- संगठन सचिव

सदस्य

अरविन्द तिवारी

महेंद्र जैन

डॉ अरुण कुमार मिश्र

नितिन कपूर

दृश्यमुनि चकमा

निशित कुमार

विशेष आमंत्रित सदस्य

नवीन भार्गव CA
महा लेखापरीक्षक

युग–प्रभा सोपान

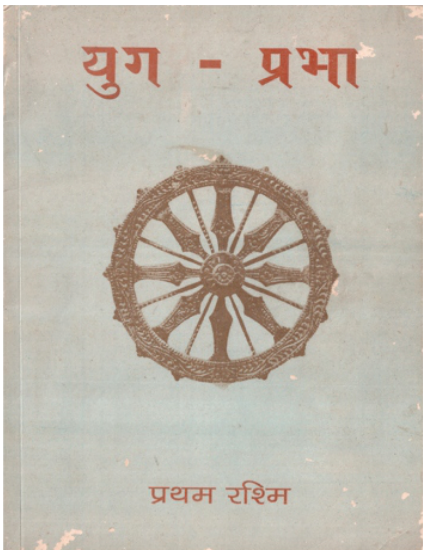
युग - प्रभा
प्रथम रश्मि

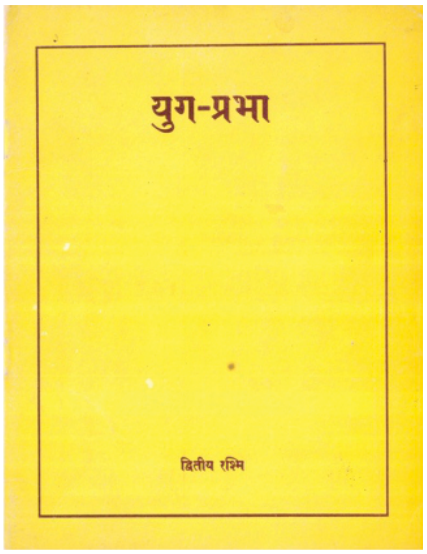
युग-प्रभा
द्वितीय रश्मि

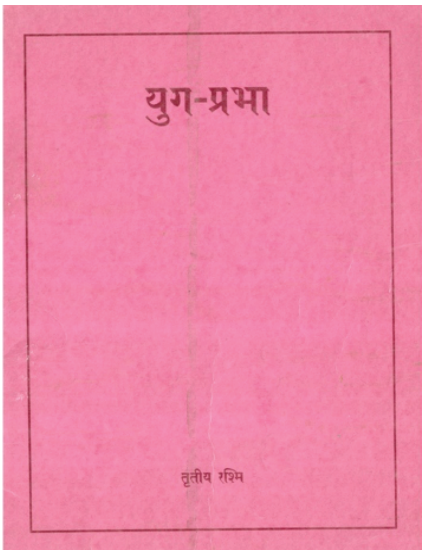
युग-प्रभा
तृतीय रश्मि

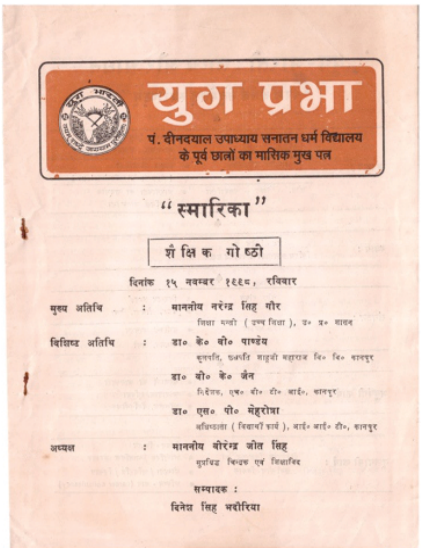
युग प्रभा
पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
के पूर्व छात्रों का मासिक मुख पत्र
"स्मारिका"
शै क्षि क गो ष्ठी
दिनांक १५ नवम्बर १९९५, रविवार
मुख्य अतिथि : माननीय नरेन्द्र सिंह गौर
विशिष्ट अतिथि : डा० के० पी० पाण्डेय
डा० पी० के० जैन
डा० एस० पी० मेहरोत्रा
अध्यक्ष : माननीय वीरेन्द्र जीत सिंह
सम्पादक :
विनेश सिंह भदौरिया

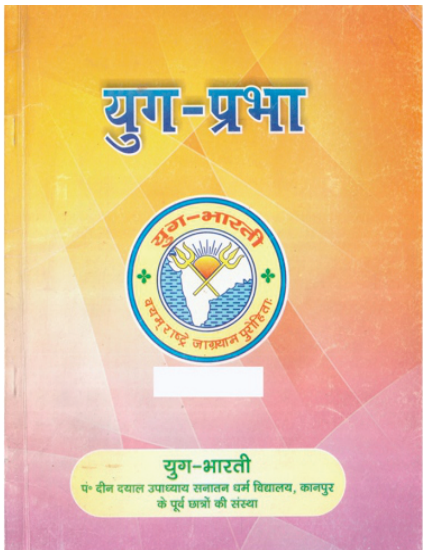
युग-प्रभा
युग-भारती
युग-भारती
पं० दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर
के पूर्व छात्रों की संस्था

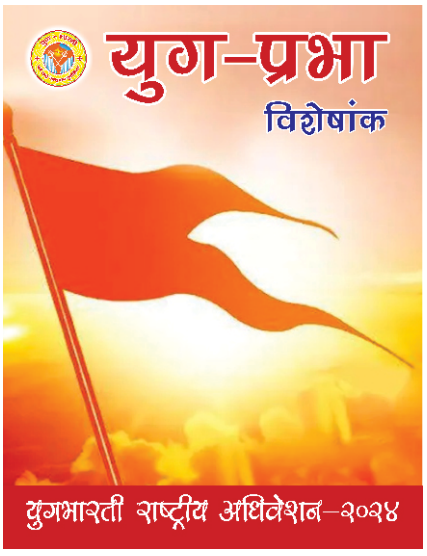
युग-प्रभा
विशेषांक
युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन–२०२४

JIOLITE®
Dil ko Rahe Khush
Healthy Choice for Every Kitchen
A Quality Product of
Vaibhav Edibles Pvt Ltd
स्वाद भी,
शुद्धता भी
हर घर की पहली पसंद
• शुद्ध और परिष्कृत तेल
• भारतीय पकवानों के लिए परफेक्ट
• भरोसेमंद गुणवत्ता
Follow Us
Jiolite Oils
jioliteofficial
24/40 जैन विहार बिरहाना रोड कानपुर 208001
विजय लहारिया बैच 1977

इमा
EMA ®
LUBRICANTS
SINCE 1982
COMPLETE RANGE OF ENGINE OILS AND SOLUTIONS
► DIESEL ENGINE OIL
► PASSENGER CAR ENGINE OIL
► 2 WHEELER 2 AND 4 STROKE ENGIINE OIL
► GEAR & TRANSMISSION FLUID
► HYDRAULIC AND SOLUBLE CUTTING OIL
► GREASES
Shiva Trader Authorised Distributor
Add: 86 Shastri Marg Civil Line Jhansi
M: 9794935999, 8299421168

Welcome Back To School

WISDOM INTERNATIONAL SCHOOL
MAURANIPUR

Your Child's journey to a Great Future Begins Here

WISDOM
INTERNATIONAL SCHOOL
Play Group to 8th

संस्थापक -
इंजी. हनुमान प्रसाद चतुर्वेदी
डायरेक्टर -
विवेक चतुर्वेदी

MAURANIPUR

wismauranipur.com
7011160057
7055608050, 8127896502

Activate Windows
Go to Settings to activate Windows.

सम्बद्ध-बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.)

कॉलेज कोड- 812

श्री हनुमत कृपा महाविद्यालय रोरा - मऊरानीपुर

हनुमत कृपा महाविद्यालय

पता- रोरा - भटपुरा से बम्हौरी सम्पर्क मार्ग,मऊरानीपुर (झाँसी)

B.A. कला संकाय
हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, गृह विज्ञान

B.Com वाणिज्य संकाय

B.Sc विज्ञान संकाय (बायो, गणित)
भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित

प्रबंधक -
श्रीमती कमलेश चतुर्वेदी

संस्थापक -
इंजी. हनुमान प्रसाद चतुर्वेदी

1. UGC द्वारा निर्धारित अर्हता प्राप्त शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य।
2. सभी वर्गों को छात्रवृत्ति की सुविधा।
3. स्वच्छ एवं अनुशासित वातावरण।
4. अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालायें।
5. शारीरिक विकास हेतु विशाल क्रीडास्थल।
6. सौरउर्जा द्वारा विद्युत की 24 घन्टे उत्तम व्यवस्था।
7. लाइब्रेरी एवं रीडिंग रूम की उत्तम व्यवस्था।

डायरेक्टर -
विवेक चतुर्वेदी

100% Scholar Available

प्रवेश प्रारम्भ

hkmv.mau@gmail.com

7992035851, ,7011160057, 7084884190

DESH KA NEER
Oxineer
PACKAGED DRINKING WATER
1ℓ
Pure, Fresh
Safe Drinking Water
BRING OXINEER TO YOUR LIFE
Mineral Enhanced Water
R.O, U.V Treated & Ozonated.
11 Process Stages with Regular Quality Tests as per BIS.
Alkaline Water
WE SUPPLY FOR ALL
HOSPITALS
CORPORATE OFFICES
SUPER MARKETS
EVENTS
www.oxineer.com
Care@oxineer.com
1800-899-1643
Green Boulevard 5th Floor, Tower C, Block B, Sector 62, Noida, Uttar Pradesh 201309
DIRECTORS
SAINTLEY SONNE
DEEPAK KUMAR
VIVEK CHATURVEDI

PS Academy
Trusted since 1998
Promise for Success

Shaping Aspirants into Officers Since 1998

प्रदीप श्रीवास्तव
बैच - १९८३

About Us

आज हमारे विद्यार्थी गर्व के साथ राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं, कुछ सबसे प्रतिष्ठित पदों पर, जिनमें शामिल हैं:

- प्रमुख सचिव (Principal Secretary)
- पुलिस महानिरीक्षक (IG)
- कलेक्टर (Collectors)
- उप कलेक्टर (Deputy Collectors)
- पुलिस अधीक्षक (SPs)
- तथा अनेक अन्य प्रतिष्ठित प्रशासनिक एवं पुलिस सेवाओं में

Why Choose Us?

- Proven Track Record, Year after Year
- Regular Tests, Discussions & Mentorship
- Result-Oriented Teaching Methodology
- Experienced & Expert Faculty Team

+91- 9926576466
+91 - 9826063466
G-10 Veda Business Park, Bhanwarkuan, Indore (M.P)
www.psacademy.co.in

मुख्य प्रकोष्ठ

युग भारती लखनऊ
युग भारती बुंदेलखंड
युग भारती इंद्रप्रस्थ
युग भारती उत्तराखंड
युग भारती मध्य प्रदेश
युग भारती राजस्थान
युग भारती महाराष्ट्र
युग भारती भाग्यनगर (हैदराबाद)
युग भारती गुजरात
युग भारती बंगलुरु
युग भारती उत्तर पूर्व
युग भारती यू एस ए- कनाडा
युग भारती सिंगापुर
युग भारती दुबई
युग भारती ऑस्ट्रेलिया
युग भारती यूरोप

हमसे जुड़ें -

योगदान हेतु -

QR SCAN

UPI CODE
yug-bharti@hdfcbank

,DI
Yug Bharti (@YUGBHARTI)/Twitter

QIcd
www.facebook.com/yugbhartisanstha

ocIkbV
www.yugbharti.in